

के आवश्यक उपकरण



- 2 आसन, 4 घा
- 2 गरम काबली,
- 1 ग्लास पूछने का
- 1 गरम मोटा कबल

एव फालना, जालोष्ट, नाकोडा, बालोत



तद्वय पुष्प

णमोऽस्तु णं समणस्स भगवओ णायपुत्त-महावीरस्स

चरिमत्तिथयरणायपुत्तमहावीरस्स पंचमगणहर-

सुहम्मायरियविरइय

सुत्तागमे

तत्थ णं

सूयगडे

३

संवायग

णायपुत्त-महावीरजइणमघाणुआई-लहुयम-पुष्प भिक्खु

प्रकाशिका

श्रीसूत्रागमप्रकाशकसमिति, जैनस्थानक, रेतवेरोड,

गुडगौन-छावणी (पूर्वपजाव)

वीरमंत्र २४७७ } विक्रमाब्द २००७ { काष्ठ मन् १९५१

बाबू रामलाल जैन, मंत्री.

निर्णयसागर प्रेस, मुंबई नं. २

सूयणा

सूयगडमेयमम्हमायरियाणमकुव्व सूयणंषुरुहबोहणअण्णाणमोहसिमिरभरहरणध-
म्मुज्जोयकरणेकतत्त्रिच्छाणऽसंतावकरणमग्निव्व उगगतवतेयदित्ताणऽसव्वभक्खीण
ससहस्सव्व विवुहजणमणचओराणममदाणददायगभव्वहियकेरववियासगाणं नियसि-
यजसजुण्हाधवलियदियतराणमण्णउत्थियचक्कविहडणपयडमहप्पाणं पावकलंक्कवक्त-
णविमुक्काण मयरहस्सव्व गंभीरिमामेराणाणचरणाइनिम्मल्लुणरअणाऊरियाणं, किंतु
पयइत्तारत्तपरिचत्ताण मरालुव्व परगुणखीरगहंणदोसंबुविक्कज्जणवियक्कखणाणं अहिं
धीरिमापडिहत्थाणमजटमडेण ख व अणप्पकुवियप्पसंक्कप्पसुण्णाणं अमरत्तमणुप-
त्ताणं सिरि १०८ अजपरमपुज्जवदणिज्जाण ४ फकीरचंदमहापुरिसाणं धार-
णाववहाराणुसार विज्जड, जइ दिट्ठिमुद्दणदोसत्तो वा कत्थ वि कावि असुद्धी हुज्ज
सोहिज्जउ पेसिज्जउ अस्सोवरिससम्मई इमस्स मज्जायं क्कु बुहा गिराणाइं
सुह पाउणतु ति वेइ । गुरुचलणसयवत्तरसाऊ, पुप्फभिक्षु

णायसाहिच्चविसारयस्स मुणिपुक्खरस्स सम्मई

सुट्ठरूवेण दिट्ठ मए पुत्थय, भिक्खुणा पुप्फत्तामेण सवाइयं, भवजलहितरणि
गयैकुमइलयसूरणे, वज्जडडुव्वैपरवाडधरचूरणे, कूवअण्णाणपडियाणहत्थावकलं, चैणं
पाववणडहणडहणुव्व ज १ कम्मरिउहिं चिमडत्ताण मण्णाहमिव, सुत्तापासायचडणत्थ-
मोवौणमिव, मोक्खमग्गे पयट्ठाणपाहेज्जमिव, णाणतिसियाण ण सुहस्सरपेज्जमिव २
भिंठुं इव चवल्मणकरिणिरोहे अल, ण जयव्वाहिलुग्गाण मुहुरोसई, वाइमयमेह-
पडिसेहेणे वौंऊ ण, दाही साहेज्जमित्त व अब्भासिणं ३ दुहज्जलणउल्हवणमेहुं सत्थोहु
ण, दीहससारक्तारानित्थारणे, गिम्भदिनमणिण तत्तहं विडविसीर्येअयऽज्जतसुहि-
यहं सुभोर्ज ४ व हरेही अवाय ॥ ४ ॥ हिययवुसुयवोसट्ठिही मइसिधूपसेवड्ठिही, पुण्णि-
मससिपुत्थयमिण, जो निच्चलमणुपड्ठिही ॥ ५ ॥ णायसाहिच्चतित्थाइपयवीधरें, पेसिया
सम्मई इय मुणीपुक्खरें, सादडीनामधेज्जाओ णयरा दमा, भैवगयैणवोभैनेत्तैम्मि
सवच्छरे ॥ माहत्तियपम्भवीयाए दियहे बुहे सक्कया पाइए मइ समणुवाइया ॥ ७ ॥

सूचना

यह प्रकाशन मेरे धर्म्मार्चार्य, माधुकुलशिरोमणि, श्री १०८ श्री श्री श्री फकीर-
चंद्रजी महाराज (सर्गाय) के वारणा व्यवहारके अनुसार है । यदि कोई दृष्टिदोष
रह गया है तो सुधारकर पढ़ें । ३० आगम इसी प्रकार एक पुस्तकाकारमें प्रकाशित
हो रहे हैं । मुनिगण अपनी सम्मति 'समिति' को भेज दें । पुप्फ भिक्षु

श्रीसूत्रागम प्रकाशक समितिके द्वितीय-संरक्षक,



श्रीमान मोहनलाल वनराज कर्णावट, भवानी पेठ प्र.ना नं. २.

णमो त्थ णं समणस्स भगवओ णायपुत्त महावीरस्स

सूर्यगडं

पढमे सुयक्खं

सा. क्र.

समयज्झयणे पढमे

जयपुर

बुज्झिज्ज त्ति तिउट्ठिज्जा वन्धणं परिजाणिया । किमाह वन्धणं वीसे किं न जाणं
 तिउट्ठइ ॥ १ ॥ १ ॥ चित्तमन्तमचित्तं वा परिगिज्झ किं सामवि । अन्नं वा अणुजा-
 णाइ एव दुक्खा न मुच्चई ॥ २ ॥ २ ॥ सयं तिवायए पाणे अदुवड्ढेहिं घायए ।
 हणन्तं वाऽणुजाणाइ वेरं वट्ठेइ अप्पणो ॥ ३ ॥ ३ ॥ जस्सिं कुले समुप्पन्ने जेहिं वा
 सवसे नरे । ममाइ लुप्पईं बाले अन्ने अन्नेहिं मुच्छिण ॥ ४ ॥ ४ ॥ वित्तं सोयरिया
 चेव सव्वमेयं न ताणइ । सखाएँ जीवियं चेव कम्मुणा उ तिउट्ठइ ॥ ५ ॥ ५ ॥ एए
 गन्थे विउक्कम्म एगे समणमाहणा । अयाणन्ता विउस्सित्ता सत्ता कामेहिं माणवा
 ॥ ६ ॥ ६ ॥ सन्ति पच्च महब्भूया इहमेगेसिमाहिया । पुढवी आउ तेऊ वा वाउ
 आगासपच्चमा ॥ ७ ॥ ७ ॥ एए पच्च महब्भूया तेव्भो एगो त्ति आहिया । अहं
 तेसिं विणासेणं विणासो होइ देहिणो ॥ ८ ॥ ८ ॥ जहा यं पुढवीधूमे एगे नाणाहिं
 दीसइ । एव भो कसिणे लोए विन्नू नाणाहिं दीसइ ॥ ९ ॥ ९ ॥ एवमेगे त्ति जम्पन्ति
 मन्दा आरम्भनिस्सिया । एगे किच्चा सयं पाव तिउव्व दुक्खं नियच्छइ ॥ १० ॥ १० ॥
 पत्तेयं कसिणे आया जे बाला जे यं पण्डिया । सन्ति पिच्चा न ते सन्ति नत्थि
 सत्तोववाइया ॥ ११ ॥ ११ ॥ नत्थि पुण्णे व पावे वा नत्थि लोए इओवरे । सरी-
 रस्स विणासेणं विणासो होइ देहिणो ॥ १२ ॥ १२ ॥ कुव्वं च कारयं चेव सव्वं
 कुव्वं न विज्जई । एव अकारओ अप्पा एव ते उ पगब्भिया ॥ १३ ॥ १३ ॥ जे ते
 उ वाइणो एव लोए तेसिं कओ सिया । तमाओ ते तमं जन्ति मन्दा आरम्भनि-
 स्सिया ॥ १४ ॥ १४ ॥ सन्ति पच्च महब्भूया इहमेगेसिमाहिया । आयच्छट्ठा पुणो
 आहु आया लोए यं सासए ॥ १५ ॥ १५ ॥ दुहुओ न विणस्सन्ति नो यं उप्पज्जए
 असं । सव्वे वि सव्वहा भावा नियत्तीभावमागया ॥ १६ ॥ १६ ॥ पच्च खन्धे
 वयन्तेगे बाला उ खणजोइणो । अन्नो अण्णो नेवाहु हेउयं च अहेउयं ॥ १७ ॥ १७ ॥
 पुढवी आउ तेऊ यं तहा वाऊ यं एगओ । चत्तारिं धाउणो ख्वं एवमाहसु आवरे
 ॥ १८ ॥ १८ ॥ अगारमावसन्ता वि अरण्या वा वि पव्वया । इमं दरिमणमावजा
 सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥ १९ ॥ १९ ॥ ते नावि सधिं नच्चा णं न ते धम्मविउ जणा ।

जे ते उ वाङ्गो एव न ते ओहतराऽऽहिया ॥ २० ॥ २० ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण
 न ते धम्मविक्क जणा । जे ते उ वाङ्गो एव न ते ससारपारगा ॥ २१ ॥ २१ ॥
 ते नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविक्क जणा । जे ते उ वाङ्गो एव न ते गव्वस्स
 पारगा ॥ २२ ॥ २२ ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविक्क जणा । जे ते उ
 वाङ्गो एव न ते जम्मस्स पारगा ॥ २३ ॥ २३ ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण न ते
 धम्मविक्क जणा । जे ते उ वाङ्गो एव न ते दुक्खस्स पारगा ॥ २४ ॥ २४ ॥ ते
 नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविक्क जणा । जे ते उ वाङ्गो एवं न ते मारस्स
 पारगा ॥ २५ ॥ २५ ॥ नाणाविहाइ दुक्खाइ अणुहोन्ति पुणो पुणो । समारक्क-
 वालम्मि मच्चुवार्हिजराकुले ॥ २६ ॥ २६ ॥ उच्चावयाणि गच्छन्ता गव्वमेस्सन्ति
 णन्तसो । नायपुत्ते महावीरे एवमाह जिणुत्तमे ॥ २७ ॥ २७ ॥ त्ति वेमि ॥
 समयज्झयणे पढमुद्देसो ॥

आघाय पुण एगेसिं उववन्ना पुढो जिया । वेदयन्ति सुह दुक्ख अदु वा लुप्पन्ति
 ठाणओ ॥ १ ॥ २८ ॥ न त सय कड दुक्ख कओ अन्नकड च ण । सुह वा जइ
 वा दुक्ख सेहिय वा असेहिय ॥ २ ॥ २९ ॥ सय कड न अन्नेहिं वेदयन्ति पुढो
 जिया । सगइय त तहा तेसिं इहमेगेसिमाहिय ॥ ३ ॥ ३० ॥ एवमेयाणि जम्पन्ता
 वाला पण्डियमाणिणो । निययानियय सन्त अयाणन्ता अबुद्धिया ॥ ४ ॥ ३१ ॥
 एवमेगे उ पामत्था ते भुज्जो विप्पगव्विभया । एवं उवट्ठिया सन्ता न ते दुक्ख-
 विमोक्खगा ॥ ५ ॥ ३२ ॥ जविणो मिगा जहा सन्ता परियाणेण वज्जिया ।
 असङ्कियाड सङ्कन्ति सङ्कियाई असङ्किणो ॥ ६ ॥ ३३ ॥ परियाणियाणि सङ्कन्ता
 पासियाणि असङ्किणो । अन्नाणभयसविग्गा सपलन्ति तहिं तहिं ॥ ७ ॥ ३४ ॥
 अह त पवेज्ज वज्ज अहे वज्जस्स वा वए । मुच्चेज्ज पयपासाओ त तु मन्डे न
 देहई ॥ ८ ॥ ३५ ॥ अहियप्पाहियपन्नाणे विसमन्तेणुवागए । स बद्धे पयपासेण
 तत्थ घाय नियच्छड ॥ ९ ॥ ३६ ॥ एव तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी अणारिया ।
 असङ्कियाइ सङ्कन्ति सङ्कियाई असङ्किणो ॥ १० ॥ ३७ ॥ धम्मपन्नवणा जा सा
 त तु सङ्कन्ति मूढगा । आरम्भाइ न सङ्कन्ति अवियत्ता अकोविया ॥ ११ ॥ ३८ ॥
 सव्वप्पग विउक्खस्स मव्व नूअं विट्ठणिया । अप्पत्तिय अरुम्मसे एयमट्ठ मिगे चुए
 ॥ १२ ॥ ३९ ॥ जे एय नाभिजाणन्ति मिच्छदिट्ठी अणारिया । मिगा वा पास-
 वद्धा ते घायमेस्सन्ति णन्तसो ॥ १३ ॥ ४० ॥ माहणा समणा एगे सव्वे नाण
 नय वए । सव्वलोगे वि जे पाणा न ते जाणन्ति किंचण ॥ १४ ॥ ४१ ॥ मिलक्ख
 अमिलक्खस्स जहा वुत्ताणुमासए । न हेउ से वियाणाइ भासिय तऽणुमासए ॥ १५ ॥

॥ ४२ ॥ एवमन्नाणिया नाण वयन्ता वि सयं सय । निच्छयत्थ ण जाणन्ति
मिलक्खु व्व अवोहिया ॥ १६ ॥ ४३ ॥ अन्नाणियाण वीमसा अन्नाणे न नियच्छइ ।
अप्पणो य पर नाल कुतो अन्नाणुसासिउ ॥ १७ ॥ ४४ ॥ वणे मूढे जहा जन्तू
मूढे नेयाणुगामिए । दो वि एए अकोविया तिव्वं सोय नियच्छई ॥ १८ ॥ ४५ ॥
अन्धो अन्ध पह नेन्तो दूरमद्दाणुगच्छइ । आवजे उप्पह जन्तू अदु वा पन्थाणु-
गामिए ॥ १९ ॥ ४६ ॥ एवमेगे नियागट्ठी धम्ममाराहगा वय । अदु वा अहम्म-
मावजे न ते सव्वज्जुय वए ॥ २० ॥ ४७ ॥ एवमेगे वियक्काहिं नो अन्न पज्जु-
वासिया । अप्पणो य वियक्काहि अयमज्जु हि दुम्मई ॥ २१ ॥ ४८ ॥ एव तक्काइ
साहेन्ता धम्माधम्मे अकोविया । दुक्खं ते नाइतुट्ठेन्ति सउणी पज्जर जहा ॥ २२ ॥
॥ ४९ ॥ सय सय पससन्ता गरहन्ता पर वय । जे उ तत्थ विउस्सन्ति ससार ते
विउस्सिया ॥ २३ ॥ ५० ॥ अहावर पुरक्खाय किरियावाइदरिसणं । कम्मचिन्ता-
पणट्ठाण ससारस्स पवट्ठण ॥ २४ ॥ ५१ ॥ जाण काएणऽणाउट्ठी अबुहो ज च
हिंसइ । पुट्ठो सवेयइ पर अवियत्त खु सावज्ज ॥ २५ ॥ ५२ ॥ सन्तिमे तउ
आयाणा जेहि कीरइ पावग । अभिकम्मा य पेसा य मणसा अणुजाणिया
॥ २६ ॥ ५३ ॥ एए उ तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावग । एव भावविसोहीए
निव्वाणमभिगच्छई ॥ २७ ॥ ५४ ॥ पुत्त पिया समारब्भ आहारेज असजए ।
भुज्जमाणो य मेहावी कम्मुणा नोवलिप्पई ॥ २८ ॥ ५५ ॥ मणसा जे
पउस्सन्ति चित्तं तेसिं न विज्जइ । अणवज्जमतह तेसिं न ते सवुडचारिणो ॥ २९ ॥
॥ ५६ ॥ इच्चेयाहि य दिट्ठीहिं सायागारवनिस्सिया । सरणं ति मज्जमाणा सेवन्ती
पावग जणा ॥ ३० ॥ ५७ ॥ जहा अस्साविणिं नाव जाइअन्धो दुरुहिया । इच्छई
पारमागन्तु अन्तरा य विसीयई ॥ ३१ ॥ ५८ ॥ एवं तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी
अणारिया । ससारपारक्खी ते ससार अणुपरियट्ठन्ति ॥ ३२ ॥ ५९ ॥ त्ति वेमि ॥
समयज्झयणे चिइयुदेसो ॥

ज किंचि उ पूडकड सट्ठीमागन्तुमीहिय । सहस्सन्तरिय भुजे दुपक्ख चेव
सेवई ॥ १ ॥ ६० ॥ तमेव अवियाणन्ता विसमसि अकोविया । मच्छा वेसालिया
चेव उदगस्सभियागमे ॥ २ ॥ ६१ ॥ उदगस्स पहावेणं सुक्क सिग्घं तमेन्ति उ ।
ढक्केहि य कक्केहि य आमिसत्थेहि ते दुही ॥ ३ ॥ ६२ ॥ एव तु समणा एगे
वट्ठमाणसुहेसिणो । मच्छा वेसालिया चेव घायमेस्सन्ति णन्तसो ॥ ४ ॥ ६३ ॥
इणमज्ज तु अन्नाण इहमेगेसिमाहिय । देवउत्ते अय लोए बम्भउत्ते इ आवरे ॥ ५ ॥
॥ ६४ ॥ ईसरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे । जीवाजीवसमाउत्ते सुहदुक्खसम-

लिए ॥ ६ ॥ ६५ ॥ मयभुजा कटे लोए इड बुतं महेजिणा । मारेण सुनुया माया
 तेण लोए अमाए ॥ ७ ॥ ६६ ॥ माहणा समगा एगे आह अउडस्टे जए ।
 अगो तत्तमरासी य अयाणन्ता सुस वए ॥ ८ ॥ ६७ ॥ मणहि पारियाएहिं लोमं
 बूया कटे ति य । तत्त ते न त्रियाणानि न त्रियासी कयाड ति ॥ ९ ॥ ६८ ॥
 अमणुत्तमुप्पाय दुस्समेव त्रियागिया । सुमुप्पायमयाणन्ता कट नायन्ति सबर
 ॥ १० ॥ ६९ ॥ सुद्धे अपावए आया इहमेगेनिमाहिय । पुणो मिट्ठापदेउण सो
 तत्त अवरज्जुं ॥ ११ ॥ ७० ॥ इह सुनुडे मुणी जाण पन्था होड अपावए ।
 नियउम्बु जहा मुजो नीग्य मय तहा ॥ १२ ॥ ७१ ॥ एयाणुयड मेहारी बम्भ-
 चेरेण ते वसे । पुढो पात्राडया मव्वे अरुत्तायागे मय मय ॥ १३ ॥ ७२ ॥ मए
 मए वण्ठाण निदिमेव न अतहा । अहे इहेव वण्ठाणी मव्वकाममममिए ॥ १४ ॥
 ॥ ७३ ॥ उिद्धा य ते अगेगे य इहमेगेनिमाहिय । उिदिमेव पुरो णाट तामए
 गडिया नग ॥ १५ ॥ ७४ ॥ असुउा अणाउंय भमिदिन्ति पुणो पुणो । कप्प-
 णाल्लुवज्जन्ति ठाणा आमुरकिच्चिनिय ॥ १६ ॥ ७५ ॥ ति वेमि ॥ समय-
 ज्जयणे तइयुद्धसो ॥

एए जिया भो न गरण वाला पण्डियमाणिणो । हिचा ण पुव्वसज्जेय त्रिया
 त्रियोवणमगा ॥ १ ॥ ७६ ॥ त च भिक्षू पांगाय त्रिय तेसु न मुच्छए । अपु-
 णस्से अप्पनीणे मज्जेण मुणि जावए ॥ २ ॥ ७७ ॥ मपरिगहा य सारम्भा
 इहमेगेनिमाहिय । अपरिगहा अगारम्भा भिक्षू ताण परिव्वए ॥ ३ ॥ ७८ ॥
 कटेषु घावमेसेजा त्रिक्क ट्ठेत्तमण चरे । अगिद्धो पिप्पमुक्को य ओमाण परिव्वजए
 ॥ ४ ॥ ७९ ॥ लोगाय निमामेजा इहमेगेनिमाहिय । त्रिपरीयपत्तसभूय अजउत्त
 तयाणुय ॥ ५ ॥ ८० ॥ अणन्ते निइए लोए मामए न विास्मइं । अन्तए निइए
 लोए इड वीरोऽतिपामइं ॥ ६ ॥ ८१ ॥ अपरिमाण त्रियाणाइ इहमेगेनिमाहिय ।
 सव्वत्थ सुपरिमाणं इड धीरोऽतिपामइं ॥ ७ ॥ ८२ ॥ जे केड तता पाणा चिट्ठन्ति
 अदु यावरा । परिव्वए अत्थि से अउ जेण ते तमयावरा ॥ ८ ॥ ८३ ॥ उराल
 जगओ जोग विवज्जाम पलेन्ति य । मव्वे अणन्तदुस्सा य अओ मव्वे अहिंत्तिना
 ॥ ९ ॥ ८४ ॥ एय सु नाणिणो मार ज न हिंसट किंचण । अहिंमाममय चेव
 एयावन्त त्रियाणिया ॥ १० ॥ ८५ ॥ बुत्तिए य त्रियगेही आवाग सुम्म रक्काए ।
 चरियामणसेज्जासु भत्तपाणे य अन्तसो ॥ ११ ॥ ८६ ॥ एएहिं निहि ठाणेहिं सजए
 सयय मुणी । उक्कत्त जलण नू मज्जन्त्य च त्रिगिद्धए ॥ १२ ॥ ८७ ॥ नत्तिए उ
 मया साह पयसवरसुनुडे । तिएहि अत्तिए भिर्नू आमोक्काए परिव्वएजाति
 ॥ १३ ॥ ८८ ॥ ति वेमि ॥ समयज्जयणं पढमं ॥

वेयालियज्झयणे विइए

सवुज्झह कि न वुज्झह सवोही खलु पेच्च दुल्लहा । नो ह्वणमन्ति राइयो नो सुलभ पुणरावि जीविय ॥ १ ॥ ८९ ॥ डहरा वुद्धा य पासह गब्भत्था वि चयन्ति माणवा । सेणे जह वट्ठय हरे एव आउखयम्मि तुट्ठई ॥ २ ॥ ९० ॥ मायाहि पियाहिं लुप्पई नो सुलहा सुगई य पेच्चओ । एयाइ भयाइ पेहिया आरम्भा विरमेज्ज सुव्वए ॥ ३ ॥ ९१ ॥ जमिण जगई पुढो जगा कम्मोहिं लुप्पन्ति पाणिणो । सयमेव कडेहि गाहई नो तस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठय ॥ ४ ॥ ९२ ॥ देवा गन्धव्वरक्खसा असुरा भूमिचरा सरीसिवा । राया नरसेट्ठिमाहणा ठाणा ते वि चयन्ति दुक्खिया ॥ ५ ॥ ९३ ॥ कामोहिं य सथवेहिं गिद्धा कम्मसहा कालेण जन्तवो । ताले जह वन्धणञ्चुए एव आउखयम्मि तुट्ठई ॥ ६ ॥ ९४ ॥ जे यावि बहुस्सुए सिया धम्मिय माहण भिक्खुए सिया । अभिनूमकडेहि मुच्छिए तिव्व ते कम्मोहिं किच्चई ॥ ७ ॥ ९५ ॥ अह पास विवेगमुट्ठिए अवितिण्णे इह भासई धुव । नाहिसि आर कओ पर चेहासे कम्मोहिं किच्चई ॥ ८ ॥ ९६ ॥ जइ वि य नगिणे किसे चरे जइ वि य भुजिय मासमन्तसो । जे इह मायाहिं मिज्जई आगन्ता गब्भाय णन्तसो ॥ ९ ॥ ९७ ॥ पुरिसोरम पावकम्मुणा पलियन्त मणुयाण जीविय । सन्ना इह काममुच्छिया मोह जन्ति नरा असवुडा ॥ १० ॥ ९८ ॥ जयय विहराहिं जोगव अणुपाणा पन्था दुरुत्तरा । अणुसासणमेव पक्कमे वीरेहिं सम्म पवेइय ॥ ११ ॥ ९९ ॥ विरया वीरा समुट्ठिया कोहकायरियाइपीसणा । पाणे न हणन्ति सव्वसो पावाओ विरया-ऽभिनिव्वुडा ॥ १२ ॥ १०० ॥ न वि ता अहमेव लुप्पए लुप्पन्ती लोगसि पाणिणो । एव सहिएहिं पासए अणिहे से पुट्ठेऽहियासए ॥ १३ ॥ १०१ ॥ धुणिया कुलिय व लेवव किसए देहमणासणाइहिं । अविहिंसामेव पव्वए अणुधम्मो मुणिणा पवेइयो ॥ १४ ॥ १०२ ॥ सउणी जह पसुगुण्डिया विहुणिय धसयई सिय रय । एवं दविओवहाणव कम्म खवइ तवस्सि माहणे ॥ १५ ॥ १०३ ॥ उट्ठियमणगारमेसण समण ठाणठिय तवस्सिण । डहरा वुद्धा य पत्थए अवि सुस्से न य त लमेज्ज नो ॥ १६ ॥ १०४ ॥ जइ कालुणियाणि कासिया जइ रोयन्ति य पुत्तकारणा । दविय भिक्खु समुट्ठियं नो लब्भन्ति न सठवित्तए ॥ १७ ॥ १०५ ॥ जइ वि य कामोहिं लाविया जइ नेजाहिं ण वन्धिउ घर । जइ जीविय नावक्खुए नो लब्भन्ति न सठवित्तए ॥ १८ ॥ १०६ ॥ सेहन्ति य ण ममाइणो माय पिया य सुया य भारिया । पोसाहिं ण पासओ तुम लोग पर पि जहासि पोसणो ॥ १९ ॥ १०७ ॥ अन्ने अन्नेहिं मुच्छिया मोह जन्ति नरा असवुडा । विसम विसमेहिं गाहिया ते

असमाही उ तहागयस्स वि ॥ १८ ॥ १२८ ॥ अहिगरणकडस्स भिक्खुणो
 वयमाणस्स पसज्ज दासुणं । अट्ठे परिहायई बहू अहिगरण न करेज्ज पण्डिए
 ॥ १९ ॥ १२९ ॥ सीओदग पडि दुगुच्छिणो अपडिन्नस्स लवावसम्पिणो । सामाइ-
 यमाहु तस्स ज जो गिहिमतोऽसण न भुज्जई ॥ २० ॥ १३० ॥ न य सखयमाहु
 जीविय तह वि य बालजणो पगन्मई । बाले पावेहि मिज्जई इइ सखाय मुणी न
 मज्जई ॥ २१ ॥ १३१ ॥ छदेण पले इमा पया बहुमाया मोहेण पावुडा । वियडेण
 पलेन्ति माहणे सीउण्ह वयसा हियासए ॥ २२ ॥ १३२ ॥ कुजए अपराजिए जहा
 अक्खेहिं कुसलेहिं दीवय । कडमेव गहाय नो कलिं नो तीय नो चेव दावर
 ॥ २३ ॥ १३३ ॥ एव लोगम्मि ताइणा वुइए जे धम्मे अणुत्तरे । त गिण्ह हिय
 ति उत्तम कडमिव सेसऽवहाय पण्डिए ॥ २४ ॥ १३४ ॥ उत्तर मणुयाण आहिया
 गामधम्म इइ मे अणुस्सुयं । जसी विरया समुट्ठिया कासवस्स अणुधम्मचारिणो
 ॥ २५ ॥ १३५ ॥ जे एय चरन्ति आहिय नाएण महया महेसिणा । ते उट्ठिय ते
 समुट्ठिया अन्नोन्न सारेन्ति धम्मओ ॥ २६ ॥ १३६ ॥ मा पेह पुरा पणामए
 अभिक्खे उवहि धुणितए । जे दूमण तेहि नो नया ते जाणन्ति समाहिमाहिय
 ॥ २७ ॥ १३७ ॥ नो काहिँ होज्ज सजए पासणिए न य सपसारए । नच्चा धम्म
 अणुत्तर कयकिरिए न यावि मामए ॥ २८ ॥ १३८ ॥ छन्न च पसस नो करे न
 य उक्कोस पगास माहणे । तेसिं सुविवेगमाहिए पणया जेहि सुजोसिय धुय ॥ २९ ॥
 ॥ १३९ ॥ अनिहे संहिए सुसवुडे धम्मट्ठी उवहाणवीरिए । विहरेज्ज समाहिइदिए
 अत्तहिय खु दुहेण लब्भइ ॥ ३० ॥ १४० ॥ न हि नूण पुरा अणुस्सुय अदु वा
 त तह नो समुट्ठिय । मुणिणा सामाइ आहिय नाएण जगसव्वदसिणा ॥ ३१ ॥ १४१ ॥
 एव मत्ता महन्तर वम्ममिण सहिया बहू जणा । गुरुणो छदाणुवत्तगा विरया तिण्ण
 महोघमाहिय ॥ ३२ ॥ १४२ ॥ ति वेमि ॥ वेयालियज्झयणम्मि विइयुदेसो ॥

सवुडकम्मस्स भिक्खुणो ज दुक्ख पुट्ठ अवोहिए । त सजमओऽवचिज्जई मरण
 हेच्च वयन्ति पण्डिया ॥ ११ ॥ १४३ ॥ जे विन्नवणाहिजोसिया सतिण्णेहि सम वियाहिया ।
 तम्हा उट्ठ ति पासहा अदक्खु कामाई रोगव ॥ २ ॥ १४४ ॥ अग्ग वणिएहि
 आहिय धारेन्ती राइणिया इह । एव परमा महव्वया अक्खाया उ सराइभोयणा
 ॥ ३ ॥ १४५ ॥ जे इह सायाणुगा नरा अज्झोववन्ना कामेहि मुच्छिया । किवणेण
 सम पगच्चिभया न वि जाणन्ति समाहिमाहिय ॥ ४ ॥ १४६ ॥ वाहेण जहा व
 विच्छए अवले होइ गव पचोइए । से अन्तसो अप्पथामए नाइवहे अवले विसीयइ
 ॥ ५ ॥ १४७ ॥ एव कामेसण विरु अज्ज सुए पयहेज्ज सयव । कामी कामे न

कामए लदे वा वि अलज्ज कग्गुडे ॥ ६ ॥ १४८ ॥ ना पण्ड अगाहुया भवे अंबेही
अणुपात अप्पम । अहिय न अगाहु मोरुं मे यगं परिदेवउं वहु ॥ ७ ॥ १४९ ॥
इह जीवियमेव पामहा तरुणे वा मसयम्म तुरुं । उतरयासे न बुज्जह गिदे नरा
तापेण सुच्छिउया ॥ ८ ॥ १५० ॥ जे इह आरम्भात्तिन्या आयदण्ड एगन्नउत्तमा ।
गन्ता ते पापयोगय चिराय आसुरिय त्सिं ॥ ९ ॥ १५१ ॥ न य संत्तमाहु
जीवियं तह पि य चान्जणो पाप्मं ॥ पणुप्पणेण सारिय को रहु परत्तोभाणए
॥ १० ॥ १५२ ॥ अदक्खुव दक्खुवारियं त नरहमु अदक्खुदग्गा । हंदि हु
मुनिस्सद्धमणे मोहिएण कटेण कम्मुणा ॥ ११ ॥ १५३ ॥ दुक्खी मोहे पुणे पुणे
निविन्नेज्ज तिलेगमूयं । ए महिण हिपाणए आनतुल पाणेहि वनए ॥ १२ ॥
॥ १५४ ॥ गार पि न आयने नरे अणुपुव्व पाणेहि सजए । मया मव्वत्थ सुव्वए
वेत्ताण गन्ते नयोगय ॥ १३ ॥ १५५ ॥ मोवा भगवानुत्ताण मये तव्य रेत्तु-
वाम । मव्वत्थ पिणीयमन्तरे उज्ज भिक्खु विमुदमादरे ॥ १४ ॥ १५६ ॥ नव्वं
नया अठ्ठिए धम्मही उाहाणवीरिए । गुत्ते जुत्ते मया जए आयरं परमायतट्टिए
॥ १५ ॥ १५७ ॥ मिण पमवो य नादओ त चाले सरण नि मन् । एए मम तेसु
वी अह तो ताण णणं न विज्जं ॥ १६ ॥ १५८ ॥ अब्भाममियम्मि वा दुरे
अहवा उरुमिए भवन्ति । एणस्स गं य आगं विदुमन्ता मरण न मन्
॥ १७ ॥ १५९ ॥ मव्वे मयम्ममपिया अनियत्तेण दुरेण पाणिगे । हिप्पन्ति
भयाउला सडा जाइजरामरणेहिउभिहुया ॥ १८ ॥ १६० ॥ इणमेव ता वियापिया
नो सुलभ योहिं न आहियं । ए महिण हिपाणए आह जिणे इणमेव सैत्तगा
॥ १९ ॥ १६१ ॥ अभविं सु पुरा पि भिक्खुओ आएसा पि भवन्ति सुव्वया ।
एयाइं गुणाइं आहु ते कावस्स अणुधम्मचारिणो ॥ २० ॥ १६२ ॥ निविहेण पि
पाण मा हणे आयहिए अगियाण सजुडे । एव सिद्धा अणन्तनो सपउ जे य
अणागयावरे ॥ २१ ॥ १६३ ॥ एव से उदाहु अणुत्तरणाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तर-
माणट्ठणधरे । अरहा नायपुत्ते भगव वेमालिए विगाहिए ॥ २२ ॥ १६४ ॥ ति
वेमि ॥ वेयालियज्झयणं विडयं ॥

उवसग्गज्झयणे तइए

सूरं मव्वइ अप्पाण जाव जेय न पत्तइ । जुज्जन्त दउधम्माण सिमुपालो व
महारह ॥ १ ॥ १६५ ॥ पयाया सूर रणसीसे सगामम्म उवट्टिए । माया पुत्त

न जाणाइ जेएण परिविच्छए ॥ २ ॥ १६६ ॥ एव सेहे वि अप्पुट्टे भिक्खायरिया-
 अकोविए । सूर मज्झइ अप्पाण जाव ल्ह न सेवए ॥ ३ ॥ १६७ ॥ जया हेमन्त-
 मासम्मि सीय फुसइ सव्वग । तत्थ मन्दा विसीयन्ति रज्जहीणा व खत्तिया ॥ ४ ॥
 ॥ १६८ ॥ पुट्टे गिम्हाहितावेणं विमणे सुपिवासिए । तत्थ मन्दा विसीयन्ति मच्छा
 अप्पोदए जहा ॥ ५ ॥ १६९ ॥ सया दत्तेसणा दुक्खा जायणा दुप्पणोल्लिया ।
 कम्मत्ता दुब्भगा चेव इच्चाहसु पुढोजणा ॥ ६ ॥ १७० ॥ एए सदे अचायन्ता गामेसु
 नगरेसु वा । तत्थ मन्दा विसीयन्ति सगामम्मि व भीरुया ॥ ७ ॥ १७१ ॥ अप्पेगे
 खुहिय भिक्खुं सुणी डसइ ल्हसए । तत्थ मन्दा विसीयन्ति तेउपुट्टा व पाणिणो
 ॥ ८ ॥ १७२ ॥ अप्पेगे पडिभासन्ति पडिपन्थियमागया । पडियारगया एए जे
 एए एवजीविणो ॥ ९ ॥ १७३ ॥ अप्पेगे वइ जुञ्जन्ति नगिणा पिण्डोलगाहमा ।
 मुण्डा कण्डूविणट्टङ्गा उज्जङ्गा असमाहिया ॥ १० ॥ १७४ ॥ एवं विप्पडिवज्जेगे
 अप्पणा उ अजाणया । तमाओ ते तम जन्ति मन्दा मोहेण पावुडा ॥ ११ ॥ १७५ ॥
 पुट्टो य दसमसगेहिं तणफासमचाइया । न मे दिट्ठे परे लोए जइ पर मरणं सिया
 ॥ १२ ॥ १७६ ॥ सतत्ता केसलोएण बम्भचेरपराइया । तत्थ मन्दा विसीयन्ति
 मच्छा विट्ठा व केयणे ॥ १३ ॥ १७७ ॥ आयदण्डसमायारे मिच्छासठियभावणा ।
 हरिसप्पओसमावजा केई ल्हसन्तिऽनारिया ॥ १४ ॥ १७८ ॥ अप्पेगे पलियन्तेसिं
 चारो चोरो त्ति सुव्वय । बन्धन्ति भिक्खुय वाला कसायवयणेहि य ॥ १५ ॥ १७९ ॥
 तत्थ दण्डेण सवीते मुट्ठिणा अदु फलेण वा । नार्इणं सरई वाले इत्थी वा कुट्ठगा-
 मिणी ॥ १६ ॥ १८० ॥ एए भो कसिणा फासा फरुसा दुरहियासया । हत्थी वा
 सरसवित्ता कीवावस गया गिह ॥ १७ ॥ १८१ ॥ ति वेमि ॥ उवसग्गज्झयणे
 पढमुदेसे ॥

अहिमे सुहुमा सगा भिक्खूण जे दुरुत्तरा । जत्थ एगे विसीयन्ति न चयन्ति
 जवित्तए ॥ १ ॥ १८२ ॥ अप्पेगे नायओ दिस्स रोयन्ति परिवारिया । पोस णे
 ताय पुट्टो सि कस्स ताय जहासि णे ॥ २ ॥ १८३ ॥ पिया ते थेरओ ताय ससा
 ते खुट्ठिया इमा । मायरो ते सगा ताय सोयरा कि जहासि णे ॥ ३ ॥ १८४ ॥
 मायर पियर पोस एव लोगो भविस्सइ । एवं खु लोइय ताय जे पालेन्ति य मायर
 ॥ ४ ॥ १८५ ॥ उत्तरा महुस्सवा पुत्ता ते ताय खुट्ठया । भारिया ते नवा ताय
 मा सा अन्न जण गमे ॥ ५ ॥ १८६ ॥ एहि ताय घर जामो मा य कम्मे सह
 वयं । बिइय पि ताय पासामो जामु ताव सय गिह ॥ ६ ॥ १८७ ॥ गन्तुं ताय पुणो
 गच्छे न तेणा समणो सिया । अकामग परिकम्म को ते वारिउमारिहइ ॥ ७ ॥ १८८ ॥

ज किंचि अणग तात्र त पि मव्व ममीक्य । ठिरण ववहागइ त पि दाहानु ते वं
 ॥८॥१८९॥ इथेव ण मुसेहन्ति काटणीयामुट्ठिआ । मिन्दो नाट्ठगेहिं नओड्ठगं
 पढावड ॥ ९ ॥ १९० ॥ जहा व्वग वणे जाय माट्ठया पटिन्धड । एवं ण पडि-
 वन्धन्ति नाट्ठो अनाहिआ ॥ १० ॥ १९१ ॥ मिन्दो नाट्ठगेहिं हत्थी वा वि
 नजगहे । पिट्ठओ पारेअप्पन्ति सुय गो व्व अट्ठए ॥ ११ ॥ १९२ ॥ एण मगा
 मूराग पायान्हा व अनाहिआ । वीवा जत्त च किस्सन्ति नाट्ठगेहिं मुच्छिया
 ॥ १२ ॥ १९३ ॥ त च भिक्खु परिणाय मज्जे सगा महानगा । जीविय नाचर-
 गिआ गोया धम्ममुत्तर ॥ १३ ॥ १९४ ॥ अहिने गन्ति आवट्ठा समवे-
 पेइया । बुद्धा जत्तावमप्पन्ति सीयन्ति अनुहा जहिं ॥ १४ ॥ १९५ ॥ रायागो
 रायडग्गा य माहणा अट्ठु व रात्तिआ । निमन्तयन्ति भोगेहिं भिक्खुं ताहुजीवि
 ॥ १५ ॥ १९६ ॥ हत्थस्सरहजणेहिं गिहारगमणेहिं य । भुज भोगे इमे सन्धे
 महारिखी पूजयामु त ॥ १६ ॥ १९७ ॥ वत्थगन्धमल्लहार इत्थीओ मयगाणि य ।
 भुज्जाहिमाई भोगाड्ठा अठमो पूजयामु त ॥ १७ ॥ १९८ ॥ जो तुमे नियमो चिण्णे
 भिक्खु नागम्मि मुच्चया । अगाग्गावन्तस्स गग्गो मज्जिए तहा ॥ १८॥१९९॥
 चिर वूड्ढमाणस्स दोरो दागिं दुओ तव । इथेव ण निमन्तेन्ति नीवागेण व सूवर
 ॥ १९ ॥ २०० ॥ चोइया भिक्खुचरियाए अनयन्ता जत्तिए । तत्तय मन्दा
 विसीयन्ति उज्जाणति व दुच्चला ॥ २० ॥ २०१ ॥ अचयन्ता व द्दहेण उवहाणेण
 तज्जिया । तत्तय मन्दा विसीयन्ति उज्जाणति जरग्गवा ॥ २१ ॥ २०२ ॥ एव
 निमन्ता लद्धु मुच्छिया गिद्ध इत्थिसु । अज्जोववता कामेहिं चोइज्जन्ता गया गिह
 ॥ २२ ॥ २०३ ॥ ति वेमि ॥ उवसग्गज्जयणे विइयुहेसे ॥

जहा सगामकालम्मि पिट्ठओ भीरु चेहड । वल्लय गहणं नूम को जाणइ पराजय
 ॥ १ ॥ २०४ ॥ मुहुत्ताण मुहुत्तस्स मुहुत्तो होइ तारिमो । पराजियाड्ठवप्पामो
 इइ भीरु उवेहई ॥ २ ॥ २०५ ॥ एव उ समणा एगे अवल नचाण अप्पग ।
 अणागय भय दिस्स अवक्कप्पन्तिम सुय ॥ ३ ॥ २०६ ॥ को जाणइ विरुवाय
 इत्थीओ उदगाउ वा । चोइज्जन्ता पक्खामो न नो अत्थि पक्खिय ॥ ४ ॥ २०७ ॥
 इथेव पडिलेहन्ति वल्लया पडिलेहिणो । पितिगिच्छममावना पन्थाण च अकोविया
 ॥ ५ ॥ २०८ ॥ जे उ सगामकालम्मि नाया सूरपुरगमा । नो ते पिट्ठमुवेहिन्ति
 किं पर मरण सिया ॥ ६ ॥ २०९ ॥ एव ममुट्ठिए भिक्खु वोत्तिजा गारवन्धण ।
 आरम्म तिरिय कट्ठ अत्तताए परिव्वए ॥ ७ ॥ २१० ॥ तमेने परिभासन्ति
 भिक्खुयं साहुजीविणं । जे एव परिभासन्ति अन्तए ते समाहिए ॥ ८ ॥ २११ ॥

सबद्धसमकप्पा उ अन्नमन्नेसु मुच्छिया । पिण्डवाय गिलाणस्स ज सारेह दलाह य
 ॥ ९ ॥ २१२ ॥ एव तुब्भे सरागत्या अन्नमन्नमणुव्वसा । नट्टसप्पहसव्भावा
 ससारस्स अपारगा ॥ १० ॥ २१३ ॥ अह ते परिभासेज्जा भिक्खु मोक्ख-
 विसारए । एवं तुब्भे पभासन्ता दुपक्ख चेव सेवह ॥ ११ ॥ २१४ ॥ तुब्भे
 भुज्जह पाएसु गिलाणो अभिहडम्मि य । त च वीओदग भोच्चा तमुद्दिस्सादि ज
 कड ॥ १२ ॥ २१५ ॥ लिता तिव्वाभितावेण उज्झिया असमाहिया । नाइकण्डइय
 सेय अरुयस्सावरज्जई ॥ १३ ॥ २१६ ॥ तत्तेण अणुसिट्ठा ते अपडिन्नेण
 जाणया । न एस नियए मग्गे असमिक्खा वई किई ॥ १४ ॥ २१७ ॥ एरिसा
 जा वई एसा अगवेणु व्व करिसिया । गिहिणो अभिहडं सेय भुज्जिउ न उ भिक्खुणं
 ॥ १५ ॥ २१८ ॥ धम्मपन्नवणा जा सा सारम्भा न विसोहिया । न उ एयाहि
 दिट्ठीहिं पुव्वमासिं पगप्पिय ॥ १६ ॥ २१९ ॥ सव्वाहिं अणुजुत्तीहि अचयन्ता
 जवित्तए । तवो वाय निराकिच्चा ते भुज्जो वि पगव्विमया ॥ १७ ॥ २२० ॥ राग-
 दोसाभिभूयप्पा मिच्छत्तेण अभिहुया । आउस्से सरण जन्ति टक्का इव पव्वय
 ॥ १८ ॥ २२१ ॥ बहुगुणप्पगप्पाइ कुज्जा अत्तसमाहिए । जेणने न विरुज्जेज्जा
 तेण त त समायरे ॥ १९ ॥ २२२ ॥ इम च धम्ममायाय कासवेण पवेइय । कुज्जा
 भिक्खु गिलाणस्स अगिलाए समाहिए ॥ २० ॥ २२३ ॥ सखाय पेसल धम्म
 दिट्ठिम परिनिव्वुडे । उवसग्गे नियामित्ता आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ २१ ॥ २२४ ॥
 ति वेमि ॥ उवसग्गज्झयणे तइयुद्देसे ॥

आहसु महापुरिसा पुव्वि तत्तवोधणा । उदएण सिद्धिमावन्ना तत्थ मन्दो
 विसीयइ ॥ १ ॥ २२५ ॥ अभुज्जिया नमी विदेही रामगुत्ते य भुज्जिया । बाहुए उदग
 भोच्चा तहा नारायणे रिसी ॥ २ ॥ २२६ ॥ आसिले देविले चेव दीवायण महारिसी ।
 पारासरे दग भोच्चा वीयाणि हरियाणि य ॥ ३ ॥ २२७ ॥ एए पुव्व महापुरिसा
 आहिया इह समया । भोच्चा वीयोदग सिद्धा इइ मेयमणुस्सुय ॥ ४ ॥ २२८ ॥ तत्थ
 मन्दा विसीयन्ति वाहच्छिज्जा व गह्भा । पिट्ठओ परिसप्पन्ति पिट्ठसप्पी य सभमे
 ॥ ५ ॥ २२९ ॥ इहमेगे उ भासन्ति साय साएण विज्जई । जे तत्थ आरिय मगं
 परम च समाहिय ॥ ६ ॥ २३० ॥ मा एयं अवमन्नन्ता अप्पेण लुम्पहा बहु ।
 एयस्स उ अमोक्खाए अयोहारि व्व जूरह ॥ ७ ॥ २३१ ॥ पाणाइवाए वट्ठन्ता
 सुसावाए असजया । अदिन्नादाणे वट्ठन्ता मेहुणे य परिगहे ॥ ८ ॥ २३२ ॥
 एवमेगे उ पासत्या पन्नवन्ति अणारिया । इत्थीवस गया वाला जिणसासणपरमुहा
 ॥ ९ ॥ २३३ ॥ जहा गण्ड पिलाग वा परिपीलेज्ज मुहुत्तगं । एव विन्नवणित्थीसु

दोसो तत्थ कओ उिया ॥ १० ॥ २३४ ॥ जहा मन्धादणे नान धिमिय भुञ्जं
 दग । एव विम्वगित्थीमु दोमो तत्थ कओ उिया ॥ ११ ॥ २३५ ॥ जहा तिदंगमा
 पिता धिमिय भुञ्जं दग । एव विम्वगित्थीमु दोमो तत्थ कओ उिया ॥ १२ ॥ २३६ ॥
 एवमेवे उ पासत्था निच्छरिट्ठी अणारिया । अज्जोययणा कामेहि पूयणा इव तस्सए
 ॥ १३ ॥ २३७ ॥ अणागयमपस्सन्ता पगुप्पन्तावेमगा । ते पच्छा पमिन्पत्ति
 सीणे आउम्मि जोव्यणे ॥ १४ ॥ २३८ ॥ जेहि काले परिणन्त न पच्छा पमिन्
 प्पए । ते धीरा बभणुम्मुपा नावस्सन्ति जीविय ॥ १५ ॥ २३९ ॥ जहा नां
 वेयरणी दुत्तरा उद्द समया । ए तोगति नारीओ दुत्तरा अमईमया ॥ १६ ॥ २४० ॥
 जेहि नारीण सजोगा पूयणा पिट्ठओ कया । मव्वमेय निराशिया ते ठिना दुग्ग
 हिए ॥ १७ ॥ २४१ ॥ एए ओष तारेस्सन्ति ममुद्द ववहात्तो । उत्थ पाणा वित्त-
 नात्ति कियन्ती मयस्सुणा ॥ १८ ॥ २४२ ॥ त न भिक्खू परिणाय सुव्वए
 समिए चरे । सुसावाय च वज्जिजा अदिनादा च वोउिरे ॥ १९ ॥ २४३ ॥
 उद्धमहे तिरिय वा जे केउं तसपावरा । सव्वत्थ विरइ पुञ्जा नन्ति निन्वाणनाडिब
 ॥ २० ॥ २४४ ॥ इम च धम्मनायाय कामवेण पवेइय । पुञ्जा भिक्खू गिलाणस्त
 अगिलाए समाहिए ॥ २१ ॥ २४५ ॥ सत्ताय पेमल धम्म दिट्ठिम परिनेज्जुडे ।
 उवमग्गे नियामित्ता आमोक्खराए परिव्वएज्जानि ॥ २२ ॥ २४६ ॥ नि वेत्ति ॥
 उवसग्गज्जयणं तइयं ॥

इत्थिपरिब्रज्जयणे चउत्थे

जे मायर च पियर च विप्पजहाय पुव्वसजोगं । एओ सहिए चरिस्सामि आर
 यमेहुणो विवित्तेसु ॥ १ ॥ २४७ ॥ सुहुनेण त परिक्कम्म छप्पएण इन्धियो मन्दा
 उव्वाय पि ताउ जाणसु जहा लिस्सन्ति भिक्खुओ एओ ॥ २ ॥ २४८ ॥ पासे भित्ति
 निसीयन्ति अभिक्खण पोमवत्थ परिहन्ति । काय अहे पि दमन्ति बाह उद्ध
 कक्खमणुव्वए ॥ ३ ॥ २४९ ॥ मयणासणेहि जोगेहि इन्धियो एया निमन्तेन्ति
 एयाणि चेव से जाणे पासाणि विरूवरूवाणि ॥ ४ ॥ २५० ॥ नो ताउ चक्खु सधेज्ज
 नो वि य साहस समभिजाणे । नो सहिय पि विहरेज्जा एवमप्पा कुरक्खिओ हो
 ॥ ५ ॥ २५१ ॥ आननिय उस्साविया भिक्खु आयमा निमन्तेन्ति । एयाणि चे
 से जाणे सदाणि विरूवरूवाणि ॥ ६ ॥ २५२ ॥ मणवन्धणेहि जोगेहि कट्ठाविणीब
 मुवगसित्तागं । अदु मज्जुलाई भासन्ति आणवयन्ति भिक्खुआहि ॥ ७ ॥ २५३ ॥

सीह जहा व कुणिमेग निब्भयमेगचर ति पासेग । एवित्थियाउ वन्धन्ति सवुड
 एगइयमणगार ॥ ८ ॥ २५४ ॥ अह तत्थ पुणो नमयन्ती रहकारो व नेमि आणुपु-
 न्नीए । वद्धो मिए व पासेग फन्दन्ते वि न मुच्चए ताहे ॥ ९ ॥ २५५ ॥ अह
 सेऽणुतप्पई पच्छा भोच्चा पायस व विसमिस्स । एव विवेगमायाय सवासो न वि
 कप्पए दविए ॥ १० ॥ २५६ ॥ तम्हा उ वज्जए इत्थी विसलित्त व कण्टग नच्चा ।
 ओए कुलाणि वसवती आघाए न से वि निग्गन्थे ॥ ११ ॥ २५७ ॥ जे एय उच्छ
 अणुगिद्धा अन्नयरा होन्ति कुसीलाण । सुतवस्सिए वि से भिक्खु नो विहरे सह णमि-
 त्थीसु ॥ १२ ॥ २५८ ॥ अवि धूयराहि सुण्हाहि धाईहि अदुव दासीहि । महईहि वा
 कुमारीहि सयव से न कुज्जा अणगारे ॥ १३ ॥ २५९ ॥ अदु नाइण च सुहीण वा
 अप्पिय दड्ढु एगया होइ । गिद्धा सत्ता कामेहि रक्खणपोसणे मणुस्सोऽसि ॥ १४ ॥
 ॥ २६० ॥ समण पि दड्ढुदासीण तत्थ वि ताव एगे कुप्पन्ति । अदु वा भोयणेहि
 नत्थेहि इत्थीदोस सकिणो होन्ति ॥ १५ ॥ २६१ ॥ कुव्वन्ति सयव ताहि पब्भट्ठा
 समाहिजोहेहि । तम्हा समणा न समेन्ति आयहियाए सनिसेज्जाओ ॥ १६ ॥ २६२ ॥
 बहवे गिहाई अवहट्ठु मिस्सीभाव पत्थुया य एगे । धुवमग्गमेव पवयन्ति वायावीरिय
 कुसीलाण ॥ १७ ॥ २६३ ॥ छुद्ध रवइ परिसाए अह रहस्सम्मि दुक्कड करेन्ति ।
 जाणन्ति य ण तहाविज्ज माइल्ले महासडेऽय ति ॥ १८ ॥ २६४ ॥ सय दुक्कड च
 न वयइ आइट्ठो वि पक्कथइ वाले । वेयाणुवीइ मा कासी चोइज्जन्तो गिलाइ से
 भुज्जो ॥ १९ ॥ २६५ ॥ ओसिया वि इत्थिपोसेसु पुरिसा इत्थिवेयखेयन्ना । पन्नास-
 मन्निया वेगे नारीण वस उवकसन्ति ॥ २० ॥ २६६ ॥ अवि हत्थपायछेयाए अदु वा
 वद्धमसउक्कन्ते । अवि तेयसाभितावणाणि तच्छिय खारसिचणाई य ॥ २१ ॥ २६७ ॥
 अदु कण्णनासछेय कण्ठछेयण तिइक्खन्ती । इइ एत्थ पावसतत्ता न वेन्ति पुणो
 न काहिन्ति ॥ २२ ॥ २६८ ॥ सुयमेयमेवमेगेसि इत्थीवेय ति हु सुयक्खाय । एय
 पि ता वइत्ताण अदु वा कम्मुणा अवकुरेन्ति ॥ २३ ॥ २६९ ॥ अन्न मणेण
 चिन्तेन्ति वाया अन्न च कम्मुणा अन्न । तम्हा न सहहे भिक्खु बहुमायाओ इत्थिओ
 नच्चा ॥ २४ ॥ २७० ॥ जुवई समण बूया विचित्तकारवत्थगाणि परिहिता ।
 विरया चरिस्सह स्खं धम्ममाइक्ख णे भयन्तारो ॥ २५ ॥ २७१ ॥ अदु सावि-
 यापवाएण अहमसि साहम्मिणी य समणाण । जउकुम्मे जहा उवज्जोई सवासे विज्ज
 विसीएज्जा ॥ २६ ॥ २७२ ॥ जउकुम्मे जोइउवगूढे आसुभित्ते नासमुवयाइ ।
 एवित्थियाहि अणगारा सवासेण नासमुवयन्ति ॥ २७ ॥ २७३ ॥ कुव्वन्ति पावग
 कम्म पुट्ठा वेगेवमाहिंसु । नो ह करेमि पाव ति अकेसाइणी ममेस ति ॥ २८ ॥ २७४ ॥

यालम्मा मन्त्य दीप जं च कट अवनाट भुजो । दुग्गा करेऽ से पात्र पूयानामे
निगमेयी ॥ २९ ॥ २७७ ॥ मृगेरुजिज्जमाणारं आयमय निमन्तणेगात्तु । वत्थ
च ताट पाय वा अत्र पाण पटिग्गाहे ॥ ३० ॥ २७८ ॥ नांतामेव बुज्जेजा नो
उन्हे अगारमागन्तु । वंदे निमपपेहि मोहमावण्ट पुणो मन्ते ॥ ३१ ॥ २७९ ॥
ति वेमि ॥ इत्थिपरिचज्जयणे पढमुहेसे ॥

ओए गया न रज्जेजा भोगराना पुणो निज्जेजा । भोगे ममणा न्नेह जह
भुत्ति मिक्खुणो एगे ॥ १ ॥ २७८ ॥ अह त तु मेय्मावण मुत्तिज्जं मिक्खु
साममद्वट् । पत्तिभिन्दिया ण तो पच्छा पादुदट् मुद्धि पट्ठण्ति ॥ २ ॥ २७९ ॥
जट केनिया ण मए भिक्खु नो तिरे मह पमित्थीए । केनाणां हि हृत्तिस्स नत्तय
मए चरेजाति ॥ ३ ॥ २८० ॥ अह ण से होट उवल्लो तो पेत्तान्ति तद्भाण्ति ॥
अलाउत्तेय पेहेहि वग्गुक्काड आहराहि ति ॥ ४ ॥ २८१ ॥ दास्सि मागपागाए
पज्जोओ वा भविस्सि राओ । पायाति य मे रयावेहि एहि ता मे पिट्ठोओहे ॥ ५ ॥
॥ २८२ ॥ वत्थाति य मे पटिरेहेहि अत्र प्राण च आहराहि ति । गन्ध च
रओहरण च दावण च मे ममणुजाति ॥ ६ ॥ २८३ ॥ अदु अरणि अट्ठकार
कुत्तय मे पयच्छाहि । लोद्धं च लोद्धकुत्तय च वेणुपत्तायि च गुत्ति च ॥ ७ ॥
॥ २८४ ॥ कुट्ट तार च अगह मपिट्ठ मम्म उतिरेण । तेह मुहभिजाए वेणुक्काड
सुनिहाण ॥ ८ ॥ २८५ ॥ नन्दीचुग्गगाइ पाहराहि छत्तोराणह च जाति ॥
मय च मूक्खेजाए आणील च वत्तय रयावेहि ॥ ९ ॥ २८६ ॥ वृत्ति च
मागपागाए आमलगाड दगाहरण च । निलास्स रज्जिज्जसलाग धिमु मे विहणय
विजाति ॥ १० ॥ २८७ ॥ सट्ठामग च फहि च सीहत्तिपामग च आजाति ॥
आडसग च पयच्छाहि दन्तपक्खालग पवेमाहि ॥ ११ ॥ २८८ ॥ पूगफल तरोत्थ सड
नुत्तग च जाति ॥ कोस च मोयमेहाए सुप्पुम्बल्लग च सारगाला च ॥ १२ ॥
॥ २८९ ॥ चन्दालग च करग च वयघरे च आउमो वणाहि । मरपायय च
जायाए गोरहग च मामणेराए ॥ १३ ॥ २९० ॥ घटिग च मडिण्डिमय च चेल-
गोल कुमारभाए । वास समभिआवण आवसट् च जाग भत्त च ॥ १४ ॥ २९१ ॥
आमन्टिय च नवसुत्त पाटगड सकम्पट्टाए । अदु पुत्तदोहलट्टाए आगप्पा हवन्ति
दामा वा ॥ १५ ॥ २९२ ॥ जाए फटे समुप्पने गेण्हसु वा ण अहवा जहाहि ।
अह पुत्तपोत्तिगो एगे भारवहा हवन्ति उट्ठा वा ॥ १६ ॥ २९३ ॥ राओ ति
उट्ठिमा मन्ता दारग च सट्ठवन्ति वाडे वा । सुहिरामणा वि ते मन्ता वत्तयोवा
हवन्ति हसा वा ॥ १७ ॥ २९४ ॥ एव बहुहि क्यपुव्व भोगत्थाए जेडभियावता ।

दासे मिए व पेसे व पसुभूए वा से न वा केई ॥ १८ ॥ २९५ ॥ एव खु तासु
 विज्जप्प सयव सवास च वजेज्जा । तज्जातिया इमे कामा वज्जकरा य एवमक्खाए
 ॥ १९ ॥ २९६ ॥ एय भयं न सेयाए इड से अप्पग निरुम्भित्ता । नो इत्थि नो
 पसु भिम्बु नो सय पाणिणा निलिज्जेज्जा ॥ २० ॥ २९७ ॥ सुविसुद्धसे मेहावी
 परकिरिय च वज्जए नाणी । मणसा वयसा काएण सव्वपाससहे अणगारे ॥ २१ ॥
 ॥ २९८ ॥ इच्चेवमाहु से वीरे धुरए धुरमोहे से भिक्खु । तम्हा अज्झत्तविमुद्धे
 सुविमुक्के आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ २२ ॥ २९९ ॥ त्ति वेमि ॥ इत्थिपरि-
 ज्जयणं चउत्थं ॥

निरयविभत्तियज्झयणे पञ्चमे

पुच्छिस्सह केवलिय महेसिं कह भितावा नरगा पुरत्था । अजाणओ मे मुणि
 बूहि जाणं कहिं नु बाला नरग उवेन्ति ॥ १ ॥ ३०० ॥ एवं मए पुट्ठे महाणुमावे
 इणमोऽव्ववी कासवे आसुपत्ते । पवेयइस्स दुहमद्वुग्ग आईणिय दुक्कडिण पुरत्था
 ॥ २ ॥ ३०१ ॥ जे केइ बाला इह जीवियट्ठी पावाई कम्माईं करेन्ति रदा । ते
 घोररूवे तमिसन्धयारे तिब्बाभितावे नरगे पडन्ति ॥ ३ ॥ ३०२ ॥ तिब्ब तसे
 पाणिणो थावरे य जे हिंसई आयसुह पडुच्चा । जे लसए होइ अदत्तहारी न सिक्खई
 सेयवियस्स किचि ॥ ४ ॥ ३०३ ॥ पागब्भि पाणे बहुण तिवाई अनिव्वुए घायमु-
 वेड बाले । निहो निस गच्छइ अन्तकाले अहोसिर कट्ठु उवेइ दुग्ग ॥ ५ ॥ ३०४ ॥
 हण छिन्दह भिन्दह ण दहेति सहे सुणेन्ता परधम्मियाण । ते नारगाओ भयभिज्ज-
 सत्ता कयन्ति क नाम दिस वयामो ॥ ६ ॥ ३०५ ॥ इज्जालरासिं जलिय सजोइ
 तत्तोवम भूमिमणुकमन्ता । ते डज्जमाणा कलुण यणन्ति अरहस्सरा तत्थ चिरट्ठि-
 ईया ॥ ७ ॥ ३०६ ॥ जइ ते सुया वेयरणी भिदुग्गा निसिओ जहा खुर इव
 तिक्खसोया । तरन्ति ते वेयरणिं भिदुग्गा उमुचोइया सत्तिषु हम्ममाणा ॥ ८ ॥
 ॥ ३०७ ॥ कीलेहि विज्जन्ति असाहुकम्मा नाव उवेन्ते सइविप्पट्ठणा । अन्ने उ
 स्लाहि तिसुलियाहिं वीहाहि विदूण अहे करेन्ति ॥ ९ ॥ ३०८ ॥ केसिं च
 बन्धिन्तु गले सिलाओ उदगसि वोलेन्ति महालयसि । कलवुयावालयमुम्मुरे य
 लोलन्ति पचन्ति य तत्थ अन्ने ॥ १० ॥ ३०९ ॥ आसूरिय नाम महाभित्तारं
 अन्धतम दुप्पतर महन्त । उट्ठ अहे य तिरिय दिसासु समाहिओ जत्थगणी झियाइ
 ॥ ११ ॥ ३१० ॥ जसी गुहाए जलणेऽतिउट्ठे अविजाणओ डज्जइ लुत्तपनो । सया
 य कलुण पुण घम्मठाण गाढोवणीय अइदुक्खधम्म ॥ १२ ॥ ३११ ॥ चत्तारि

अगणीओ गमारभेता जई कूरकम्मा भिनयेन्ति बाल । ते तस्य चिट्ठन्तभित्त्प-
 माणा मच्छा य जीयन्तो य जोउपत्ता ॥ १३ ॥ ३१२ ॥ सतच्छग नाम महाभिताव
 ते नारणा जन्थ अगाहुकम्मा । हत्थेहि पाएहि य बन्धिरुग फलग व तन्ठन्ति
 कुदाडहत्था ॥ १४ ॥ ३१३ ॥ रुहिरे पुणो वयगमुस्सियगे भिनुत्तमो परिवतयन्ता ।
 पयन्ति ण नेग्दण फुरन्ते नजीवमन्टे य अयोस्सये ॥ १५ ॥ ३१४ ॥ नो चेव ते
 तस्य मसीभवन्ति न भिज्जई तिव्वभिवेयगाए । तमागुभाग अणुवेय्यन्ता दुम्भन्ति
 दुम्भी इह दुम्भे ॥ १६ ॥ ३१५ ॥ तर्हि च ते लोलगसपगाढे गाड सुत्त
 अगणि वयन्ति । न तस्य साय लहई भिदुग्गे अरहियाभितावा तह बी तवेन्ति
 ॥ १७ ॥ ३१६ ॥ से सुयई नगरवहे व गेह दुहोउणीयाणि पयाणि तस्य ।
 उदिण्णकम्माग उदिण्णकम्मा पुगो पुगो ते मरह दुहेन्ति ॥ १८ ॥ ३१७ ॥ पाणेहि
 ण पाव नियोजयन्ति त भे पवक्खामि जहातहेण । दण्ढेहि तस्या सरयन्ति बाला
 सव्वेहि दण्ढेहि पुगकएहि ॥ १९ ॥ ३१८ ॥ ते हम्ममाणा नरो पडन्ति पुणो
 दुम्भस्स महाभितावे । ते तस्य चिट्ठन्ति दुम्भमस्सी कुट्ठन्ति कम्मोवगा किनीहि
 ॥ २० ॥ ३१९ ॥ सया कसिग पुण धम्मठाग गागेवणीय अद्दुत्तपधम्म । अन्दुत्त
 पक्किप्प विहत्तु देह वेहेग सीस सेऽभितावयन्ति ॥ २१ ॥ ३२० ॥ छिन्दन्ति
 बालस्म पुरेण नञ् ओट्टे वि छिन्दन्ति दुवे वि कग्गे । जिब्भं पिणिस्स विहत्थि-
 मेत्त तिरुत्ताहि मूलाहि भितावयन्ति ॥ २२ ॥ ३२१ ॥ ते तिप्पमाणा तल्लसुड व
 राडदिय तस्य थगन्ति बाला । गलन्ति ते नोगिययूयमस पज्जोडया सारपडदियगा
 ॥ २३ ॥ ३२२ ॥ जड ते सुया लोहिययूयपाड बालागणी तेअगुगा परेण । कुम्भी
 महन्ताहियरोस्सीया समूगिया लोहिययूयपुण्णा ॥ २४ ॥ ३२३ ॥ पक्खिप्प तामु
 पययन्ति बाले अट्ठस्सरे ते कल्लग रमन्ते । तण्हाइया ते तउतम्बतत्त पज्जिजमाण-
 द्यर रसन्ति ॥ २५ ॥ ३२४ ॥ अप्पेण अप्प इह वयइत्ता भवाहने पुव्वमए
 महस्से । विट्ठन्ति तस्या बहुकूरकम्मा जहा कड कम्म तहासि भारे ॥ २६ ॥ ३२५ ॥
 समज्जिणिता कल्लस अणजा ड्ढेहि कन्तेहि य पिप्पहणा । ते दुम्भगन्धे कतिणे य
 फासे कम्मोवगा कुणिमे आवमन्ति ॥ २७ ॥ ३२६ ॥ ति वेमि निरयविभत्तिय-
 ज्ञयणे पढमुद्देसे ॥

अहावर सासयदुक्खधम्म त भे पवक्खामि जहातहेण । बाला जहा दुक्कड-
 कम्मकारी वेयन्ति कम्माई पुरेकडाइ ॥ १ ॥ ३२७ ॥ हत्थेहि पाएहि य बन्धिरुग
 उयर विकतन्ति सुरातिएहि । गिण्हित्तु बालस्म विहत्तु देह वद्ध थिर पिट्ठउ
 उद्धरन्ति ॥ २ ॥ ३२८ ॥ बाह् पकतन्ति य मूलओ से धूल वियास मुहे आड-

हन्ति । रहंसि जुत्त सरयन्ति बाल आरुस्स विज्झन्ति तुटेण पिट्ठे ॥ ३ ॥ ३२९ ॥
 अय व तत्त जलिय सजोइ तऊवम भूमिमणुक्कमन्ता । ते डज्झमाणा कलुण थणन्ति
 उसुचोइया तत्तजुगेसु जुत्ता ॥ ४ ॥ ३३० ॥ बाला बला भूमिमणुक्कमन्ता पविज्जल
 लोहपह च तत्त । जसी भिदुग्गासि पवज्जमाणा पेसे व दण्डेहि पुरा करेन्ति ॥ ५ ॥
 ॥ ३३१ ॥ ते सपगादसि पवज्जमाणा सिलाहि हम्मन्ति निपातिणीहि । सतावणी
 नाम चिरट्ठिईया सत्तप्पई जत्थ असाहुकम्मा ॥ ६ ॥ ३३२ ॥ कन्दूसु पक्खिप्प
 पयन्ति बाल तओ वि दद्धा पुण उप्पयन्ति । ते उद्धुकाएहि पवज्जमाणा अवरेहि
 खजन्ति सणप्फएहि ॥ ७ ॥ ३३३ ॥ समूसिय नाम विधूमठाण जं सोयत्तत्ता
 कलुणं थणन्ति । अहोसिर कट्ठु विगत्तिऊण अय व सत्थेहि समोसवेन्ति ॥ ८ ॥
 ॥ ३३४ ॥ समूसिया तत्थ विसूणियंगा पक्खीहि खजन्ति अयोमुहेहि । सजीवणी
 नाम चिरट्ठिईया जसी पया हम्मइ पावचेया ॥ ९ ॥ ३३५ ॥ तिक्खाहि सूलाहि
 निवाययन्ति वसोगय सावयय व लद्ध । ते सूलविद्धा कलुण थणन्ति एगन्तदुक्खं
 दुहओ गिलाणा ॥ १० ॥ ३३६ ॥ सया जल नाम निह महन्त जसी जलन्तो
 अगणी अकट्ठो । चिट्ठन्ति वद्धा बहुकूरकम्मा अरहस्सरा केइ चिरट्ठिईया ॥ ११ ॥
 ॥ ३३७ ॥ चिया महन्तीउ समारभित्ता छुम्भन्ति ते त कलुण रसन्ति । आवट्ठई
 तत्थ असाहुकम्मा सप्पी जहा पडिय जोइमज्झे ॥ १२ ॥ ३३८ ॥ सया कसिण
 पुण घम्मठाण गाढोवणीय अइदुक्खधम्म । हत्थेहि पाएहि य वन्धिऊण सत्तु-
 व्वदण्डेहि समारभन्ति ॥ १३ ॥ ३३९ ॥ भजन्ति बालस्स वहेण पुट्ठी सीस पि
 भिन्दन्ति अयोधणेहि । ते भिन्नदेहा फलग व तच्छा तत्ताहि आराहि नियोजयन्ति
 ॥ १४ ॥ ३४० ॥ अभिजुजिया रद्द असाहुकम्मा उसुचोइया हत्थिवह वहन्ति ।
 एग दुरुहित्तु दुवे तओ वा आरुस्स विज्झन्ति ककाणओ से ॥ १५ ॥ ३४१ ॥ बाला
 बला भूमिमणुक्कमन्ता पविज्जल कण्ठइल महन्त । विवद्धत्तप्पेहि विवण्णचित्ते समी-
 रिया कोट्ठवल्लि करेन्ति ॥ १६ ॥ ३४२ ॥ वैयालिए नाम महाभित्तावे एगायए
 पव्वयमन्तलिक्वे । हम्मन्ति तत्था बहुकूरकम्मा पर सहस्साण मुहुत्तगाण ॥ १७ ॥
 ॥ ३४३ ॥ सवाहिया दुक्कडिणो थणन्ति अहो य राओ परितप्पमाणा । एगन्तकूडे
 नरगे महन्ते कूडेण तत्था विसमे हया उ ॥ १८ ॥ ३४४ ॥ भजन्ति ण पुव्वमरी
 सरोस समुग्गरे ते मुसले गहेउ । ते भिन्नदेहा रुहिर वमन्ता ओमुद्धगा धरणितले
 पडन्ति ॥ १९ ॥ ३४५ ॥ अणासिया नाम महासियाला पागब्भिणो तत्थ
 सयावकोवा । खजन्ति तत्था बहुकूरकम्मा अदूरगा सरलियाहि वद्धा ॥ २० ॥
 ॥ ३४६ ॥ सयाजला नाम नई भिदुग्गा पविज्जल लोहविलीणत्तत्ता । जसी भिदु-

गति पवज्जमाणा एगायताणुसमण करेन्ति ॥ २१ ॥ ३४७ ॥ एयाड फानाई
 फुत्तन्ति बाल निरन्तर तत्त चिरट्टिइय । न हम्ममाणस्स उ होड ताण एगो मय
 पच्चण्होड दुक्ख ॥ २२ ॥ ३४८ ॥ ज जारिस्स पुव्वमक्कासि कम्म तमेव आगच्छद
 सपराए । एगन्तदुक्ख भवमज्जात्ता वेयन्ति दुक्खी तमणन्तदुक्ख ॥ २३ ॥
 ॥ ३४९ ॥ एयाणि सोया नरगाणि धारे न हिमए किञ्चण गव्वलोए । एगन्तदिट्ठी
 अपरिगहे उ युज्जिज्ज लोगस्स वस न गच्छे ॥ २४ ॥ ३५० ॥ एवं तिरिक्खे
 मणुयामरेणु चउरन्तणन्त तयणुव्विवाग । स गव्वमेय इइ वेयत्ता कम्पज्ज बाल
 युयमायरेज्ज ॥ २५ ॥ ३५१ ॥ नि वेमि ॥ निरयविमत्तियज्झयणं पञ्चमं ॥

सिरिवीरत्थुडयज्झयणे छट्ठे

पुत्तिट्ठस्स ण ममणा माहणा य अगारिणो या परित्तियया य । स वेड नेगनहिय
 धम्ममाहु अणेत्तिस्स साहुममिस्सयाए ॥ १ ॥ ३५२ ॥ क्ह च नाणं क्ह दत्ता से
 सील क्ह नायमुयस्स आत्ति । जाणासि ण भिक्खु जहानहेग अहामुं बूहि जहा
 निमन्त ॥ २ ॥ ३५३ ॥ मेयतए से कुमलासुपत्ते अणन्तनाणी य अणन्तदसी ।
 जसमिणो चम्पुपहे ठियस्स जाणाहि धम्म च धिड च पेहि ॥ ३ ॥ ३५४ ॥
 उट्ठ अहे य तिरिय दिमासु तमा य जे भावर जे य पाणा । से नियनियेहि समिक्ख
 पत्ते दीवे व धम्म ममिय उदाहु ॥ ४ ॥ ३५५ ॥ से गव्वदसी अभिभूयनाणी
 निरामगन्धे पिट्ठम ठियप्पा । अणुत्तरे गव्वजगति विज गन्था अईए अभए अणाऊ
 ॥ ५ ॥ ३५६ ॥ से भूटपणे अणिएअचारी ओहत्तरे धारे अणन्तचक्ख । अणुत्तर
 तप्पड सूरिए वा वइरोगिन्दे व तम पगासे ॥ ६ ॥ ३५७ ॥ अणुत्तर धम्ममि
 जिगाण नेया मुणी णामव आसुपणे । इन्दे व देवाण महाणुभावे सहम्मणेया दिवि
 ण पिसिट्ठे ॥ ७ ॥ ३५८ ॥ से पदया अक्खयमागरे वा महोदही वा पि अणन्त-
 पारे । अगापिटे वा अम्माइ मुक्खे मक्खे व देवाहिबडे जुईम ॥ ८ ॥ ३५९ ॥ से
 वीरिएण पडिपुण्णवीरिए उदमणे वा नगसव्वसेट्ठे । सुरालए वा सि मुदागरे से
 निरायए नेगणुगेववेए ॥ ९ ॥ ३६० ॥ मय सहस्साण उ जोयणाण निक्खउणे
 पण्हगवेजयन्ते । से जोयणे नवनवत्ते सहस्से उदुस्सियो हेट्ठ सहस्समेग ॥ १० ॥
 ॥ ३६१ ॥ पुट्ठे नमे चिट्ठ भूमिवट्ठिए ज सूरिया अणुपरिवट्ठयन्ति । से हेमवज्जे
 चहुनन्दणे य जत्ती रइ वेययई महिन्दा ॥ ११ ॥ ३६२ ॥ से पज्वए महमहप्पगासे
 विरायई क्कणमट्ठवज्जे । अणुत्तरे गिरिस्स य पव्वदुग्गे गिरीवरे से जलिए व भोमे

॥ १२ ॥ ३६३ ॥ महीइ मज्झम्मि ठिए नगिन्दे पन्नायए सूरियसुद्धलेसे । एव
 सिरीए उ स भूरिवण्णे मणोरमे जोयइ अचिमाली ॥ १३ ॥ ३६४ ॥ सुदसणस्सेव
 जसो गिरिस्स पवुच्चई महओ पव्वयस्स । एओवमे समणे नायपुत्ते जाईजसोदसण-
 नाणसीले ॥ १४ ॥ ३६५ ॥ गिरीवरे वा निसहाययागं स्यए व सेट्ठे वलयाययाण ।
 तओवमे से जगभूइपन्ने मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥ ३६६ ॥ अणुत्तर
 धम्ममुईरइत्ता अणुत्तर ज्ञाणवर झियाइ । सुसुक्कसुक्क अपगण्डसुक्क सस्सिन्दुएगन्तव-
 दायसुक्क ॥ १६ ॥ ३६७ ॥ अणुत्तरग परम महेसी असेसकम्म स विसोहइत्ता ।
 सिद्धिं गए साइमणन्तपत्ते नाणेण सीलेण य दसणेण ॥ १७ ॥ ३६८ ॥ रुक्खेसु
 णाए जह सामली वा जस्सि रइ वेययई सुवण्णा । वणेसु वा नन्दणमाहु सेट्ठ नाणेण
 सीलेण य भूइपन्ने ॥ १८ ॥ ३६९ ॥ थणिय व सहाण अणुत्तरे उ चन्दो व ताराण
 महाणुभावे । गन्धेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठ एवं मुणीण अपडिन्नमाहु ॥ १९ ॥ ३७० ॥
 जहा सयभू उदहीण सेट्ठे नागेसु वा धरणिन्दमाहु सेट्ठ । खोओदए वा रस वेजयन्ते
 तवोवहाणे मुणि वेजयन्ते ॥ २० ॥ ३७१ ॥ हत्थीसु एरावणमाहु नाए सीहो मिगाण
 सल्लिण गत्ता । पक्खीसु वा गरुळे वेणुदेवो निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥ २१ ॥
 ॥ ३७२ ॥ जोहेसु नाए जह वीससेणे पुप्फेसु वा जह अरविन्दमाहु । खत्तीण सेट्ठे
 जह दन्तवके इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ ३७३ ॥ दाणाण सेट्ठं अभयप्प-
 याणं सन्नेसु वा अणवज्ज वयन्ति । तवेसु वा उत्तम वम्भचेर लोगुत्तमे समणे नाय-
 पुत्ते ॥ २३ ॥ ३७४ ॥ ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
 निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥ ३७५ ॥
 पुढोवमे धुणइ विगयगेही न सनिहिं कुव्वइ आसुपन्ने । तरिउ समुहं व महाभवोध
 अभयकरे वीर अणन्तचक्खु ॥ २५ ॥ ३७६ ॥ कोह च माण च तहेव माय लोभं
 चउत्थ अज्झत्तदोसा । एयाणि वन्ता अरहा महेसी न कुव्वई पाव न कारवेइ
 ॥ २६ ॥ ३७७ ॥ किरियाकिरिय वेणइयाणुवाय अजाणियाण पडियच्च ठाण । से
 सव्ववाय इइ वेयइत्ता उवट्ठिए सजमदीहराय ॥ २७ ॥ ३७८ ॥ से वारिया इत्थि
 सराइभत्त उवहाणव दुक्खप्पयट्ठयाए । लोग विदिता आर पर च सव्वं पभू वारिय
 सव्ववार ॥ २८ ॥ ३७९ ॥ सोचा य धम्मं अरहन्तभासिय समाहिंयं अट्ठपदोव-
 सुद्ध । त सहहाणा य जणा अणाऊ इन्दा व देवाहिंव आगमिस्सन्ति ॥ २९ ॥ ३८० ॥
 ति त्रेमि ॥ सिरिवीरत्थुइज्झयणं छट्ठं ॥

सिद्धि हवेज तम्हा अगणि पुमन्ताण कुम्भिण पि ॥ १८ ॥ ३९८ ॥ अपरिक्ता
 दिट्ट न हु एव सिद्धी एहिन्ति ते घायमनुज्जमाणा । भूएहि जाण पडिलेह साय
 विज्ज गहाय तसयावरेहि ॥ १९ ॥ ३९९ ॥ यगन्ति लुप्पन्ति तसन्ति कम्मी पुटो
 जगा परिसन्नाय भिन्ना । तम्हा विरु विरओ आयुगुत्ते दट्ठुं तसे वा पडिसहरेज्जा
 ॥ २० ॥ ४०० ॥ जे धम्मल्लुट्ठ विजिहाय भुजे विवडेण साहट्ट य जे तिणाई । जे
 धोवई लमवई व वत्थ अहाहु ते नागणियस्स दूरे ॥ २१ ॥ ४०१ ॥ कम्म परिणाय
 दगानि धीरे विवडेण जीवेज य आदिमोक्खा । से वीयरुत्ताइ अभुज्जमाणे विरए
 निगागाट्ठु इत्थियातु ॥ २२ ॥ ४०२ ॥ जे मायर च पियर च हिंया गार तहा
 पुत्तपनु धन च । पुग्गट्ठ जे धावइ साउगाड अहाहु से नामणियस्स दूरे ॥ २३ ॥
 ॥ ४०३ ॥ पुग्गट्ठ जे धावइ नाउगाड आघाड धम्म उयरानुगिद्धे । अहाहु से
 आयरियाग नयसे जे लावएज्जा असणस्स हेऊ ॥ २४ ॥ ४०४ ॥ निम्माग्ग वीणे
 परभोयगम्भि मुहगल्लीए उयरानुगिद्धे । नीवारगिद्धे व महावरारो अरूए एहिइ
 घायमेव ॥ २५ ॥ ४०५ ॥ अन्नस्स पाणस्मिहल्लोउयस्स अणुप्पिय भागद सेवमाणे ।
 पातयय चैय सुजीलय च निस्तारए होउ जहा पुलाए ॥ २६ ॥ ४०६ ॥ अनाय-
 पिण्डेण हिंयामएज्जा नो पूया तवमा आवरेज्जा । गदेहि स्वेहि असज्जमाण नव्वेहि
 कनेहि विणीय गेहि ॥ २७ ॥ ४०७ ॥ सव्वाड सगाई अदय धीरे सव्वाड
 दुक्काइ निनिक्खामाणे । अजिले अग्निदे अणिएवचारी अभयकरे भिक्खु अणा-
 विलप्पा ॥ २८ ॥ ४०८ ॥ भारस्स जाआ मुनि भुज्जएज्जा कनेज पावस्स विवेग
 भिक्खु । दुक्खेण पुट्टे धुवमाएज्जा सगामसीने य पर टमेज्जा ॥ २९ ॥ ४०९ ॥
 अवि हम्ममाणे फलगायतट्ठो गमागन क्कट्ठ अन्तगस्स । निधूय कम्म न पवगुवेइ
 अक्कट्ठए वा गगट्ठ नि चेत्ति ॥ ३० ॥ ४१० ॥ कुन्नीलपरिभासियज्जयणं
 सत्तमं ॥

वीरियज्जयणे अट्ठमे

हुहा वेय सुयक्खाय त्रीमिय नि पपुगट्ठ । किं तु वीरस्स वीरत्त कद चैय पपुगट्ठ
 ॥ १ ॥ ४११ ॥ कम्ममेगे पपेज्जन्ति अक्कम्म वा वि सुव्वया । एणहिं दोहि ठाणेहिं
 जेहिं वीरन्ति मयिया ॥ २ ॥ ४१२ ॥ पमाय कम्ममादनु अप्पमाय तहावर ।
 तव्वायाट्ठेमओ वा वि वाल पण्डियमेव वा ॥ ३ ॥ ४१३ ॥ नत्थमेगे तु उज्ज्वलान्ता
 अट्ठवायाय पाणिग । एगे मन्ते अहिज्जन्ति पाणभूयविट्ठेदिग्गे ॥ ४ ॥ ४१४ ॥
 मायिगो रुट्ठ माया य कामभोगे समारगे । हन्ता छेत्ता पगच्छिप्ता आयसायाण-

गामिणो ॥ ५ ॥ ८१५ ॥ मणगा वयगा चैव कायगा चैव अन्तगो । आरओ परओ
 वा मि दुहा वि य असजया ॥ ६ ॥ ८१६ ॥ नेराडं कुव्वइं वेगी तओ नेरेहि रज्जइ ।
 पाओवगा य आरम्भा दृग्गफागा य अन्तगो ॥ ७ ॥ ८१७ ॥ सपराय निवन्ठन्ति
 अत्तदुग्गट्ठारिणो । रागदोमस्सिया चाला पाय कुव्वन्ति ने वहु ॥ ८ ॥ ८१८ ॥ एवं
 मक्कम्मविरिय चालागं नु पवेत्थ । इत्तो अक्कम्मविरिय पण्डिया गुणेह मे ॥ ९ ॥
 ॥ ४१९ ॥ दणिए गन्धणुम्मुरे गव्वथो छिन्नगन्धणे । पणो पायग कम्म गड
 कंठ अन्तगो ॥ १० ॥ ८२० ॥ नेयाडय सुयङ्गाय उयायाय मगाहए । भुजो
 भुजो दुहायास अउहत्त तहा तहा ॥ ११ ॥ ८२१ ॥ ठाणी मिहिटागाणि चट-
 स्मन्ति न समओ । अणियए अयं वासे नायएहि मुहीहि य ॥ १२ ॥ ४२२ ॥
 एवमायाय मेहावी अप्पणो गिद्धिसुद्धरे । आरिय उवसपजे गव्वधम्ममसोयियं
 ॥ १३ ॥ ४२३ ॥ सहसमए नया धम्मगारं गुणेतु वा । मसुवट्टिएठ अणगारे
 पयङ्गायपावए ॥ १४ ॥ ४२४ ॥ ज किंउत्तम जाणे आउत्तमेस्स अप्पणो ।
 तस्सेव अन्तरा गिष्ण तिस्र उक्कमेज पण्डिए ॥ १५ ॥ ४२५ ॥ जहा कुम्मे
 सअहाइ सए देहे ममाहरे । एव पावडं मेहागी अउत्तप्पेण ममाहरे ॥ १६ ॥
 ॥ ४२६ ॥ माहरे हृत्यपाए य मग पणिन्दियाणि य । पावग च परीणम भासा-
 दोम च तारिस ॥ १७ ॥ ४२७ ॥ अणु माग च माग च त परिणाय पण्डिए ।
 मायागारवणिहुए उवसन्ते निहे चरे ॥ १८ ॥ ४२८ ॥ पाणे य नाटवाएज्जा
 अदिन पि य नायए । साडय न मुस वूया एम वम्मे जुसीमओ ॥ १९ ॥ ४२९ ॥
 अइम्मन्ति चायाए मगसा पि न पत्यए । गव्वओ सवुटे दन्ते आयाण सुममाहरे
 ॥ २० ॥ ४३० ॥ कठ च कजमाग च आगमिस्स च पावग । सव्व त नाणु-
 जाणन्ति आयगुत्ता जिडन्दिया ॥ २१ ॥ ४३१ ॥ जे याडुद्धा महाभागा वीरा
 असमत्तदसिणो । अवुद्ध तेमि परवन्त सफ्फ होइ गव्वसो ॥ २२ ॥ ४३२ ॥ जे
 य बुद्धा महाभागा वीरा मम्मत्तदसिणो । सुद्ध तेमि परवन्त अक्क होइ गव्वसो
 ॥ २३ ॥ ४३३ ॥ तेमि पि न तवो सुद्धो निक्कजन्ता जे महाकुश । ज नेवधे
 वियाणन्ति न सिलोण पवेज्जए ॥ २४ ॥ ४३४ ॥ अप्पपिण्डाणि पाणासि अप्प
 भासेज्ज सुव्वए । रन्ते भिनिव्वुडे दन्ते वीयगिद्धी मया जए ॥ २५ ॥ ४३५ ॥
 क्षाणजोग समाहट्ट काय विठसेज्ज सव्वणो । तितिकय परम नया आमोक्खाए
 परिव्वएजाति ॥ २६ ॥ ४३६ ॥ ति वेसि ॥ वीरियज्जयणं अट्टमं ॥

धम्मज्झयणे नवमे

१ कयरे धम्मे अक्खाए माहणेण मईमया । अञ्जु धम्म जहातच्च जिणाण त
 सुणेह मे ॥ १ ॥ ४३७ ॥ माहणा खत्तिया वेस्ता चण्डाला अदु वोक्कसा । एसिया
 वेसिया सुद्धा जे य आरम्भनिस्सिया ॥ २ ॥ ४३८ ॥ परिग्गहनिविट्ठाण पाव
 तेसिं पवहुई । आरम्भसभिया कामा न ते दुक्खविमोयगा ॥ ३ ॥ ४३९ ॥
 आघायकिच्चमाहेउ नाइओ विसएसिणो । अन्ने हरन्ति तं वित्त कम्मी कम्मेहि
 किचई ॥ ४ ॥ ४४० ॥ माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा । नाल
 ते तव ताणाय लुप्पन्तस्स सक्कमुणा ॥ ५ ॥ ४४१ ॥ एयमट्ठ सपेहाए परमट्ठा-
 णुगामिय । निम्ममो निरहकारो चरे भिक्खु जिणाहिय ॥ ६ ॥ ४४२ ॥ चिच्चा
 वित्त च पुत्ते य नाइओ य परिग्गह । चिच्चा णं अन्तग सोय निरवेक्खो परिव्वए
 ॥ ७ ॥ ४४३ ॥ पुढवी अगणी वाळु तणस्सुक्ख सवीयगा । अण्डया पोयजराळ
 रसससेयउब्भिया ॥ ८ ॥ ४४४ ॥ एएहिं छहिं काएहिं त विज्ज परिजाणिया ।
 मणसा कायवक्केण नारम्मी न परिग्गही ॥ ९ ॥ ४४५ ॥ मुसावाय वहिद्ध च
 उग्गहं च अजाइया । सत्यादाणाइ लोगसि त विज्ज परिजाणिया ॥ १० ॥ ४४६ ॥
 पलिउच्चण च भयण च थण्डिल्लुस्सयणाणि य । धूणादाणाइ लोगसि त विज्जं
 परिजाणिया ॥ ११ ॥ ४४७ ॥ धोयणं रयण चेव वत्थीक्कम्म विरेयण । वमणज्ज-
 णपलीमथ तं विज्ज परिजाणिया ॥ १२ ॥ ४४८ ॥ गन्धमल्लसिणाण च दन्त-
 पक्खालण तहा । परिग्गहित्थिकम्म च त विज्ज परिजाणिया ॥ १३ ॥ ४४९ ॥
 उद्देसिय कीयगड पामिच्च चेव आहड । पूय अणेसणिज्ज च त विज्ज परिजाणिया
 ॥ १४ ॥ ४५० ॥ आसूणिमक्खिराग च गिद्धवघायक्कम्मग । उच्छोलण च कक्कं
 च त विज्ज परिजाणिया ॥ १५ ॥ ४५१ ॥ सपसारी कयकिरिए पसिणाययणाणि
 य । सागारिय च पिण्डं च त विज्ज परिजाणिया ॥ १६ ॥ ४५२ ॥ अट्ठावय न
 सिक्खिज्जा वेहाइय च नो वए । हत्थक्कम्म विवाय च त विज्ज परिजाणिया
 ॥ १७ ॥ ४५३ ॥ पाणहाओ य छत च नालीय वालवीयण । परकिरिय अन्नमन्न
 च त विज्ज परिजाणिया ॥ १८ ॥ ४५४ ॥ उच्चार पासवण हरिएसु न करे मुणी ।
 वियडेण वा वि साहट्ठु नावमज्जे कयाइ वि ॥ १९ ॥ ४५५ ॥ परमत्ते अन्नपाण न
 भुञ्जेज्ज कयाइ वि । परवत्थ अचेलो वि त विज्ज परिजाणिया ॥ २० ॥ ४५६ ॥
 आसन्दी पलियङ्गे य निसिज्ज च गिहन्तरे । सपुच्छण सरण वा त विज्ज परिजा-
 णिया ॥ २१ ॥ ४५७ ॥ जस कित्तिं सिलोग च जा य वन्दणपूयणा । सव्वलो-
 यसि जे कामा त विज्जं परिजाणिया ॥ २२ ॥ ४५८ ॥ जेणेह निव्वहे भिक्खु

अप्रपाणं तद्वाहिद् । अणुणयाणमजेमि त पिज्जं परिजाणिया ॥ २३ ॥ ४५९ ॥
 एव उदाहु निगन्धे महावारे महामुणी । अणन्तनाणदमी से वम्म, ठेउतव सुय
 ॥ २४ ॥ ४६० ॥ मागमाणो न भावेज्जा नेव वप्फेज मम्मय । माट्ठाग विव-
 ज्जेज्जा अणुचिन्निय विगारे ॥ २५ ॥ ४६१ ॥ तयिमा तट्ठा मागा जं वड्ठा-
 णुत्तप्पे । ज छम त न वत्तव्व एगा आगा नियण्ठिया ॥ २६ ॥ ४६२ ॥
 होशयाय गहीयाय गोयायाय च नो वेए । तुम तुम नि अमणुज मय्यो त न
 वत्तए ॥ २७ ॥ ४६३ ॥ अउसीले मवा भिक्खू नेव समग्गिय भए । मउत्तवा
 तत्तुयस्सग्गा पट्ठिउत्तेज्ज ते पिऊ ॥ २८ ॥ ४६४ ॥ नत्तय अन्तराए पग्गेहे
 न निसीयए । गाममुमारिणं भिक्खू नादवेउ हने मुणी ॥ २९ ॥ ४६५ ॥ अणुस्सओ
 उराळेमु जयमाणो परिव्वण । चरियाए अणमत्तो पुट्ठो तत्त द्वियागए ॥ ३० ॥
 ॥ ४६६ ॥ हम्ममाणो न उप्पेज्ज युग्माणो न सज्जे । सुमणे अहियासेज्जा न य
 सोलाहल करे ॥ ३१ ॥ ४६७ ॥ लद्धे कामे न पत्थेज्जा विवेगे एवमाहिए ।
 आयरियाट्ठ उप्पेज्जा गुण्ण अन्तिग मया ॥ ३२ ॥ ४६८ ॥ सुम्मग्गमाणो उवा-
 सेज्जा नुप्पन सुनवस्सिय । नीरा जे अणयजेसी धिग्मन्ता जिडन्टिया ॥ ३३ ॥
 ॥ ४६९ ॥ गिहे वीयमपानन्ता पुरिमादाणिया नरा । ते वीरा चन्धणुम्मुका
 नायक्खन्ति जीविय ॥ ३४ ॥ ४७० ॥ अगिद्धे मइसासेसु आरम्भेसु अनिस्सिय ।
 मव्व त ममयातीय जमेय लभिय बहु ॥ ३५ ॥ ४७१ ॥ अग्गमाज च माय च त
 परिताय पण्डिए । गारवाणि य मय्याणि निव्वाण सवए मुनि ॥ ३६ ॥ ४७२ ॥
 ति वेमि ॥ धम्मज्झयणं नवमं ॥

समाहियज्झयणे दसमे

आघ मईमं अणुपीड धम्म अज्जू समाहि तमिम मुणेह । अपठिन भिक्खू उ
 समाहिपत्ते अणियाण भूएसु परिव्वएज्जा ॥ १ ॥ ४७३ ॥ उट्ठ अहे य निरिय
 दिमासु तमा य जे थावर जे य पाणा । हत्थेहि पाएहि य सज्जमिता अदिग्गमजेउ
 य नो गहेज्जा ॥ २ ॥ ४७४ ॥ सुयक्खायवम्मे विनिगिण्ठतिण्णे लाढे चरे आय-
 तुले पयासु । आय न कुज्जा दह जीवियट्ठी चय न कुज्जा सुनवस्सि भिक्खू ॥ ३ ॥
 ॥ ४७५ ॥ मव्विन्दियाभिनिव्युढे पयासु चरे मुणी मव्वउ विष्णुमुये । पामाहि
 पाणे य पुट्ठो वि सत्ते दुक्खेण अट्ठे परितप्पमाणे ॥ ४ ॥ ४७६ ॥ एएमु वाळे य
 पकुव्वमाणे आवट्ठई कम्मसु पावएसु । अइवायओ कीरइ पायक्कम्म निउज्जमाणे उ
 करेउ कम्म ॥ ५ ॥ ४७७ ॥ आदीणवित्ती व करेउ पाय मन्ता उ एगन्तसमाहि-
 माहु । उढे समाहीय रए विवेगे पाणाडवाया विरए ठियप्पा ॥ ६ ॥ ४७८ ॥

सव्व जग तू समयणुपेही पियमप्पिय कस्स वि नो करेज्जा । उट्ठाय दीणो य पुणो विसण्णो सपूयण चेव सिलोयकामी ॥ ७ ॥ ४७९ ॥ आहाकड चेव निकाममीणे नियामचारी य विसण्णमेसी । इत्थीसु सत्ते य पुढो य वाले परिग्गह चेव पकुव्वमाणे ॥ ८ ॥ ४८० ॥ वेराणुगिद्धे निचय करेइ इओ चुए से इहमट्ठदुग्गं । तम्हा उ मेहावि समिक्ख धम्मं चरे मुणि सव्वउ विप्पमुक्के ॥ ९ ॥ ४८१ ॥ आय न कुज्जा इह जीवियट्ठी असज्जमाणो य परिव्वएज्जा । निसम्मभासी य विणीय गिद्धि हिंसन्नियं वा न कह करेज्जा ॥ १० ॥ ४८२ ॥ आहाकड वा न निकामएज्जा निकामयन्ते य न सयवेज्जा । धुणे उराल अणुवेहमाणे चिच्चा न सोय अणवेक्खमाणो ॥ ११ ॥ ४८३ ॥ एगत्तमेय अभिपत्थएज्जा एवं पमोक्खो न मुस ति पास । एसप्पमोक्खो अमुसे चरे वि अकोहणे सच्चरए तवस्सी ॥ १२ ॥ ४८४ ॥ इत्थीसु या आरय मेहुणाओ परिग्गह चेव अकुव्वमाणे । उच्चावएसु विसएसु ताई निस्ससय भिक्खु समाहिपत्ते ॥ १३ ॥ ४८५ ॥ अरइं रइं च अभिभूय भिक्खु तणाइफास तह सीयफास । उण्हं च दस चऽहियासएज्जा सुब्भि व दुब्भि व तित्तिक्खएज्जा ॥ १४ ॥ ४८६ ॥ गुत्तो वईए य समाहिपत्तो लेस समाइट्ठ परिव्वएज्जा । गिह न छाए न वि छाएज्जा समिस्सभाव पयहे पयासु ॥ १५ ॥ ४८७ ॥ जे केइ लोगम्मि उ अकिरियआया अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसन्ति । आरम्भसत्ता गढिया य लोए धम्म न जाणन्ति विमोक्खहेउ ॥ १६ ॥ ४८८ ॥ पुढो य छन्दा इह माणवा उ किरियाकिरीय च पुढो य वाय । जायस्स बालस्स पकुव्व देह पवट्ठेइ वैरमसजयस्स ॥ १७ ॥ ४८९ ॥ आउक्खय चेव अबुज्जमाणे ममाइ से साहसकारि मन्दे । अहो य राओ परितप्पमाणे अट्ठेसु मूढे अजरामरे व्व ॥ १८ ॥ ४९० ॥ जहाहि वित्त पसवो य सव्व जे बन्धवा जे य पिया य मिता । लालप्पई से वि य एइ मोह अन्ने जणा तसि हरन्ति वित्त ॥ १९ ॥ ४९१ ॥ सीह जहा खुट्ठमिगा चरन्ता दूरे चरन्ति परिसकमाणा । एव तु मेहावि समिक्ख धम्म दूरेण पाव परिवज्जएज्जा ॥ २० ॥ ४९२ ॥ सबुज्जमाणे उ नरे मईम पावाउ अप्पाण निवट्ठएज्जा । हिसप्पसूयाईं दुहाईं मत्ता वेराणुवन्धीणि महब्भयाणि ॥ २१ ॥ ४९३ ॥ मुस न वूया मुणि अत्तगामी निव्वाणमेय कसिण समार्हि । सय न कुज्जा न य कारवेज्जा करन्तमन्न पि य नाणुजाणे ॥ २२ ॥ ४९४ ॥ सुद्धे सिया जाऐं न दूसएज्जा अमुन्धिए न य अज्झोववन्ने । धिइम विमुक्के न य पूयणट्ठी न सिलोयगामी य परिव्वएज्जा ॥ २३ ॥ ४९५ ॥ निक्खम्म गेहाउ निरावक्खी काय विउस्सेज्ज नियणछिन्ने । नो जीविय नो मरणाभिकखी चरेज्ज भिक्खु वलया विमुक्के ॥ २४ ॥ ४९६ ॥ ति वेमि ॥ समाहियज्जयणं दसमं ॥

मग्गज्जयणे एयाग्गहे

१५२ ॥ १ ॥ ४९७ ॥ ज मग्ग पुनरं सुद्ध मव्वदुक्खविमोक्कता । जग्गामि ण
 जहा भिक्खू त णो वृद्धि महामुणी ॥ २ ॥ ४९८ ॥ जड णो केड पुच्छिज्जा देवा
 अदुय माणुमा । तेमिं तु कयर मग्ग आट्ठ्ठेज्ज रुद्धि णो ॥ ३ ॥ ४९९ ॥ जड
 वो केड पुच्छिज्जा देवा अदुय माणुमा । तेमिं पडिगाहेज्जा मग्गमाग्ग सुणेह मे
 ॥ ४ ॥ ५०० ॥ अणुपुव्वेग्ग महाधोग कामवेग्ग पयेग्ग । जमायाग्ग दओ पुव्व मसुह
 वयहाग्गिगे ॥ ५ ॥ ५०१ ॥ अतरिं सु तग्गन्तेगे तग्गिस्सन्ति अगागया । त गोवा
 पडिक्कयामि जन्तवो न सुणेह मे ॥ ६ ॥ ५०२ ॥ पुट्ठवीचीया पुट्ठे सत्ता आट-
 जीया तहाणी । वाडजीया पुट्ठे सत्ता तात्तक्कता मर्मायगा ॥ ७ ॥ ५०३ ॥
 अहावग्ग तमा पागा एग्ग उयाय आहिग्ग । एयावए जीवक्काए नाग्गरे सोड विज्जडे
 ॥ ८ ॥ ५०४ ॥ मव्वार्हि जणुजुत्ताहिं मदम पडिलेहिया । मव्वे अहन्तदुक्कता य
 अओ खव्वे न हिंया ॥ ९ ॥ ५०५ ॥ एग्ग तु नागिते मार ज न हिंया रंचण ।
 अहिंमा समय चेव एग्गवन्त मियागिया ॥ १० ॥ ५०६ ॥ उट्ठ अहे य निरिय जे
 केड तग्गयाग्गरा । मव्वन्थ निरड विज्जा सन्ति निव्वाग्गमाहिग्ग ॥ ११ ॥ ५०७ ॥
 पभू दोमे निगग्गिया न विग्गहेन केग्ग ति । माग्गमा वग्गमा चेव कायमा चेव
 अन्तग्गो ॥ १२ ॥ ५०८ ॥ सुवुट्ठे से महापणे धीरे दग्गमा चरे । एग्गानमिए
 निथ वज्जयन्ते अणेमां ॥ १३ ॥ ५०९ ॥ भूयाड च नमाग्गन्त तमुहिन्ता य जं
 रुड । तारिस्स तु न गिग्गहेज्जा अप्पाग्ग रुसग्ग ॥ १४ ॥ ५१० ॥ पुडिक्कम्म न
 सेवेज्जा एग्ग धम्मं वुसीमओ । ज कियि अभिक्कयेज्जा मव्वमो त न कप्पए ॥ १५ ॥
 ॥ ५११ ॥ हग्गन्त नाणुग्गजेज्जा आयग्गुत्ते जिह्मिए । ठागाइ गन्ति मग्गुग्गं नाग्गेषु
 नग्गरेसु वा ॥ १६ ॥ ५१२ ॥ तहा तिर ममारब्भ अत्थि पुग्ग ति नो वए ।
 अहवा नयि पुग्ग ति एग्गमेग्ग महव्वभग्ग ॥ १७ ॥ ५१३ ॥ दाट्ठया य जे पाणा
 हम्मन्ति तग्गयाग्गरा । तेमिं नारक्कडाट्ठाए नग्गहा अयि ति नो वए ॥ १८ ॥ ५१४ ॥
 जेमिं न उवक्कप्पन्ति अन्नपाग्ग तहाग्गिह । तेमिं तग्गभन्तराय ति तग्गहा नयि ति नो
 वए ॥ १९ ॥ ५१५ ॥ जे य दाग्ग पससन्ति वहमिन्टन्ति पाणिग्ग । जे य ण
 पडिसेहन्ति पित्तिन्टेय रग्गन्ति ते ॥ २० ॥ ५१६ ॥ दग्गओ पि ते न भामन्ति
 अयि वा नयि वा पुग्गो । आयं रयम्स हेग्ग ण निव्वाग्ग पाटग्गन्ति ते ॥ २१ ॥
 ॥ ५१७ ॥ निव्वाग्ग परम बुद्धा नक्कम्पताण व चन्दिमा । तग्गहा गया जए दन्ते
 निव्वाग्ग सवए मुणी ॥ २२ ॥ ५१८ ॥ वुज्जमाग्गताण पागाग्ग विक्कन्ताण सक्कम्पणा ।

आघाइ साहु त दीव पइट्टेसा पवुच्चई ॥ २३ ॥ ५१९ ॥ आयगुत्ते सया दन्ते
छिन्नसोए अणासवे । जे वम्म सुद्धमक्खाइ पडिपुण्णमणोलिस ॥ २४ ॥ ५२० ॥
तमेव अवियाणन्ता अबुद्धा बुद्धमाणिणो । बुद्धा मो त्ति य मन्नन्ता अन्त एए समा-
हिए ॥ २५ ॥ ५२१ ॥ ते य वीयोदग चेव तमुद्दिस्सा य ज कड । भोच्चा ज्ञाण
झियायन्ति अखेयन्नासमाहिया ॥ २६ ॥ ५२२ ॥ जहा ढका य कका य कुलला
मग्गुका सिही । मच्छेसण झियायन्ति ज्ञाण ते कल्लसाधम ॥ २७ ॥ ५२३ ॥ एव
तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी अणारिया । विसएमण झियायन्ति कका वा कल्लसाहमा
॥ २८ ॥ ५२४ ॥ सुद्ध मग्ग विराहिता इहमेगे उ दुम्मई । उम्मग्गगया दुक्खं
घायमेसन्ति त तहा ॥ २९ ॥ ५२५ ॥ जहा आसाविणिं नाव जाइअन्धो दुत्तहिया ।
इच्छई पारमागन्तु अन्तरा य विसीयइ ॥ ३० ॥ ५२६ ॥ एव तु समणा एगे
मिच्छदिट्ठी अणारिया । सोयं कसिणमावन्ना आगन्तारो महब्भय ॥ ३१ ॥ ५२७ ॥
इम च धम्ममायाय कासवेण पवेइय । तरे सोय महाघोर अत्तताए परिव्वए
॥ ३२ ॥ ५२८ ॥ विरए गामधम्मोहिं जे केइ जगई जगा । तेसिं अत्तुवमायाए
थाम कुव्व परिव्वए ॥ ३३ ॥ ५२९ ॥ अइमाण च माय च त परिन्नाय पण्डिए ।
सव्वमेय निराकिच्चा निव्वाण सधए सुणी ॥ ३४ ॥ ५३० ॥ सधए साहुधम्म
च पावधम्म निराकरे । उवहाणवीरिए भिक्खू कोह माण न पत्थए ॥ ३५ ॥ ५३१ ॥
जे य बुद्धा अतिकन्ता जे य बुद्धा अणागया । सन्ति तेसिं पइट्ठाण भूयाण जगई
जहा ॥ ३६ ॥ ५३२ ॥ अह ण वयमावन्न फासा उच्चावया फुसे । न तेसु विणि-
हण्णेज्जा वाएण व महागिरी ॥ ३७ ॥ ५३३ ॥ सवुडे से महापत्ते धीरे दत्तेसणं
चरे । निव्वुडे कालमाक्खी एव केवल्लिणो मय ॥ ३८ ॥ ५३४ ॥ ति वेमि ॥
मग्गज्झयणं पयारहमं ॥

समोसरणज्झयणे बारहमे

चत्तारि समोसरणाणिमाणि पावादुया जाई पुटो वयन्ति । किरिय अकिरियं
विणय ति तइय अन्नाणमाहसु चउत्थमेव ॥ १ ॥ ५३५ ॥ अन्नाणिया ता कुसला
वि सन्ता असयुया नो वित्तिगिच्छतिण्णा । अकोविया आहु अकोवियेहिं अणाणु-
वीइत्तु सुस वयन्ति ॥ २ ॥ ५३६ ॥ सच्च असच्च इति चिन्तयन्ता असाहु साहु
त्ति उदाहरन्ता । जेमे जणा वेणइया अणेगे पुट्टा वि भाव विणइसु नाम ॥ ३ ॥
५३७ ॥ अणोवसखा इइ ते उदाहु अट्ठे स ओभासइ अम्ह एव । लवावसकी

य आगणहि नो क्रियिमाहसु अक्रियवाड ॥ ८ ॥ ५३८ ॥ समिस्सभार च
 गिरा गहीए मे मुम्सुडे होट अणापुनारे । इम दुपस्स डममेगपस्स आत्सु
 छल्लयया च स्स ॥ ५ ॥ ५३९ ॥ ते एवमस्सन्ति अनुज्झमाणा विप्वन्वाणि
 अक्रियवाड । जे मायडता वट्टे मत्ता भवन्ति सुसाग्गमोउदग्ग ॥ ६ ॥
 ॥ ५४० ॥ नादो उदेह न अत्तमेड न चन्दिमा वट्ट हयड वा । मट्ठिग न
 नन्दन्ति न वन्ति पाया पन्थो निपओ म्मिणे हु लोण ॥ ७ ॥ ५४१ ॥ जहा हि
 अन्ये मद्द जोडणा वि स्सार्ड नो पस्सद्दीनमे । नन्त पि ते एवमक्रियवाड
 क्रिय न पस्सन्ति निन्दपक्का ॥ ८ ॥ ५४२ ॥ सुवन्टर म्मिण स्सम्मा च
 निमित्तदेह च उप्पाडय च । अट्टमेय वट्टे अठ्ठिमा लोणमि जाणन्ति अणावाड
 ॥ ९ ॥ ५४३ ॥ जेडे विमिता तहिया भवन्ति केगिन्वि न विप्पडिण्ट ना । ते
 विजमार अणट्ठिज्जमाणा आत्सु विजा पग्गोस्समेव ॥ १० ॥ ५४४ ॥ ते एवम-
 क्खन्ति नमिष लोण तहा तहा समगा माहणा य । मयस्स न्मस्स च दुस्स
 आहसु विजाचरण पमोस्स ॥ ११ ॥ ५४५ ॥ ते चम्पु लोणमिद्द नायगा उ
 मग्गालुनामन्ति हिण पयाग । तहा तहा पाउरमाहु ओए जसी पया नायव सप-
 गाडा ॥ १२ ॥ ५४६ ॥ जे रस्सगा वा जमलोसा वा जे वा सुरा पधज्जा य
 काया । आगामगामी य पुडोडिजा जे पुगो पुगो विप्परिमाडनेन्ति ॥ १३ ॥
 ॥ ५४७ ॥ जमाहु ओट्ट मट्ठि अपारग जाणाहि ण मग्गट्ठण दुमोस्स । जसी
 विपग्गा विपयत्ताहि दुट्ठओ वि लोण अनुत्तरन्ति ॥ १४ ॥ ५४८ ॥ न
 कम्पुगा कम्म खवेन्ति बाला अक्कम्पुगा कम्म गेनेन्ति धीरा । मेहाविणे गेम-
 मयावड्या सुतोडिगे नो पन्नेन्ति पाय ॥ १५ ॥ ५४९ ॥ ते तीयडणत्तमा-
 गयाड लोस्स पागन्ति तहागगाड । नेयारो अनेनि जातनेया युद्धा हु ते अन्न-
 कडा भवन्ति ॥ १६ ॥ ५५० ॥ ते नेव दुक्खन्ति न सरवेन्ति भूयाहिमुसाड
 दुगुण्ठमाणा । मया जया विप्पगमन्ति पीग विगति पीरा य हयन्ति एो
 ॥ १७ ॥ ५५१ ॥ उहरे य पागे खुट्ठे य पागे ते अतओ पागड म्म्वलोए ।
 उव्वेहट्ट लोणमिणं महन्त पुट्ठपमतेनु पारिव्वाण्जा ॥ १८ ॥ ५५२ ॥ जे आयओ
 परओ वा वि नया अलमप्पगे होन्ति अल परेनि । तं जोडभूय च मयावसेज्जा
 जे पाडदुज्जा अणुवीड धम्म ॥ १९ ॥ ५५३ ॥ अत्ताण जो जाणड जो य लोण
 गड च जो जाण्ड नागड च । जो मायय जाग अत्तामयं च जाड च मरण च
 जगोवयाय ॥ २० ॥ ५५४ ॥ अहो वि नत्ता विडट्टा च जो आमय जाणड
 सयर च । दुस्स च जो जाणड निज्जर च नो भात्तिउमरिहट्ट क्रिययाय ॥ २१ ॥

॥ ५५५ ॥ सदेसु रुवेसु असज्जमाणे गन्धेसु रसेसु अदुस्समाणे । नो जीविय नो मरणाहिकखी आयाणपुत्ते वलया विमुक्के ॥ २२ ॥ ५५६ ॥ त्ति बेमि ॥ समो-
सरणज्झयणं वारहमं ॥

आहत्तहीयज्झयणे तेरहमे

आहत्तहीय तु पवेयइस्स नाणप्पकार पुरिसस्स जाय । सओ य धम्म असओ
असील सन्ति असन्ति करिस्सामि पाउ ॥ १ ॥ ५५७ ॥ अहो य राओ य
समुट्ठिएहिं तहागएहिं पडिलब्भ धम्म । समाहिमाघायमजोसयन्ता सत्थारमेवं
फरुस वयन्ति ॥ २ ॥ ५५८ ॥ विसोहियं ते अणुकाहयन्ते जे आयभावेण विया-
गरेजा । अट्ठाणिए होइ बहुगुणाण जे नाणसकाइ मुस वएजा ॥ ३ ॥ ५५९ ॥
जे यावि पुट्ठा पल्लिउच्चयन्ति आयाणमट्ठं खलु वच्चइत्ता । असाहुणो ते इह साहु-
माणी मायणि एस्सन्ति अणन्तघाय ॥ ४ ॥ ५६० ॥ जे कोहणे होइ जयट्ठभासी
विओसिय जे उ उदीरएजा । अन्धे व से दण्डपह गहाय अविओसिए धासइ
पावकम्मी ॥ ५ ॥ ५६१ ॥ जे विग्गहीए अजायभासी न से समे होइ अझञ्झ-
पत्ते । ओवायकारी य हिरीमणे य एगन्तदिट्ठी य अमाइरुवे ॥ ६ ॥ ५६२ ॥
से पेसले सुहुमे पुरिसजाए जच्चनिए चेव सुउज्जुयारे । बहु पि अणुसासिए जे
तहच्चा समे हु से होइ अझञ्झपत्ते ॥ ७ ॥ ५६३ ॥ जे यावि अप्प वसुम ति
मत्ता सखाय वाय अपरिक्ख कुजा । तवेण वाह सहिउ त्ति मत्ता अन्न जण पस्सइ
विम्बभूय ॥ ८ ॥ ५६४ ॥ एगन्तकूडेण उ से पलेइ न विज्जई मोणपयसि गोत्ते ।
जे माणणट्ठेण विउक्कसेजा वसुमन्नतरेण अवुज्झमाणे ॥ ९ ॥ ५६५ ॥ जे माहणे
खत्तियजायए वा तहुगगपुत्ते तह छेच्छई वा । जे पव्वईए परदत्तभोई गोत्ते न जे
थब्भइ माणवद्धे ॥ १० ॥ ५६६ ॥ न तस्स जाई व कुल व ताण नन्नत्थ विज्जा-
चरण सुचिण्ण । निक्खम्म से सेवइऽगारिकम्म न से पारए होइ विमोयणाए
॥ ११ ॥ ५६७ ॥ निक्किंचणे भिक्खु सुल्लहजीवी जे गारव होइ सिलोगकामी ।
आजीवमेय तु अवुज्झमाणो पुणो पुणो विप्परियासुवेन्ति ॥ १२ ॥ ५६८ ॥ जे
भासव भिक्खु सुसाहुवाई पडिहाणव होइ विसारए य । आगाढपन्ने सुविभावियप्पा
अन्नं जण पन्नया परिहवेजा ॥ १३ ॥ ५६९ ॥ एव न से होइ समाहिपत्ते जे
पन्नव भिक्खु विउक्कसेजा । अहवा वि जे लाहमयावलित्ते अन्न जण खिसइ बाल-
पन्ने ॥ १४ ॥ ५७० ॥ पन्नामय चेव तवोमय च निजामए गोयमय च भिक्खु ।

आजीवग चेव चउत्थमाहु से पण्डिए उत्तमपोगगळे से ॥ १५ ॥ ५७१ ॥ मयाई
 एयाई विगिच्च धीरा न ताणि सेवन्ति सुधीरधम्मा । ते सव्वगोत्तावगया महेसी
 उच्च अगोत्त च गतिं वयन्ति ॥ १६ ॥ ५७२ ॥ भिक्खू मुयच्चे तह दिट्ठधम्मे
 गाम च नगर च अणुप्पविस्सा । से एसण जाणमणैसण च अन्नस्स पाणस्स
 अणाणुगिद्धे ॥ १७ ॥ ५७३ ॥ अरइ रइ च अभिभूय भिक्खू वहूजणे वा तह
 एगचारी । एगन्तमोणेण वियागरेज्जा एगस्स जन्तो गइरागई य ॥ १८ ॥
 ॥ ५७४ ॥ सय समेच्चा अदुवा वि सोच्चा भासेज्ज धम्म हियय पयाण । जे गर-
 हिया सणियाणप्पओगा न ताणि सेवन्ति सुधीरधम्मा ॥ १९ ॥ ५७५ ॥ केसिंवि
 तक्काइ अबुज्ज भाव खुइ पि गच्छेज्ज असइहाणे । आउस्स कालाइयार वधाए
 लद्धाणुमाणे य परेसु अट्ठे ॥ २० ॥ ५७६ ॥ कम्म च छन्द च विगिच्च वीरे
 विणइज्ज ऊ सव्वउ आयभावं । रुवेहिं लुप्पन्ति भयावहेहिं विज्ज गहाया तसयाव-
 रेहिं ॥ २१ ॥ ५७७ ॥ न पूयण चेव सिलोयकामी पियमप्पिय कस्सइ नो
 करेज्जा । सव्वे अणट्ठे परिवज्जयन्ते अणाउले या अक्काइ भिक्खू ॥ २२ ॥
 ॥ ५७८ ॥ आहत्तहीय समुपेहमाणे सव्वेहिं पाणेहिं निहाय दण्ड । नो जीविय
 नो मरणाहिकखी परिव्वएज्जा वलया विमुक्के ॥ २३ ॥ ५७९ ॥ त्ति वेमि ॥
 आहत्तहीयज्जयण तेरहमं ॥

गन्धज्झयणे चोदहमे

गन्ध विहाय इह सिक्खमाणो उट्ठाय सुवम्भचेर वसेज्जा । ओवायकारी विणय
 सुसिक्खे जे छेय से विप्पमाय न कुज्जा ॥ १ ॥ ५८० ॥ जहा दियापोयमपत्तजायं
 सावासगा पविड मनमाण । तमचाइय तरुणमपत्तजाय ढक्काइ अव्वत्तगम हरेज्जा
 ॥ २ ॥ ५८१ ॥ एव तु सेह पि अपुट्ठधम्म निस्सारिय वुत्तिम मनमाणा । दियस्स
 छांय व अपत्तजाय हरिंसु ण पावधम्मा अणेगे ॥ ३ ॥ ५८२ ॥ ओसाणमिच्छे
 मणुए समाहिं अणोसिए णन्तकरिं ति नच्चा । ओभासमाणे दवियस्स वित्त न निकसे
 वहिया आसुपन्नो ॥ ४ ॥ ५८३ ॥ जे ठाणओ य सयणासणे य परक्कमे यावि
 सुमाहुजुते । समिइसु गुत्तीसु य आयपन्ने वियागरिं ते य पुढो वएज्जा ॥ ५ ॥ ५८४ ॥
 सद्दाणि सोच्चा अदु भेरवाणि अणासवे तेसु परिव्वएज्जा । निइ च भिक्खू न पमाय
 कुज्जा कहकह वा वितिगिच्छतिण्णे ॥ ६ ॥ ५८५ ॥ डहरेण वुट्ठेणऽणुसासिए उ
 राइणिण्णावे समव्वएण । सम्म तय थिरओ नाभिगच्छे निजन्ताए वावि अपारए
 से ॥ ७ ॥ ५८६ ॥ विउट्ठिएण समयणुसिट्ठे डहरेण वुट्ठेण उ चोइए य । अच्चुट्ठि-

याए घडदासिए वा अगारिण वा समयाणुसिट्ठे ॥ ८ ॥ ५८७ ॥ न तेसु कुज्जे न
 य पव्वहेज्जा न यावि किंची फरुस वएज्जा । तहा करिस्स ति पडिस्सुणेज्जा सेय खु
 मेयं न पमाय कुज्जा ॥ ९ ॥ ५८८ ॥ वणसि मूढस्स जहा अमूढा मग्गाणुसासन्ति
 हिय पयाण । तेणेव मज्झं इणमेव सेय ज मे बुहा समणुसासयन्ति ॥ १० ॥ ५८९ ॥
 अह तेण मूढेण अमूढगस्स कायव्व पूया सविसेसजुत्ता । एओवमं तत्थ
 उदाहु वीरे अणुगम्म अत्थ उवणेइ सम्म ॥ ११ ॥ ५९० ॥ नेया जहा अन्ध-
 कारसि राओ मग्ग न जाणाइ अपस्समाणे । से सूरियस्स अब्भुग्गमेण मग्ग
 वियाणाइ पगासियसि ॥ १२ ॥ ५९१ ॥ एवं तु सेहे वि अपुट्ठधम्मे धम्म न-
 जाणाइ अबुज्झमाणे । से कोविए जिणवयणेण पच्छा सरोदए पासइ चक्खुणेव
 ॥ १३ ॥ ५९२ ॥ उट्ठ अहे यं तिरियं दिसासु तसा य जे थावर जे य पाणा ।
 सया जए तेसु परिव्वएज्जा मणप्पओस अविकम्पमाणे ॥ १४ ॥ ५९३ ॥ कालेण
 पुच्छे समिय पयासु आइक्खमाणो दवियस्स वित्त । तं सोयकारी य पुढो पवेसे
 संखा इम केवलियं समाहिं ॥ १५ ॥ ५९४ ॥ अस्सि सुठिच्चा तिविहेण तायी
 एएसु या सन्ति निरोहमाहु । ते एवमक्खन्ति तिलोगदसी न भुजमेयन्ति पमाय-
 संगं ॥ १६ ॥ ५९५ ॥ निसम्म से भिक्खु समीहियट्ठ पडिभाणव होइ विसारए य ।
 आयाणअट्ठी वोदाणमोणं उवेच्च सुद्वेण उवेइ मोक्ख ॥ १७ ॥ ५९६ ॥ सखाइ
 धम्म च वियागरन्ति बुद्धा हु ते अन्तकरा भवन्ति । ते पारगा दोण्ह वि मोयणाए
 ससोधिय पण्हसुदाहरन्ति ॥ १८ ॥ ५९७ ॥ नो छाये नो वि य ल्लसएज्जा माण
 न सेवेज्ज पगासण च । न यावि पन्ने परिहास कुज्जा न याऽऽसियावाय वियागरेज्जा
 ॥ १९ ॥ ५९८ ॥ भूयाभिसकाइ दुगुच्छमाणे न निव्वहे मन्तपएण गोय । न
 किंचिमिच्छे मणुए पयासु असाहुधम्माणि न सवएज्जा ॥ २० ॥ ५९९ ॥ हास पि
 नो सधइ पावधम्मे ओए तहीय फरुस वियाणे । नो तुच्छए नो य विकथइज्जा
 अणाइले या अकसाइ भिक्खू ॥ २१ ॥ ६०० ॥ सकेज्ज याऽसकियभाव भिक्खु
 विभज्जवाय च वियागरेज्जा । भासादुय धम्मसमुट्ठिएहिं वियागरेज्जा समयासुपन्ने
 ॥ २२ ॥ ६०१ ॥ अणुगच्छमाणे वित्तह विजाणे तहा तहा साहु अकक्सेण । न
 कथई भास विहिंसइज्जा निरुद्धग वावि न दीहइज्जा ॥ २३ ॥ ६०२ ॥ समालवेज्जा
 पडिपुण्णभासी निसामिया समियाअट्ठसी । आणाइ सुद्ध वयण भिउज्जे अभिसधए
 पावविवेग भिक्खू ॥ २४ ॥ ६०३ ॥ अहाबुइयाइ सुसिक्खएज्जा जइज्जया नाइवेल
 वएज्जा । से दिट्ठिम दिट्ठि न ल्लसएज्जा से जाणइ भासिउ त समाहिं ॥ २५ ॥ ६०४ ॥
 अल्लसए नो पच्छन्नभासी नो सुत्तमत्थ च करेज्ज ताई । सत्थारभत्ती अणुवीइ वाय

॥ २० ॥ ६२६ ॥ अणुत्तरे य ठाणे से कासवेण पवेइए । जं किच्चा निव्वुडा एगे
 निहं पावन्ति पण्डिया ॥ २१ ॥ ६२७ ॥ पण्डिए वीरिय लद्ध निग्घायाय पवत्तं
 धुणे पुव्वकडं कम्मं नवं वा वि न कुव्वई ॥ २२ ॥ ६२८ ॥ न कुव्वई महावीरे
 अणुपुव्वकडं रय । रयसा समुहीभूया कम्म हेच्चाण ज मय ॥ २३ ॥ ६२९ ॥ ज
 मय सव्वसाहूण तं मयं सल्लगतण । साहइत्ताण त तिण्णा देवा वा अभविंस्स ते
 ॥ २४ ॥ ६३० ॥ अभविंस्स पुरा धीरा आगमिस्सा वि सुव्वया । दुन्निवोहस्स मग्गस्स
 अन्त पाउकरा तिण्णे ॥ २५ ॥ ६३१ ॥ ति वेमि ॥ आयाणियज्झयणं पण्णरहमं ॥

गाहज्झयणे सोळसमे

अहाह भगव—एवं से दन्ते दविए वोसट्टकाए ति वच्चे माहणे ति वा १ समणे
 ति वा २ भिक्खु ति वा ३ निग्गन्थे ति वा ४ । पडिआह—भन्ते कह तु दन्ते
 दविए वोसट्टकाए ति वच्चे माहणे ति वा समणे ति वा भिक्खु ति वा निग्गन्थे ति
 वा । त नो वूहिं महामुणी ॥ इति विरए सव्वपावकम्मोहिं पिज्जदोसकलह० अब्भ-
 क्खान० पैसुज्ज० परपरिवाय० अरइरइ० मायामोस० मिच्छादसणसल्लविरए समिए
 सहिए सया जए नो कुज्जे नो माणी माहणे ति वच्चे ॥ १ ॥ ६३२ ॥ एत्थ वि
 समणे अनिस्सिए अणियाणे आयाणं च अइवाय च मुसावाय च वहिद्धं च कोह च
 माणं च माय च लोह च पिज्ज च दोस च इच्चेव जमो जओ आयाण अप्पणो
 पद्दोसहेऊ तओ तओ आयाणाओ पुव्व पडिविरए पाणाइवाया सिआ दन्ते दविए
 वोसट्टकाए समणे ति वच्चे ॥ २ ॥ ६३३ ॥ एत्थ वि भिक्खु अणुत्तए विणीए नामए
 दन्ते दविए वोसट्टकाए सविधुणीय विरुवरुवे परीसहोवसग्गे अज्झप्पजोगसुद्धादाणे
 उवट्टिए ठिअप्पा सखाए परदत्तभोई भिक्खु ति वच्चे ॥ ३ ॥ ६३४ ॥ एत्थ वि
 निग्गन्थे एगे एगविऊ बुद्धे सल्लिजसोए सुसजए सुसमिए सुसामाइए आयवायपत्ते
 विऊ दुहओ वि सोयपल्लिज्जे णो पूयणसक्कारलामट्ठी धम्मट्ठी धम्मविऊ नियाग
 पडिवज्जे समिय चरे दन्ते दविए वोसट्टकाए निग्गन्थे ति वच्चे ॥ ४ ॥ ६३५ ॥
 से एवमेव जाणह जमह भयन्तारो ॥ ति वेमि ॥ गाहज्झयणं सोळसमं,
 पढमे सुयक्खन्धे समत्ते ॥

पोण्डरियज्झयणे पढमे

सुयं मे आउस तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खल्ल पोण्डरीए नामज्झयणे

तस्स ण अयमट्ठे पज्जेते । से जहानामए पुक्खरिणी सिया बहुउदगा बहुसेया बहु-
 पुक्खला लद्धा पुण्डरीकिणी पासादिया दरिसणिया अभिरूवा पडिरूवा । तीसे ण
 पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं वहवे पउमवरपोण्डरीया बुइया, अणु-
 पुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला वण्णमन्ता गन्धमन्ता रसमन्ता फासमन्ता पासादिया
 दरिसणिया अभिरूवा पडिरूवा । तीसे ण पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे मह
 पउमवरपोण्डरीए बुइए, अणुपुव्वुट्ठिए ऊसिए रुइले वण्णमन्ते गन्धमन्ते रसमन्ते
 फाममन्ते पासादीए जाव पडिरूवे । सव्वावन्ति च ण तीसे पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ
 देसे देसे तहिं तहिं वहवे पउमवरपोण्डरीया बुइया अणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला
 जाव पडिरूवा । सव्वावन्ति च ण तीसे ण पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे मह
 पउमवरपोण्डरीए बुइए अणुपुव्वुट्ठिए जाव पडिरूवे ॥ १ ॥ ६३६ ॥ अह पुरिसे
 पुरित्थिमाओ दिसाओ आगम्म त पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिचा पासइ
 त मह एग पउमवरपोण्डरीयं अणुपुव्वुट्ठिय ऊसिय जाव पडिरूव । तए ण से पुरिसे
 एव वयासी-अहमसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पण्डिए वियत्ते मेहावी अवाले मग्गट्ठे
 मग्गविऊ मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू । अहमेय पउमवरपोण्डरीय उज्झिक्खिस्सामि ति
 कट्ठु इइ बुया से पुरिसे अभिक्कमेइ त पुक्खरिणिं । जाव जाव च ण अभिक्कमेइ
 ताव ताव च ण महन्ते उदए महन्ते सेए पहीणे तीर अपत्ते पउमवरपोण्डरीय
 नो हव्वाए नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयसि निसण्णे पढमे पुरिसजाए
 ॥ २ ॥ ६३७ ॥ अहावरे दोच्चे पुरिसजाए । अह पुरिसे दक्खिणाओ दिसाओ
 आगम्म त पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिचा पासइ त मह एग पउमवर-
 पोण्डरीय अणुपुव्वुट्ठिय पासादीय जाव पडिरूव । त च एत्थ एगं पुरिसजाय पासइ
 पहीणतीरं अपत्तपउमवरपोण्डरीय नो हव्वाए नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयसि
 निसण्ण । तए ण से पुरिसे त पुरिस एव वयासी-अहो णं इमे पुरिसे अखेयन्ने
 अकुसले अपण्डिए अवियत्ते अमेहावी बाले नो मग्गट्ठ नो मग्गविऊ नो मग्गस्स
 गइपरिक्कमन्नू ज ण एस पुरिसे । अहमसि खेयन्ने कुसले जाव पउमवरपोण्डरीय
 उज्झिक्खिस्सामि । नो य खलु एय पउमवरपोण्डरीयं एव उज्झिक्खेयव्व जहा ण एस
 पुरिसे मजे । अहमसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पण्डिए वियत्ते मेहावी अवाले मग्गट्ठे
 मग्गविऊ मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू, अहमेय पउमवरपोण्डरीयं उज्झिक्खिस्सामि ति कट्ठु
 इइ बुया से पुरिसे अभिक्कमे त पुक्खरिणिं । जाव जाव च ण अभिक्कमेइ ताव ताव
 च ण महन्ते उदए महन्ते सेए पहीणे तीर अपत्ते पउमवरपोण्डरीय नो हव्वाए
 नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयसि निसण्णे दोच्चे पुरिसजाए ॥ ३ ॥ ६३८ ॥

अहावरे तच्चे पुरिसजाए । अह पुरिसे पच्चत्थिमाओ दिसाओ आगम्म त पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासइ त एग महं पउमवरपोण्डरीय अणुपुव्वुट्ठिय जाव पडिरूव । ते तत्थ दोणिण पुरिसजाए पासइ पहीणे तीर अपत्ते पउमवरपोण्डरीयं नो हव्वाए नो पाराए जाव सेयसि निसण्णे । तए ण से पुरिसे एव वयासी-अहो ण इमे पुरिसा अखेयन्ना अकुसला अपण्डिया अवियत्ता अमेहावी वाला नो मग्गट्ठा नो मग्गविऊ नो मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू ज ण एए पुरिसा एव मन्ने-अम्हे एयं पउमवरपोण्डरीयं उन्निक्खिस्सामो नो य खलु एय पउमवरपोण्डरीय एवं उन्निक्खेयव्व जहा णं एए पुरिसा मन्ने । अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पण्डिए वियत्ते मेहावी अवाळे मग्गट्ठे मग्गविऊ मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू अहमेय पउमवरपोण्डरीय उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्ठु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं । जावं जाव च ण अभिक्कमे ताव ताव च णं महन्ते उदए महन्ते सेए जाव अन्तरा पुक्खरिणीए सेयसि निसण्णे तच्चे पुरिसजाए ॥ ४ ॥ ६३९ ॥ अहावरे चउत्थे पुरिसजाए । अह पुरिसे उत्तराओ दिसाओ आगम्म त पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासइ त महं एग पउमवरपोण्डरीयं अणुपुव्वुट्ठिय जाव पडिरूव । ते तत्थ तिणिण पुरिसजाए पासइ पहीणे तीर अपत्ते जाव सेयसि निसण्णे । तए णं से पुरिसे एवं वयासी-अहो ण इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव नो मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू ज णं एए पुरिसा एव मन्ने-अम्हे एय पउमवरपोण्डरीय उन्निक्खिस्सामो नो य खलु एयं पउमवरपोण्डरीय एव उन्निक्खेयव्वं जहा ण एए पुरिसा मन्ने । अहमंसि पुरिसे खेयन्ने जाव मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू, अहमेय पउमवरपोण्डरीय एवं उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्ठु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं । जावं जाव च ण अभिक्कमे ताव ताव च ण महन्ते उदए महन्ते सेए जाव निसण्णे चउत्थे पुरिसजाए ॥ ५ ॥ ६४० ॥ अह भिक्खू ल्हहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव गइपरिक्कमन्नू अन्नयराओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगम्म त पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासइ त मह एग पउमवरपोण्डरीय जाव पडिरूव । ते तत्थ चत्तारि पुरिसजाए पासइ पहीणे तीर अपत्ते जाव पउमवरपोण्डरीय नो हव्वाए नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयसि निसण्णे । तए णं से भिक्खू एव वयासी-अहो ण इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव नो मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू ज एए पुरिसा एव मन्ने अम्हे एय पउमवरपोण्डरीय उन्निक्खिस्सामो, नो य खलु एय पउमवरपोण्डरीय एव उन्निक्खेयव्वं जहा णं एए पुरिसा मन्ने । अहमंसि भिक्खू ल्हहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव गइपरिक्कमन्नू अहमेय पउमवरपोण्डरीय उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्ठु इति वुच्चा से भिक्खू

(रायवण्णओ जहा ओववाइए) जाव पसतडिम्बडमर रज्ज पसाहेमाणे विहरइ । तस्स णं रज्जो परिस्ता भवइ उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता इक्खागाइ इक्खागाइ-पुत्ता नाया नायपुत्ता कोरव्वा कोरव्वपुत्ता भट्ठा भट्टपुत्ता माहणा माहणपुत्ता लेच्छइ लेच्छइपुत्ता पसत्थारो पसत्थपुत्ता सेणावई सेणावइपुत्ता । तेसिं च ण एगइए सद्धी भवइ काम त समणा वा माहणा वा सपहारिंसु गमणाए । तत्थ अन्नयरेणं धम्मणे पज्जतारो वय इमेणं धम्मणे पन्नवइस्सामो से एवमायाणह भयतारो जहा मए एस धम्मो सुयक्खाए सुपज्जते भवइ । त जहा-उड्ड पायतला अहे केसग्गमत्थया तिरिय तयपरियते जीवे एस आयापज्जवे कसिणे एस जीवे जीवइ, एस मए नो जीवइ, सरीरे धरमाणे धरइ विणट्टम्मि य नो धरइ । एय त जीविय भवइ, आदहणाए परेहिं निज्जइ, अगणिञ्जामिए सरीरे कन्नोयवण्णाणि अट्ठीणि भवंति, आसदीपन्नमा पुरिस्ता गाम पचागच्छति, एव असते असविज्जमाणे । जेसिं तं असते असविज्जमाणे तेसिं त सुयक्खाय भवइ-अन्नो भवइ जीवो अन्नं सरीर, तम्हा ते एवं नो विपडिवे-दति-अयमाउसो आया बीहे ति वा हस्से ति वा परिमण्डले ति वा वट्टे ति वा तसे ति वा चउरसे ति वा आयए ति वा छलंसिए ति वा अट्टसे ति वा किण्हे ति वा नीले ति वा लोहियहालिदे ति वा सुक्खिणे ति वा सुब्भिगधे ति वा दुब्भिगधे ति वा तित्ते ति वा कडुए ति वा कसाए ति वा अम्बिळे ति वा महुरे ति वा कक्खडे ति वा मउए ति वा गुरुए ति वा लहुए ति वा सीए ति वा उसिणे ति वा निद्धे ति वा लुक्खे ति वा । एव असते असविज्जमाणे । जेसिं तं सुयक्खाय भवइ-अन्नो जीवो अन्नं सरीर, तम्हा ते नो एवं उवलम्भति । से जहानामए-केइ पुरिसे कोसीओ असिं अभिनिव्वट्ठिता ण उवदसेज्जा अयमाउसो असी अय कोसी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे अभिनिव्वट्ठिता ण उवदसेत्तारो अयमाउसो आया इयं सरीर । से जहानामए केइ पुरिसे मुञ्जाओ इसिय अभिनिव्वट्ठिता ण उवदसेज्जा अयमाउसो मुञ्जे इय इसियं, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो आया इय सरीर । से जहानामए-केइ पुरिसे मसाओ अट्ठिं अभिनिव्वट्ठिता णं उवदसेज्जा अयमाउसो मसे अय अट्ठी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो आया इयं सरीर । से जहानामए-केइ पुरिसे करयलाओ आमलकं अभिनिव्वट्ठिता ण उवद-सेज्जा अयमाउसो करयले अयं आमलए, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अय-माउसो आया इय सरीर । से जहानामए-केइ पुरिसे दहीओ नवणीयं अभिनिव्व-ट्ठिता ण उवदसेज्जा अयमाउसो नवणीयं अय तु दही, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे जाव सरीर । -से जहानामए-केइ पुरिसे तिलेहितो तेलं अभिनिव्वट्ठिता ण उवदसेज्जा

अयमाउसो तेऽ अयं पिण्णाए, एवमेव जाव सरीरं । से जहानामए-केइ पुरिसे इक्कओ रोयरस अभिनिव्वट्ठिता ण उवदसेज्जा अयमाउसो गोयरसे अय छोए, एवमेव जाव सरीर । से जहानामए-फेट पुरिसे वरणीओ अग्गि अभिनिव्वट्ठिता ण उवदसेज्जा अयमाउसो अरणी अय अग्गी, एवमेव जाव सरीरं । एव असते असविज्जमाणे । जेमिं त सुयम्माय भवइ त जहा-अगे जीवो अन्न सरीरं । तम्हा ते मिच्छा ॥ से हता त हणह खगह छगह टहह पयह आलम्पह विलम्पह सह-सफारेह निपरामुगह, एयावया जीवे नत्थि परल्लोए । ते नो एव विप्पज्जिवेदंति, त जहा-किरिया इ वा अकिरिया इ वा उक्कडे इ वा दुक्कडे इ वा क्कण्णे इ वा पावए इ वा साहु इ वा अगाहु इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा निरए इ वा अणिरए इ वा । एव ते विक्खव्वेहिं कम्मसमारभेहिं विक्खव्वयाइ कामभोगाइ समारभन्ति भोयणाए ॥ एवं एगे पागब्भिया निक्खम्म मामग धम्म पज्जेति । त महत्तमाणा त पत्तियमाणा त रोएमाणा साहु सुयम्माए समणे त्ति वा माहणे त्ति वा काम खलु आउसो तुम पूययामि, त जहा-अमणेण वा पाणेण वा साइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्मवलेण वा पायपुञ्छणेण वा । तत्थेगे पूयणाए समा-उट्ठितु तत्थेगे पूयणाए निक्काइसु ॥ पुच्चमेव तेमिं नाय भवइ-नमणा भविस्सामो अणगारा अकिंवाणा अपुत्ता अपनू परदत्तभोइओ भिक्खुओ पाव कम्म नो करि-स्तामो समुट्ठाए । ते अप्पणा अप्पडिविरया भवति, नयमाइयति अगे वि आइयावेति अन्न पि आययत समणुजाणति एवमेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया पिद्धा गद्धिया अज्झोववता लद्धा रागदोसवमट्ठा । ते नो अप्पाण समुच्छेदंति ते नो पर समुच्छे-दंति ते नो अजाइ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ तमुच्छेदंति, पहीणा पुच्चसज्जोग आयरिय मग्ग असपत्ता इति ते नो हव्वाए नो पाराए अतरा कामभोगेसु विसण्णा । इति पढमे पुरिसजाए तज्जीवतच्छरीरए त्ति आहिए ॥ ९ ॥ ६४८ ॥

अहावरे दोवे पुरिसजाए पदमहब्भूइए त्ति आहिज्जइ । इह खलु पाइण वा ६ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति अणुपुव्वेण लोय उववत्ता, त जहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे एअ जाव दुक्खा वेगे । तेमिं च णं मह एगे राया भवइ महया एअ चैव निरवसेस जाव सेणावइपुत्ता । तेमिं च ण एगइए सट्ठी भवति काम त नमणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए । तत्थ अन्नयरेणं धम्मेण पत्तारो वय इमेण धम्मेणं पज्जइस्सामो से एवमायाणह भयन्तारो जहा मए एम धम्मे सुअक्खाए उपज्जते भवइ । इह खलु पयमहब्भूया जेहिं नो पिज्जइ किरिय त्ति वा अकिरिय त्ति वा सुवडे त्ति वा दुवडे त्ति वा क्कण्णे त्ति वा पावए त्ति वा साहु त्ति वा असाहु त्ति

चा सिद्धि ति वाअसिद्धि ति वा निरए ति वा अनिरए ति वा अवि अन्तसो
तणमायमवि ॥ त च पिहुदेसेणं पुढोभूयसमवाय जाणेज्जा । तं जहा पुढवी एगे
महब्भूए, आऊ दुच्चे महब्भूए, तेऊ तच्चे महब्भूए, वाऊ चउत्थे महब्भूए, आगासे
पच्चमे महब्भूए । इच्चेए पच्च महब्भूया अनिम्मिया अनिम्माविया अकडा नो
कित्तिमा नो कडगा अणाइया अणिहणा अवञ्छा अपुरोहिया सतता सासया
आयछट्ठा । पुण एगे एवमाहु—सओ नत्थि विणासो असओ नत्थि सभवो । एयावया
व जीवकाए एयावया व अत्थिकाए एयावया व सव्वलोए, एय मुह लोगस्स करण-
याए, अवि अन्तसो तणमायमवि । से किण किणावेमाणे हण घायमाणे पयं पया-
वेमाणे अवि अन्तसो पुरिसमवि कीणित्ता घायइत्ता एत्थ पि जाणाहि नत्थित्थ दोसो ।
ते नो एवं विप्पडिवेदंति । त जहा—किरिया इ वा जाव अनिरए इ वा । एव ते
विरूवरुवेहिं कम्मसमारभेहिं विरूवरुवाइ कामभोगाईं समारभति भोयणाए । एव-
मेव ते अणारिया विप्पडिवन्ना त सद्दहमाणा त पत्तियमाणा जाव ते नो हव्वाए
नो पाराए अतरा कामभोगेषु विसण्णा । दोच्चे पुरिसजाए पच्चमहब्भूइए ति
आहिए ॥ १० ॥ ६४५ ॥ अहावरे तच्चे पुरिसजाए ईसरकारणिए ति आहिज्जड ।
इह खलु पाईणं वा ६ सतेगइया मणुस्सा भवति अणुपुव्वेणं लोय उववन्ना । त
जहा—आरिया वेगे जाव तेसिं च ण महते एगे राया भवइ जाव सेणावइपुत्ता ।
तेसिं च ण एगइए सद्धीं भवइ, काम त समणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए
जाव जहा मए एस धम्मो सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ । इह खलु धम्मा पुरिसादिया
पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससभूया पुरिसपज्जोइया पुरिसमभिसमन्नागया
पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति । से जहानामए—गण्डे सिया सरीरे जाए सरीरे सवुद्धे
सरीरे अभिसमन्नागए सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा पुरिसादिया जाव
पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति । से जहानामए—अरईं सिया सरीरे जाया सरीरे
सवुद्धा सरीरे अभिसमन्नागया सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि पुरि-
सादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति से जहानामए—वम्मिए सिया पुढविजाए
पुढविसवुद्धे पुढविअभिसमन्नागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि
पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति, से जहानामए—रुक्खे सिया पुढविजाए
पुढविसवुद्धे पुढविअभिसमन्नागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि
पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति । से जहानामए—पुक्खारिणी सिया
पुढविजाया जाव पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया जाव
पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति । से जहानामए—उदगपुक्खले सिया उदगजाए जाव

पुरिसजाए नियइवाइए ति आहिए ॥ इच्चेए चत्तारि पुरिसजाया नाणापन्ना नाना-
छंदा नाणासीला नाणादिट्ठी नाणाख्खं नाणारम्भा नाणाअज्झवसाणसंजुत्ता पहीण-
पुव्वसजोगा आरिय मग्ग असपत्ता इति ते नो हव्वाए नो पाराए अतरा काम-
भोगेसु विसण्णा ॥ १२ ॥ ६४७ ॥ से वेमि पाईण वा ६ सन्तेगइया मणुस्सा
भवन्ति । त जहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे नीयागोया वेगे
कायमन्ता वेगे हस्समन्ता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे ।
तेसिं च ण खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाणि भवति, तं जहा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा ।
तेसिं च ण जणजाणवयाइ परिग्गहियाइ भवन्ति, तं जहा अप्पयरा भुज्जयरा वा ।
तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया । सओ वा वि
एगे नायओ (अणायओ) य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया ।
असओ वा वि एगे नायओ (अणायओ) य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खाय-
रियाए समुट्ठिया । [जे ते सओ वा असओ वा नायओ य अणायओ य उवगरण
च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया] पुव्वमेव तेहिं नाय भवइ । त जहा-
इह खलु पुरिसे अन्नमन्न ममट्ठाए एव विप्पडिबेदेंति । तं जहा-खेत्त मे वत्थू मे
हिरण्ण मे सुवण्ण मे धण मे धन्न मे कस मे दूस् मे विपुलधणकणगरयणमणिमो-
त्तियसखसिलप्पवालरत्तरयणसतसारसावण्य मे । सद्दा मे ख्वा मे गंधा मे रसा मे
फासा मे । एए खलु मे कामभोगा अहमवि एएसिं । से मेहावी पुव्वामेव अप्पणो
एव समभिजाणेज्जा । त जहा-इह खलु मम अन्नयरे दुक्खे रोगायके समुप्पजेज्जा
अणिट्ठे अकते अप्पिए असुमे अमणुजे अमणामे दुक्खे नो सुहे । से हता भयतारो
कामभोगाइ मम अन्नयर दुक्खं रोगायक परियाइयह अणिट्ठ अकतं अप्पिय असुम
अमणुन्न अमणाम दुक्ख नो सुह । ता अह दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा
तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा इमाओ मे अन्नयराओ दुक्खाओ रोगायकाओ
पडिमोयह अणिट्ठाओ अकताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुजाओ अमणामाओ
दुक्खाओ नो सुहाओ । एवमेव नो लद्धपुव्व भवइ । इह खलु कामभोगा नो ताणाए
वा नो सरणाए वा । पुरिसे वा एगया पुव्विं कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा
एगया पुव्विं पुरिस विप्पजहन्ति । अने खलु कामभोगा अन्नो अहमसि । से किमंग
पुण वय अन्नमजेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो । इति सखाए णं वय च कामभोगेहिं
विप्पजहिस्सामो । से मेहावी जाणेज्जा बहिरङ्गमेय इणमेव उवणीययराग । त जहा-
माया मे पिया मे भाया मे भगिणी मे भज्जा मे पुत्ता मे धूया मे पेसा मे नत्ता मे
सुण्हा मे सुहा मे पिया मे सहा मे सयणसगयसयुया मे । एए खलु मम नायओ

अहमपि एणमि । एवं से मेहावी पुच्चागेव अप्पगा एवं समभिजाणेज्जा । इह खलु
 नम अन्यरे दुस्से रोगायकं समुप्पजेज्जा अणिट्ठे जाव दुस्से नो सुहे । से हत्ता
 भयंतारो नायओ इमं मम अन्यरं दुस्सं रोगायकं परियाडयह् अणिट्ठे जाव नो
 सुह । ता अह् दुस्सामि वा सोयामि वा जाव परितप्पामि वा, इमाओ मे अन्य-
 राओ दुस्संजाओ रोगायकाओ परिमोएह् अणिट्ठाओ जाव नो सुहाओ, एवमेव नो
 रुद्धपुच्चं भवड । तंति वा वि भयंताराणं मम नाययाणं अन्यरे दुस्से रोगायके
 समुप्पजेज्जा अणिट्ठे जाव नो सुहे, से हत्ता अहमेणमि भयंताराणं नाययाणं इमं
 अन्यरं दुस्सं रोगायकं परियाडयामि अणिट्ठे जाव नो सुहे, मा मे दुस्सत्तु वा
 जाव मा मे परितप्पत्तु वा, इमाओ ण अन्यराओ दुस्संजाओ रोगायकाओ परिमो-
 एमि अणिट्ठाओ जाव नो सुहाओ, एवमेव नो रुद्धपुच्चं भवड । अणस्स दुस्स
 अणो न परियाडयइ अजेण ऋ अज्जो नो पडिस्सवेदेड पत्तेय जायइ पत्तेय मरड
 पत्तेय चयइ पत्तेय उववज्जइ पत्तेय झंझा पत्तेय सज्जा पत्तेय मत्ता एव त्रिलू वेयणा ।
 इड गलु नाडसजोगा नो ताणाए वा नो मरणाए वा । पुरिसे वा एगया पुब्बि नाड-
 सजोगे विप्पजहइ, नाडसजोगा वा एगया पुब्बि पुरिस्स विप्पजहन्ति, अजे गलु
 नाडसजोगा अज्जो अहन्ति, से किमग पुण वय अनमनेहिं नाडसजोगेहिं सुच्छामो,
 इति सग्गाए ण वय नाडसजोगं विप्पजहिस्सामो । से मेहावी जाणेज्जा बहिराभेयं,
 इणमेव उवणीययराण । त जहा-हत्ता मे पाया मे वाहा मे उरु मे उयर मे सीसं
 मे सील मे आऊ मे वल मे वणो मे तया मे छाया मे मोयं मे चक्खु मे घाण
 मे जिह्मा मे फाला मे ममाडज्जइ, वयाउ पडिजूरइ । त जहा-आउओ वलाओ
 वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ जाव फामाओ । सुसपिओ सयी विसधीमवइ,
 वलियतरगे गाए भवइ, किंहा केमा पलिया भवन्ति । तं जहा-अ पि य इम
 मरीरग उरालं आहारोवडय एय पि य अणुपुच्चेण विप्पजहिस्सव भविस्सइ । एय
 मग्गाए से भिक्खु भिक्खायारियाए समुट्ठिए इहओ लोग जाणेज्जा, त जहा-जीवा
 चेव अजीवा चेइ, तमा चेइ थावरा चेव ॥ १३ ॥ ६४८ ॥ इह खलु गारत्था
 नारम्मा सपरिग्गहा, सतेगइया नमणा माहणा वि नारम्मा सपरिग्गहा, जे इमे
 तसा थावरा पाणा ते मय ममारभन्ति अजेण वि ममारम्मावेति अज पि
 ममारभत समणुजाणन्ति । इह खलु गारत्था नारम्मा सपरिग्गहा, सतेगइया
 नमणा माहणा वि नारम्मा सपरिग्गहा, जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता
 वा ते सयं परिणिहन्ति अजेण वि परिणिह्णावेन्ति अज पि परिणिह्णतं समणु-
 जाणति । इह खलु गारत्था नारम्मा सपरिग्गहा, सतेगइया नमणा माहणा वि

सारम्भा सपरिग्गहा, अहं खलु अणारम्भे अपरिग्गहे, जे खलु गारत्था सारम्भा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारम्भा सपरिग्गहा, एएसिं चेव निस्साए बम्भचेरवास वसिस्सामो । कस्स ण तं हेउ^१ जहा पुव्व तहा अवर जहा अवर तहा पुव्व, अञ्जु एए अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव । जे खलु गारत्था सारम्भा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारम्भा सपरिग्गहा, दुहओ पावाइ कुव्वति इति सखाए दोहि वि अतेहिं अदिस्समाणो इति भिक्खू रीएज्जा । से बेमि पाईण वा ६ जाव एव से परिन्नायकम्मे, एव से ववेयकम्मे, एवं से विअतकारए भवइ त्ति-मक्खाय ॥ १४ ॥ ६४९ ॥ तत्थ खलु भगवया छज्जीवनिकायहेऊ पञ्चत्ता । त जहा-पुढवीकाए जाव तसकाए । से जहानामए-सम असाय दण्डेण वा मुट्ठीण वा लेल्लण वा कवालेण वा आउट्टिजमाणस्स वा हम्ममाणस्स वा तज्जिजमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परियाविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उट्ठविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेमि, इच्चेव जाण सव्वे जीवा सव्वे भूया सव्वे पाणा सव्वे सत्ता दण्डेण वा जाव कवालेण वा आउट्टिजमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिजमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परियाविज्जमाणा वा किला-मिज्जमाणा वा उट्ठविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेति । एवं नच्चा सव्वे पाणा जाव सत्ता न हतव्वा न अज्जावेयव्वा न परिधेयव्वा न परितावेयव्वा न उट्ठवेयव्वा । से बेमि जे य अईया जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहता भगवता सव्वे ते एवमाइक्खंति एव भासति एवं पज्ज्वंति एव परूवंति सव्वे पाणा जाव सत्ता न हतव्वा न परिधेयव्वा न अज्जा-वेयव्वा न परितावेयव्वा न उट्ठवेयव्वा । एस धम्मे धुवे नीइए सासए समिच्च लोग खेयन्नेहिं पवेइए । एव से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ जाव विरए परिग्गहाओ नो दंतपक्खालणेण दते पक्खालेज्जा नो अज्जण नो वमण नो धूवणे नो तं परिआवि-एज्जा ॥ से भिक्खू अकिरिए अल्लसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसते परि-निव्वुडे नो आसस पुरओ करेज्जा इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण वा विन्नाएण वा इमेण वा सुचरियतवनियमवम्भचेरवासेण इमेण वा जायामायावुत्तिएण धम्मेण इओ चुए पेच्चा देवे सिया कामभोगाण वसवत्ती सिद्धे वा अदुक्खमसुभे एत्थ वि सिया एत्थ वि नो सिया । से भिक्खू सहेहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं अमुच्छिए विरए कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेच्चाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवायाओ

અરહરંઓ માયામોમાઓ મિચ્છાદમણમગઓ ઇતિ સે મહઓ આયાણાઓ ઉવસતે ઉવટ્ટિએ પઠિવિરે સે મિન્નુ । જે ઇમે તમયાવરા પાણા ભગતિ તે નો સય સમા-
રમ્મહ નો ઘોર્હિં મમારમ્માવેહ અને સમારમ્મતે પિ ન મમણુજાણહ ઇતિ સે મહઓ આયાણાઓ ઉવસતે ઉવટ્ટિએ પઠિવિરે સે મિન્નુ જે ઇમે સમભોગા સચિત્તા વા
અચિત્તા વા તે ણો સય પરિગિણ્હનિ ણો અણ્ણેણ પરિગિણ્હાવેંનિ અન્ન પરિગિણ્હંતપિ ન
સમણુજાગતિ ઇતિ સે મહઓ આયાણાઓ ઉવસતે ઉવટ્ટિએ પઠિવિરેઓ ને મિન્નુ ।
જ પિ ય દ્વમ સપરાડય કમ્મ કિજ્ઞહ, નો ત સય કરેહ નો અપ્પાણં કારવેહ અન્ન
પિ કરંત ન મમણુજાણહ, ઇતિ સે મહઓ આયાણાઓ ઉવસતે ઉવટ્ટિએ પઠિવિરે ।
સે મિન્નુ જાણેજ્ઞા અમર્ણ વા ૪ અસ્સિં પઠિયાણે ઈર્ણં સાહમ્મિય સમુદ્ધિસ્મ પાણાહ
ભૂયાહ જીવાહં મત્તાહ સમારમ્મ સમુદ્ધિસ્મ કીય પામિચ અચ્છિજ્ઞ અનિમદ્ધ અમિહટ
આદ્ધુદ્ધેસિય ત ચેડય સિયા ત નો મય મુચ્છહ નો અણેગ મુજાવેહ અન્ન પિ મુચ્છત
ન સમણુજાણહ, ઇતિ સે મહઓ આયાણાઓ ઉવસતે ઉવટ્ટિએ પઠિવિરે સે મિન્નુ
અહ પુણ એવ જાણેજ્ઞા ત વિજ્ઞહ તેંસિં પરફળે । (જસ્મટ્ટા તે વેડય સિયા તજ્ઞા
અપ્પગો પુત્તાઙ્ગદ્વાએ જાવ આણેસાણે પુટો પહેણાણે નામાસાણે પાયરામાણે સનિહિસ-
નિચઓ કિજ્ઞહ ઇહ એણિં માણવાણ મોયગાણે) તત્થ મિન્નુ પરફલ પરિનિટ્ટિયસુ-
ગ્ગમુપ્પાયણેમણામુદ્ધ સત્થાદેય સત્થપરિણામિયં અવિહિંસિય એસિય વેસિય સામુદાણિયં
પત્તમસણ કારણદ્વા પમાણુજત્ત અન્નઙ્ગોવજ્ઞવળલેવણભૂય સજમજાયામાયાવત્તિયં
ત્રિલમિવ પન્નમૂળેણ અપ્પાણેણ આહાર આહારેજ્ઞા અન્ન અન્નકાલે પાણ પાણકાલે
વત્થ વત્થકાલે ટેગ ટેગકાલે સયણ સયણકાલે । સે મિન્નુ માયન્ને અન્નચર દિસ
અણુદિસ વા પઠિવેને ધમ્મ આઠક્ખે તિમ્મ કિટ્ટે ઉવટ્ટિએસુ વા અણુવટ્ટિએસુ વા
સુસ્સુસમાણેસુ પવેયણે, સનિવિરહ ઉવસમ નિવ્વા સોયવિય અજ્ઞવિય મહવિય
લાઘવિય અણ્ણવાડય સવ્વેસિં પાણાણ સવ્વેસિં મૂયાણ જાવ સત્તાણ અણ્ણવાહ કિટ્ટે
ધમ્મ । સે મિન્નુ ધમ્મ કિટ્ટમાણે નો અન્નસ્સ હેહ ધમ્મમાહક્ખેજ્ઞા, નો પાણસ્સ
હેહ ધમ્મમાહક્ખેજ્ઞા, નો વત્થસ્સ હેહ ધમ્મમાહક્ખેજ્ઞા, નો ટેગસ્સ હેહ ધમ્મ-
માહક્ખેજ્ઞા, નો સયણસ્સ હેહ ધમ્મમાહક્ખેજ્ઞા, નો અણેસિં વિત્તવલ્લવાણ કામમો-
ગાણ હેહ ધમ્મમાહક્ખેજ્ઞા, અગિલાણે ધમ્મમાહક્ખેજ્ઞા, નન્નત્થ કમ્મનિજ્જરદ્વાએ
ધમ્મમાહક્ખેજ્ઞા । ઇહ સલ્લુ તસ્સ મિક્ખુસ્સ અતિણે ધમ્મ સોચા નિસમ્મ ઉદ્ધા-
ણેણ ઉદ્ધાય વીરા અસ્સિં ધમ્મે સમુદ્ધિયા । જે તસ્સ મિક્ખુસ્સ અતિણે ધમ્મ સોચા
નિસમ્મ સમ્મ ઉદ્ધાણેણ ઉદ્ધાય વીરા અસ્સિં ધમ્મે સમુદ્ધિયા તે એવં સવ્વોવગયા તે
એવ સવ્વોવરયા તે એવ સવ્વોવસતા તે એવ સવ્વત્તાણે પરિણિવ્વુદે તિ વેમ્મિ । એવં

से भिक्खू धम्मट्ठी धम्मविऊ नियागपडिवन्ने से जहेय बुड्य अदुवा पत्ते पउमवर-
पोण्डरीय अदुवा अपत्ते पउमवरपोण्डरीय, एव से भिक्खू परिन्नायकम्मे परिन्नाय
सगे परिन्नायगेहवासे उवसते समिए सहिए सयाजए । सेय वयणिजे तं जहा—
समणे त्ति वा माहणे त्ति वा खते त्ति वा दते त्ति वा गुत्ते त्ति वा मुत्ते त्ति वा
इसि त्ति वा मुणि त्ति वा कइ त्ति वा विउ त्ति वा भिक्खु त्ति वा ल्हें त्ति वा तीरट्ठि
त्ति वा चरणकरणपारविउ त्ति वेमि ॥ १५ ॥ ६५० ॥ पोण्डरियज्झयणं
पढमं समत्तं ॥

किरियाठाणज्झयणे बिइये

सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु किरियाठाणे नामज्झयणे
पन्नते, तस्स ण अयमट्ठे । इह खलु सजूहेण दुवे ठाणे एवमाहिज्जति । त जहा ।
धम्मे चेव अधम्मे चेव उवसते चेव अणुवसते चेव । तत्थ णं जे से पढमस्स
ठाणस्स अहम्मपक्खस्स विभङ्गे तस्स ण अयमट्ठे पन्नते । इह खलु पाईण वा ६
सतेगइया मणुस्सा भवति । त जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे
नीयागोया वेगे कायमता वेगे हस्समता वेगे सुवण्णा वेगे दुव्वण्णा वेगे सुत्वा
वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च ण इम एयात्तव दण्डसमादानं सपेहाए । तं जहा—नेरइ-
एसु वा तिरिक्खजोणिएसु वा मणुस्सेसु वा देवेषु वा जे यावन्ने तहप्पगारा पाणा
विलू वेयण वेयति ॥ तेसिं पि य ण इमाइ तेरस किरियाठाणाइ भवतीतिमक्खाय ।
त जहा—अट्ठादण्डे १, अणट्ठादण्डे २, हिसादण्डे ३, अकम्हादण्डे ४, दिट्ठिविपरि-
यासियादण्डे ५, मोसवत्तिए ६, अदिन्नादानवत्तिए ७, अज्झत्यवत्तिए ८, माणवत्तिए
९, मित्तदोसवत्तिए १०, मायावत्तिए ११, लोभवत्तिए १२, इरियावहिए १३
॥ १॥ ६५१ ॥ पढमे दण्डसमादाने अट्ठादण्डवत्तिए त्ति आहिज्जइ । से जहानामए—केइ
पुरिसे आयहेउ वा नाइहेउ वा अगारहेउ वा परिवारहेउ वा मित्तहेउ वा नागहेउ
वा भूयहेउ वा जक्खहेउ वा त दण्ड तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव निसिरइ अन्नेण
वि निसिरावेइ अन्न पि निसिरत समणुयाणइ, एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज त्ति
आहिज्जइ । पढमे दण्डसमादाने अट्ठादण्डवत्तिए त्ति आहिए ॥ २ ॥ ६५२ ॥
अहावरे दोच्चे दण्डसमादाने अणट्ठादण्डवत्तिए त्ति आहिज्जइ । से जहानामए—
केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवति ते नो अच्चाए नो अजिणाए नो मसाए नो
सोणियाए एव हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए
१० सुत्ता०

सावज्जं आहिज्जइ । चउत्थे दण्डसमादाणे अकम्हादण्डवत्तिए आहिए ॥५॥६५५॥
 अहावरे पच्चमे दण्डसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादण्डवत्तिए त्ति आहिज्जइ । से
 जहानामए-केइ पुरिसे माईहिं वा पिईहिं वा भाईहिं वा भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा
 पुतेहिं वा धूयाहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं सवसमाणे मित्त अमित्तमेव मन्नमाणे मित्ते
 हयपुण्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादण्डे । से जहानामए-केइ पुरिसे गामघायसि वा
 नगरघायसि वा खेडघायसि कब्बडघायसि मडबघायसि वा दोणमुहघायसि वा
 पट्टणघायसि वा आसमघायसि वा सनिवेसघायसि वा निग्गमघायसि वा रायहाणि-
 घायसि वा अतेण तेणमिति मन्नमाणे अतेणे हयपुण्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादण्डे ।
 एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज त्ति आहिज्जइ । पच्चमे दण्डसमादाणे दिट्ठिविपरि-
 यासियादण्डवत्तिए त्ति आहिए ॥ ६ ॥ ६५६ ॥ अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिए
 त्ति आहिज्जइ । से जहानामए-केइ पुरिसे आयहेउ वा नाइहेउ वा अगारहेउ वा
 परिवारहेउ वा सयमेव मुस वयइ अण्णेण वि मुस वाएइ मुस वयन्त पि अन्न समणु-
 जाणइ, एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज त्ति आहिज्जइ । छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिए
 त्ति आहिए ॥७॥६५७॥ अहावरे सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिए त्ति आहिज्जइ ।
 से जहानामए-केइ पुरिसे आयहेउ वा जाव परिवारहेउ वा सयमेव अदिन्न आदियइ
 अन्नैग वि अदिन्न आदियावेइ अदिन्न आदियन्त अन्न समणुजाणइ, एव खलु तस्स
 तप्पत्तिय सावज्ज त्ति आहिज्जइ । सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिए त्ति आहिए
 ॥८॥६५८॥ अहावरे अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिए त्ति आहिज्जइ । से जहानामए-
 केइ पुरिसे नत्थि ण केइ किञ्चि विसवादेइ सयमेव हीणे दीणे दुट्ठे दुम्मणे ओहयमण-
 सकप्पे चिन्तासोगसागरसपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्ठज्जाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए
 क्षियाइ, तस्स ण अज्झत्थया आससइया चत्तारि ठाणा एवमाहिज्जन्ति । त जहा-
 कोहे माणे माया लोहे । अज्झत्थमेव कोहमाणमायालोहे । एव खलु तस्स तप्प-
 त्तिय सावज्ज त्ति आहिज्जइ । अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिए त्ति आहिए ॥९॥६५९॥
 अहावरे नवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिज्जइ । से जहानामए-केइ पुरिसे
 जाइमएण वा कुलमएण वा बलमएण वा रूवमएण वा तवमएण वा सुयमएण वा
 लाभमएण वा इस्सरियमएण वा पन्नामएण वा अन्नयरेण वा मयट्ठाणेण मत्ते समाणे
 पर हीलेइ निन्देइ खिसइ गरहइ परिभवइ अवमज्जेइ, इत्तरिए अय, अहमसि पुण
 विसिट्ठजाइकुलबलाइगुणोववेए । एव अप्पाण समुक्कस्से, देहञ्चुए कम्मविइए अवसे-
 पयाइ । त जहा-गब्भाओ गब्भ ४ जम्माओ जम्म माराओ मार नरगाओ नरग
 चण्डे थडे चवले माणी यावि भवइ । एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्जं

अज्झोववन्ना जाव वासाइं चउपधमाइ छइसमाइ अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुज्जित्तु
 भोगभोगाइ कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उव-
 वत्तारो भवन्ति । तओ विप्पमुच्चमाणे भुज्जो भुज्जो एलमूयत्ताए तमूयत्ताए जाइमूय-
 त्ताए पच्चायन्ति । एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ । दुवालसमे
 किरियट्ठाणे लोभवत्तिए ति आहिए । इच्चेयाइ दुवालस किरियट्ठाणाइं दविण्ण
 समणेण वा माहणेण वा सम्म सुपरिजाणियव्वाइ भवन्ति ॥ १३ ॥ ६६३ ॥
 अहावरे तेरसमे किरियट्ठाणे इरियावहिए ति आहिज्जइ । इह खलु अत्ताए
 सवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभण्ड-
 मत्तनिकखेवणासमियस्स उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमियस्स मणस-
 मियस्स वयसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वयगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तिन्दि-
 यस्स गुत्तबम्भयारिस्स आउत्त चिट्ठमाणस्स आउत्त निसीयमाणस्स आउत्त तुयट्ठमा-
 णस्स आउत्त भुज्जमाणस्स आउत्त गच्छमाणस्स आउत्त भासमाणस्स आउत्त वत्थं
 पडिग्गह कम्बल पायपुच्छणं गिण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खु-
 पम्हनिवायमवि अत्थि विमाया सुहुमा किरिया इरियावहिया नाम कज्जइ । सा पढ-
 मसमए बद्धा पुट्ठा विईयसमए वेइया तइयसमए निज्जिण्णा सा बद्धा पुट्ठा उट्ठीरिया
 वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मे यावि भवइ । एव खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्ज
 ति आहिज्जइ, तेरसमे किरियट्ठाणे इरियावहिए ति आहिज्जइ । से बेमि जे य अईया
 जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहन्ता भगवन्ता सव्वे ते एयाइ चेव तेरस
 किरियट्ठाणाइ भासिंसु वा भासेन्ति वा भासिस्सन्ति वा पन्नविंसु वा पन्नवेन्ति वा
 पन्नविस्सन्ति वा, एव चेव तेरसम किरियट्ठाण सेविंसु वा सेवन्ति वा सेविस्सन्ति
 वा ॥ १४ ॥ ६६४ ॥ अदुत्तर च ण पुरिसविजय विभङ्गमाइक्खिस्सामि । इह खलु
 नाणापज्जाण नाणाछन्दाण नाणासीलाण नाणादिट्ठीण नाणारुईण नाणारम्भाणं
 नाणाज्झवसाणसजुत्ताण नाणाविहपावसुयज्झयण एव भवइ । त जहा-भोम उप्पायं
 सुविण अन्तलिक्ख अङ्ग सर लक्खण वज्जण इत्थिलक्खण पुरिसलक्खण हयलक्खणं
 गयलक्खण गोणलक्खण मेण्डलक्खण कुक्कुडलक्खण तित्तिरलक्खण वट्ठगलक्खण
 लावयलक्खण चकलक्खण छत्तलक्खणं चम्मलक्खण दण्डलक्खण असिलक्खण
 मणिलक्खण कागिणिलक्खण सुभगाकर दुब्भगाकर गम्भाकर मोहणकर आहव्वणिं
 पागसासणिं दव्वहोमं खत्तियविज्ज चन्दचरिय सूरचरियं सुक्कचरियं वहस्सइचरिय
 उक्कापाय दिसादाह मियचक्क वायसपरिमण्डल पसुवुट्ठिं केसवुट्ठिं मसवुट्ठिं रहिरवुट्ठिं
 वेयालिं अद्धवेयालिं ओसोवणिं तालुग्घाडणिं सोवाणिं सोवारिं दामिलिं कालिङ्गिं

गोरिं गन्धारिं ओवयणिं उप्पयणिं जम्भणिं थम्मणिं लेसणिं आमयकरणिं विसह-
करणिं पक्कमणिं अन्तद्वाणिं आयमिणिं, एवमाइयाओ विज्जाओ अन्नस्स हेउ
पउज्जन्ति पाणस्स हेउ पउज्जन्ति वत्थस्स हेउ पउज्जन्ति लेगस्स हेउ पउज्जन्ति
सयणस्स हेउं पउज्जन्ति, अन्नोसिं वा विह्वरूवाण कामभोगाण हेउं पउज्जन्ति ।
तिरिच्छ ते विज्ज सेवन्ति, ते अगारिया विप्पडिवन्ना कालमासे काल किंवा अन्न-
यराइ आसुरियाइ किब्बिसयाइ ठाणाइ उववत्तारो भवन्ति । तओ वि विप्पमुच्चमागा
भुज्जो एल्लूययाए तमअन्धयाए पच्चायन्ति ॥ १५ ॥ ६६५ ॥ से एगइओ
आयहेउ वा नायहेउ वा सयणहेउ वा अगारहेउ वा परिवारहेउ वा नायगं वा
सहवासिय वा निस्साए अदुवा अणुगामिए १ अदुवा उवचरए २ अदुवा पडिपहिए
३ अदुवा संधिच्छेयए ४ अदुवा गण्ठिच्छेयए ५ अदुवा उरब्भिए ६ अदुवा
सोत्ररिए ७ अदुवा वागुरिए ८ अदुवा साउणिए ९ अदुवा मच्छिए १० अदुवा
गोघायए ११ अदुवा गोवालए १२ अदुवा सोवणिए १३ अदुवा सोवणियतिए १४ ।
एगइओ आणुगामियभाव पडिसधाय तमेव अणुगामियाणुगामिय हन्ता छेता भेत्ता
लुम्पइत्ता विलुम्पइत्ता उह्वइत्ता आहार आहारेइ, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं
अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ उवचरयभाव पडिसधाय तमेव उवचरिय
हन्ता छेता भेत्ता लुम्पइत्ता विलुम्पइत्ता उह्वइत्ता आहार आहारेइ । इति से महया
पावेहिं कम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ पाडिपहियभाव पडिसधाय
तमेव पडिपहे ठिचा हन्ता छेता भेत्ता लुम्पइत्ता विलुम्पइत्ता उह्वइत्ता आहार
आहारेइ, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ
संधिच्छेदगभाव पडिसधाय तमेव संधि छेता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं
कम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ गण्ठिच्छेदगभाव पडिसधाय तमेव
गण्ठि छेता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ ।
से एगइओ उरब्भियभाव पडिसधाय उरब्भ वा अन्नयर वा तस पाण हन्ता जाव
उवक्खाइत्ता भवइ । (एसो अभिल्लवो सव्वत्थ) से एगइओ सोयरियभाव पडि-
सधाय महिस वा अन्नयर वा तस पाण हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ
वागुरियभावं पडिसधाय मिय वा अन्नयर वा तस पाण हन्ता जाव उवक्खाइत्ता
भवइ । से एगइओ सउणियभाव पडिसधाय सउणिं वा अन्नयरं वा तस पाण हन्ता
जाव उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ मच्छियभाव पडिसधाय मच्छ वा अन्नयरं
वा तस पाण हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ गोघायभाव पडिसधाय
तमेव गोग वा अन्नयर वा तस पाण हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ । से एगइओ

गोवालभाव पडिसघाय तमेव गोवाल वा परिजविय परिजविय हन्ता जाव उव-
 क्खाइता भवइ । से एगइओ सोवणियभावं पडिसघाय तमेव सुणगं वा अन्नयर
 वा तस पाण हन्ता जाव उवक्खाइता भवइ । से एगइओ सोवणियन्तियभाव
 पडिसघाय तमेव मणुस्स वा अन्नयर वा तस पाणं हन्ता जाव आहार आहारेइ
 इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइता भवइ ॥ १६ ॥ ६६६ ॥
 से एगइओ परिसामज्झाओ उट्ठिता अहमेय हणामि ति कट्ठु तित्तिर वा वट्ठगं वा
 लावग वा कवोयग वा कविजल्लं वा अन्नयर वा तस वा पाण हन्ता जाव उवक्खा-
 इता भवइ । से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा
 सुरायालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएण सस्साइ ज्ञामेइ
 अन्नेण वि अगणिकाएण सस्साइ ज्ञामावेइ अगणिकाएणं सस्साइ ज्ञामन्तं पि अन्नं
 समणुजाणइ, इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइता भवइ । से एगइओ
 केणइ आयाणेण विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा सुरायालएण गाहावईण वा
 गाहावइपुत्ताण वा उट्ठाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दमाण वा सयमेव घूराओ
 कप्पेइ अन्नेण वि कप्पावेइ कप्पन्तं पि अन्नं समणुजाणइ, इति से महया जाव
 भवइ । से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा सुरा-
 यालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्ठसालाओ वा गोणसालाओ वा घोड-
 गसालाओ वा गद्दभसालाओ वा कण्ठरुवोदियाए पडिपेहिता सयमेव अगणिकाएण
 ज्ञामेइ अन्नेण वि ज्ञामावेइ ज्ञामन्तं पि अन्नं समणुजाणइ, इति से महया जाव
 भवइ । से एगइओ केणइ आयाणेण विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा सुरा-
 यालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा कुण्डल वा मणिं वा मोत्तिय वा सयमेव
 अवहरइ अन्नेण वि अवहरावेइ अवहरन्तं पि अन्नं समणुजाणइ इति से महया जाव
 भवइ ॥ से एगइओ केणइ वि आयाणेण विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा
 सुरायालएणं समणाण वा माहणाण वा छत्तग वा दण्डग वा भण्डग वा मत्तग वा
 लट्ठि वा भिसिग वा चेलग वा चिलिमिलिग वा चम्मय वा छेयणग वा चम्मको-
 सिय वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ, इति से महया जाव उवक्खाइता
 भवइ ॥ से एगइओ नो वित्तिगिच्छइ । त जहा-गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा
 सयमेव अगणिकाएण ओसहीओ ज्ञामेइ जाव अन्नं पि ज्ञामन्तं समणुजाणइ, इति
 से महया जाव उवक्खाइता भवइ । से एगइओ नो वित्तिगिच्छइ, त जहा-गाहा-
 वईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्ठाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दमाण वा सय-
 मेव घूराओ कप्पेइ अन्नेण वि कप्पावेइ अन्नं पि कप्पन्तं समणुजाणइ । से एगइओ

नो विविगिच्छत्, त जहा-गाहावर्ण वा गाहावदपुत्ताण वा उट्टमालाओ वा जाव
 गद्भमालाओ वा कट्टरुवोदियाहि पडिपेहिता सयमेव अगणिकाएण जामेट जाव
 समणुजागइ । से एगटओ नो विविगिच्छत्, त जहा-गाहावर्ण वा गाहावदपुत्ताण
 वा जाव मोत्तिथं वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजागइ । ने एगटओ नो विविगि-
 च्छत् त जहा-समणाण वा माहणाण वा छत्ताण वा दण्डण वा जाव चम्मछेय्यण
 वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजागइ । इति से महया जाव उवक्काइता भवइ ।
 से एगटओ समण वा माहण वा दिस्सा नागाविहेहि पावकम्मोहि अत्ताण उवक्का-
 इता भवइ, अदुवा ण अच्छराए आफालिता भवइ, अदुवा ण फल्ल वदिता भवइ,
 णालेण वि से अणुपरिवट्टस्स अमण वा पाण वा जाव नो दवावेत्ता भवइ, ले इमे
 भवन्ति योणमन्ता भारणन्ता अलमगा वसलगा किवणगा समणगा निउज्जमा
 वणगा पच्चयन्ति ते इणमेव जीविय धिज्जीविय सपडिबूहेन्ति, नाइ ते परलोकस्स
 अट्टाए किंचि वि सिलीमन्ति, ते दुस्सन्ति ते मोयन्ति ते जूरन्ति ते निप्पन्ति ते
 पिट्टन्ति ते परितप्पन्ति ते दुस्सणजूरणमोयणनिप्पणपिट्टणपरितिप्पणउहवन्धणपरि-
 किलेमाओ अप्पडिविरया भवन्ति । ते महया आरम्मेण ते महया नमारम्मेण ते
 महया आरम्भसमारम्मेण विरुवस्सोहि पावकम्मकियोहि उरालाइ माणुस्सगाइ
 भोगभोगाइ भुञ्जित्तारो भवन्ति । त जहा-अन्न अन्नकाले पाण पाणकाले वत्थ
 वत्थकाले छेण छेणकाले नयय सयणकाले सपुच्चावर च ण ण्हाए कण्ठेमालाक्खे
 आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियमालामडली पडिबद्धसरीरे वग्घारियमोणिसुत्तगमन्दाम-
 कलावे अहयवत्थपरिहिए चन्दणोक्खित्तगायमरीरे महइमहालियाए कूडागार-
 सालाए महइमहालयति सीहानगति इत्थीणुम्मसपरिवुडे मव्वराइएण जोइणा
 जियायमाणेण महयाहयनट्टगीयवाइयतन्तीतलतालतुडियणमुइगपडुप्पवाइयरवेण
 उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुञ्जमाणे विहरइ । तस्स ण एगमवि
 आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पव्व जणा अवुत्ता चैव अब्भुट्टन्ति । भणह
 देवाणुप्पिया किं करेमो ? किं आहरेमो ? किं उवणेमो ? किं आविट्टामो ? किं ने
 हिय इच्छिय ? किं भे आसगस्स मयइ ? तमेव पासित्ता अगारिया एव वयन्ति-
 देवे खलु अय पुरिसे, देवत्तिणाए खलु अय पुरिसे, देवजीवणिजे खलु अय
 पुरिसे, अन्ने वि य ण उवजीवन्ति । तमेव पासित्ता आरिया वयन्ति-
 अभिक्कन्तकूरकम्मे खलु अय पुरिसे अइधुए अइयायरक्खे दाहिणगामिए नेरइए
 कण्हपक्खिए आगमिस्माण दुग्धवोहियाए यावि भविस्सइ । इच्चयस्स ठाणस्स
 उट्टिया वेगे अभिगिज्झन्ति अणुट्टिया वेगे अभिगिज्झन्ति अभिज्ञाज्झारो अभि-

गिज्झन्ति । एस ठाणे अणारिए अकेवले अप्पडिपुण्णे अणेयाउए अससुद्धे असह-
 गत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अनिब्बाणमग्गे अनिज्जाणमग्गे असव्वदुक्खपहीण-
 मग्गे एगन्तमिच्छे असाहु । एम खलु पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभङ्गे एव-
 माहिए ॥१७॥६६७॥ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभङ्गे एव-
 माहिज्झइ । इह खलु पाईण वा पडीण वा उदीणं वा दाहिण वा सन्तेगइया मणुस्सा
 भवन्ति । त जहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे नीयागोया वेगे काय-
 मन्ता वेगे हस्समन्ता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरुवा वेगे दुरुवा वेगे । तेसिं
 च ण खेतवत्थूणि परिग्गहियाइ भवन्ति, एसो आलावगो जहा पोण्डरीए तहा
 नेयव्वो, तेणेव अभिलावेण जाव सव्वोवसन्ता सव्वत्ताए परिनिव्वुडे त्ति बेमि ॥ एस
 ठाणे आरिए केवले जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगन्तसम्मो साहु । दोच्चस्स ठाणस्स
 वम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिए ॥१८॥६६८॥ अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स
 विभङ्गे एवमाहिज्झइ । जे इमे भवन्ति आरणिण्या आवसहिया गामणियन्तिया
 कण्हुईरहस्सिया जाव ते तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयाए तमूयत्ताए पच्चा-
 यन्ति । एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगन्तमिच्छे
 असाहु । एस खलु तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभङ्गे एवमाहिए ॥ १९ ॥ ६६९ ॥
 अहावरे पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिज्झइ । इह खलु
 पाईण वा ४ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति-गिहत्था महिच्छा महारम्भा महापरि-
 गहा अधम्मिया अधम्माणुया अधम्मिद्धा अधम्मक्खाई अधम्मपायजीविणो अध-
 म्मपलोई अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदायारा अधम्मणे चैव वित्तिं कप्पेमाणा
 विहरन्ति । हण छिन्द भिन्द विगतगा लोहियपाणी चण्डा रुद्धा खुद्धा साहस्सिया
 उक्कुब्धणवच्चणमायानियडिक्कडकवडसाइसपओगवहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडिया-
 णन्दा असाहु सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए जाव सव्वाओ
 परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कोहाओ जाव मिच्छादसणसल्लाओ
 अप्पडिविरया, सव्वाओ ण्हाणम्महणवण्णगन्धविलेवणसद्दफरिसरसरुवगन्धमल्ल-
 लकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसिया-
 सुदमाणियासयणासणजाणवाहणभोगभोयणपवित्थरविहीओ अप्पडिविरया जावज्जी-
 वाए सव्वाओ कयविक्रयमासद्धमासरुवगसववहाराओ अप्पडिविरया, जावज्जीवाए,
 सव्वाओ हिरण्णसुवण्णधणघन्नमणिमोत्तियसखसिलप्पवालाओ अप्पडिविरया जाव-
 ज्जीवाए सव्वाओ कूडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ आरम्भ-
 समारम्भाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरया

काल किञ्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरगयलपइट्ठाणे भवइ ॥ २० ॥ ६७० ॥ ते ण
 नरगा अन्तो वट्ठा बार्हि चउरंसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चन्धकारतमसा
 ववगयगहचन्दसूरनक्खत्तजोइसप्पहा मेदवसामसरुहिरपूयपडलविक्खिअल्ललिता-
 शुलेवणयला असुई वीसा परमदुब्भिमगन्धा कण्हा अगणिवण्णाभा कक्खडफासा
 दुराहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ ॥ नो चेव नरएसु नेरइया
 निहायन्ति वा पयलायन्ति वा सुइ वा रइ वा धिइ वा मइं वा उवलभन्ते । ते ण
 तत्थ उज्जल विउल पगाढ कडुय कक्कस चण्डं दुक्खं दुग्गं तिब्बं दुरहियास नेरइया
 वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति ॥ २१ ॥ ६७१ ॥ से जहानामए रुक्खे सिया
 पव्वयगे जाए मूले छिन्ने अगे गरए जओ निणं जओ विसमं जओ दुग्गं तओ
 पव्वडइ, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गव्भाओ गव्व जम्माओ जम्मं माराओ
 मारं नरगाओ नरग दुक्खाओ दुक्ख दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आग-
 मिस्साण दुल्लहवोहिए यावि भवइ । एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्ख-
 पहीणमगे एगन्तमिच्छे असाहू । पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभङ्गे एव-
 माहिए ॥ २२ ॥ ६७२ ॥ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स वम्मपक्खस्स विभङ्गे एव-
 माहिजइ । इह खलु पाईण वा ४ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति । त जहा-अणारम्मा
 अपरिगहा धम्मिया धम्माणुगा धम्मिट्ठा जाव धम्मेण चेव विट्ठिं कप्पेमाणा
 विहरन्ति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणन्दा सुसाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडि-
 विरया जावजीवाए जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मन्ता
 परपाणपरियावणकरा कज्जन्ति तओ वि पडिविरया जावजीवाए ॥ से जहानामए-
 अणगारा भगवन्तो इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाणभण्डमत्त-
 निक्खेवणसमिया उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिया मणसमिया वय-
 समिया कायसमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिन्दिया गुत्तवम्भयारी
 अकोहा अमाणा अमाया अलोभा सन्ता पसन्ता उवसन्ता परिनिव्वुडा अणासवा
 अगग्या छिन्नसोया निरुव्वेवा कसपाइ व्व मुक्कतोया सखो इव निरज्जणा जीव इव
 अपडिहयगई गगणतलं पिव निरालम्बणा वाउरिव अपडिवद्धा सारदसलिल व
 सुद्धहियया पुक्खरपत्तं व निरुव्वेवा कुम्भो इव गुत्तिन्दिया विहग इव विप्पमुक्का
 खग्गिविसाण व एगजाया भारुण्डपक्खी व अप्पमत्ता कुज्जरो इव सोण्डीरा वसभो
 इव जायत्यामा सीहो इव दुद्धरिसा मन्दरो इव अप्पकम्पा सागरो इव गम्भीरा
 चन्दो इव सोमळेसा सूरु इव दित्ततेया जच्चकच्चणं व जायत्त्वा वसुंधरा इव
 सव्वफासविसहा सुहुयहुयासणो विय तेयसा जलन्ता । नत्थि ण तेसिं भगवन्ताण

पवरमल्लणुलेवणधरा भासुरबोदी पलम्बवणमालाधरा दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वण्णेण
 दिव्वेण गन्धेण दिव्वेणं फासेण दिव्वेणं सघाएणं दिव्वेण सठाणेणं दिव्वाए इड्डीए
 दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चाए दिव्वेणं तेएणं
 दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइक्कलाणा ठिइक्कलाणा
 आगमेसिभइया यावि भवन्ति । एस ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खपहीणमग्गे एग-
 न्तसम्मे सुसाहू । दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिण ॥ २३ ॥ ६७३ ॥
 अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्सविभङ्गे एवमाहिज्जइ । इह खलु पाईण वा ४
 सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति । त जहा—अप्पिच्छा अप्पारम्भा अप्पपरिग्गहा
 धम्मिया धम्माणया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति सुसीला सुव्वया
 सुप्पडियाणन्दा साहू एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावजीवाए एगच्चाओ
 अप्पडिविरया जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सावज्जा अवोहिया कम्मन्ता परपाणपरि-
 तावणकरा कज्जन्ति तओ वि एगच्चाओ अप्पडिविरया । से जहानामए समणोवासगा
 भवन्ति अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसवसवरवेयणानिज्जराकिरियाहिग-
 रणबन्धमोक्खकुसला असहेजदेवासुरनागसुवर्णजक्खरक्खसकिनरकिंपुरिसगरलग-
 न्धव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गन्थाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, इणमेव
 निग्गन्थे पावयणे निस्सकिया निक्खिया निव्विगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा
 विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिज्जपेम्माणुरागरत्ता । अयमाउसो निग्गन्थे पावयणे
 अट्ठे अय परमट्ठे सेसे अणट्ठे उसियफलिहा अवगुयदुवाराअचियत्तन्तेउरपरघरपवेसा
 चाउइसट्ठमुद्धिद्वपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेमाणा समणे निग्गन्थे
 फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपडिग्गहकम्बलपायपुञ्छणेण ओसह-
 भेसज्जेण पीठफलगसेज्जासन्धारण पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्च-
 क्खानपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोक्कम्मेहिं अप्पाण भावेमाणा विहरन्ति ॥
 ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणति
 पाउणित्ता आबाहसि उप्पण्णसि वा, अणुप्पण्णसि वा बहूइ भत्ताइ अणसणाए पच्च-
 क्खाएन्ति बहूइ भत्ताइ अणसणाए पच्चक्खाएत्ता बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेदेन्ति
 बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा
 अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, तजहा—महद्धिएसु महज्जुइएसु जाव
 महासोक्खेसु सेस तहेव जाव एसट्ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे साहू तच्चस्स
 ठाणस्स मीसगस्स विभगे एवमाहिण ॥ २४ ॥ ६७४ ॥ अविरइ पडुच्च वाले आहि-
 ज्जइ विरइ पडुच्च पडिए आहिज्जइ विरयाविरइ पडुच्च वालपडिए आहिज्जइ, तत्थण

भाइमरणाण भगिणीमरणाणं भज्जापुत्तधूयासुण्हामरणाण दारिद्राणं दोहग्गाण अप्पिय-
 सवासाण पियविप्पओगाण बहूण दुक्खदोमणस्साण आभागिणो भविस्सति अणादियं
 च ण अणवयगं दीहमद्ध चाउरतससारकतार भुज्जो भुज्जो अणुपरियट्ठिस्सति ते णो
 सिज्झिस्सति णो बुज्झिस्सति जाव णो सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति एस तुला एस
 प्माणे एस समोसरणे पत्तेय तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे । तत्थ ण जे ते
 समणा माहणा एवमाइक्खन्ति जाव पस्वेन्ति । सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा
 सव्वे सत्ता न हन्तव्वा न अज्जावेयव्वा न परिधेयव्वा न उद्वेयव्वा ते नो आग-
 न्नुच्छेयाए ते नो आगन्तुभेयाए जाव जाइजरामरणजोणिजम्मणससारपुणब्भवग-
 ब्भवासभवपवचकलकलीभागिणो भविस्सन्ति, जाव अणाइय च ण अणवयगं
 दीहमद्ध चाउरन्तससारकन्तार भुज्जो भुज्जो नो अणुपरियट्ठिस्सन्ति, ते सिज्झिस्सन्ति
 जाव सव्वदुक्खाणं अन्त करिस्सन्ति ॥ २८ ॥ ६७८ ॥ इच्चेएहिं वारसहिं किरिया-
 ठाणेहिं वट्ठमाणा जीवा नो सिज्झिस्सु नो बुज्झिस्सु नो मुच्चिस्सु नो परिणिव्वाइस्सु जाव
 नो सव्वदुक्खाणं अन्त करेस्सु वा नो करेन्ति वा नो करिस्सन्ति वा । एयसि चेव
 तेरसमे किरियाठाणे वट्ठमाणा जीवा सिज्झिस्सु बुज्झिस्सु मुच्चिस्सु परिणिव्वाइस्सु जाव
 सव्वदुक्खाणं अन्त करेस्सु वा करति वा करिस्सति वा । एव से भिक्खू आयट्ठी आय-
 हिए आयगुत्ते आयजोगे आयपरक्कमे आयरक्खिण्ण आयणुकम्पए आयणिप्फेडए
 आयाणमेव पडिसाहरेज्जासि त्ति वेमि किरियाट्ठाणज्झयणं विइयं ॥ २९ ॥ ६७९ ॥

आहारपरिन्नज्झयणे तइये

सुय मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु आहारपरिज्ञा नामज्झयणे
 तस्स ण अयमट्ठे । इह खलु पाईण वा ४ सव्वओ सव्वावति य ण लोगसि चत्तारि
 गीयकाया एवमाहिज्जति । त जहा—अरगवीया मूलवीया पोरवीया खंधवीया । तेसिं
 च णं अहावीएण अहावगासेण इहेगइया सत्ता पुढवीजोणिया पुढवीसभवा पुढवी-
 बुक्कमा तज्जोणिया तस्सभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणा-
 विहजोणियासु पुढवीसु ख्खत्ताए विउट्ठति ॥ ते जीवा तेसिं नाणाविहजोणियाण
 पुढवीण सिणेहमाहारेंति । ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीर आउसरीर तेउसरीर
 वाउसरीर वणस्सइसरीर । नाणाविहाणं तसथावराणं पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति
 परिविद्धत्थ । त सरीर पुव्वाहारिय तथाहारिय विपरिणय सारुवियकडं सत्त । अवेरे
 वि य ण तेसिं पुढविजोणियाण ख्खत्ताण सरीरा नाणावण्णा नाणागंधा नाणास्सा

॥ ५ ॥ ६८४ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झा-
 रोहसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थ वुक्कमा रुक्खजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झा-
 रोहत्ताए विउट्ठति ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति
 ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीर जाव सारुवियकड सत अवरेवि य ण तेसिं
 अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ६ ॥ ६८५ ॥
 अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा जाव
 कम्मनियाणेण तत्थ वुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेत्ताए विउट्ठति ते जीवा
 तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति ते जीवा आहारेंति-
 पुढविसरीर आउमरीर जाव सारुवियकड सत अवरेवि य ण तेसिं अज्झारोह
 जोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ७ ॥ ६८६ ॥ अहा-
 वर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा जाव कम्म-
 नियाणेण तत्थवुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए जाव वीयत्ताए
 विउट्ठति ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेति जाव
 अवरेवि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण मूलाण जाव वीयाण सरीरा णाणावण्णा
 जावमक्खाय ॥ ८ ॥ ६८७ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया
 पुढविसभवा जाव णाणाविहजोणियासु पुढवीसु तणत्ताए विउट्ठति ते जीवा तेसिं
 णाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा कम्मोववन्ना भवति
 ति मक्खाय-एव पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्ठति जाव मक्खाय-एव
 तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्ठति तणजोणिय तणसरीर च आहारेंति, जाव-
 मक्खाय-एव तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव वीयत्ताए विउट्ठति ते जीवा जाव
 एवमक्खाय-एव ओसहीण वि चत्तारि आलावगा-एव हरियाणवि चत्तारि आला-
 वगा-॥ ९-१० ॥ ६८८-६८९ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता पुढवी-
 जोणिया पुढविसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहजोणियासु पुढवीसु
 आयत्ताए वायत्ताए कायत्ताए कूहणत्ताए कन्दुक्कत्ताए उव्वेहणियत्ताए निव्वेहणिय-
 त्ताए मळत्ताए छतगत्ताए वासाणियत्ताए कूरत्ताए विउट्ठन्ति । ते जीवा तेसिं नाणा-
 विहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेन्ति । ते वि जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर
 जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं पुढविजोणियाण आयत्ताण जाव कूराण सरीरा
 नाणावण्णा जाव मक्खाय । एगो चेव आलावगो सेसा तिण्णि नत्थि । अहावर
 पुरक्खाय इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा
 नाणाविहजोणिएसु उदएसु रुक्खत्ताए विउट्ठन्ति । ते जीवा तेसिं नाणाविहजोणियाण

उदगाण तिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुटविमरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेमि उदगजोणियाण रक्खाग मरीरा नाणावग्गा जाव मक्खाय । जहा पुटविजोणियाण रक्खाण चत्तारि गमा अज्झारोहाण वि तहेव, नणाण ओसहीण हरियागं चत्तारि आलावगा भाणियच्चा एवेरे, अहावर पुरक्खाय द्देहगडया सत्ता उदगजोणिया उदगमम्भवा जाव रक्खनियाणेण तत्त्युत्तमा नाणाविहजोणिएसु उदणु उदगत्ताए अवगत्ताए पणगत्ताए सेवालत्ताए कम्भुगत्ताए हटत्ताए र्मेहगत्ताए कच्छभाणित्ताए उप्पलत्ताए पउमत्ताए कुमुयत्ताए नट्टिगत्ताए नुभान्ताए मोगन्वि-यत्ताए पोण्डरीयमहापोण्डरीयत्ताए सयपत्तत्ताए महम्मपत्तत्ताए एव पन्धारोहग-यत्ताए अरविन्दत्ताए तामरसत्ताए भिमभिममुगालपुक्खलत्ताए पुक्खलत्तिभगत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेमि नागाविहजोणियाण उदगाण तिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुटवीसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेमि उदगजोणियाण उदगाण जाव पुक्खलत्तिभगण सरीरा नाणावग्गा जाव मक्खाय । एणो चेव आलावगो ॥ ११ ॥ ६९० ॥ अहावर पुरक्खाय द्देहगडया सत्ता तेमि चेव पुटवीजोणिएहि रक्खेहि रक्खजोणिएहि रक्खेहि रक्खजोणिएहि मूलेहि जाव बीएहि, रक्खजोणिएहि अज्झारोहेहि अज्झारोहजोणिएहि अज्झारोहेहि अज्झारोहजोणिएहि मूलेहि जाव बीएहि, पुटविजोणिएहि तणेहि तणजोणिएहि तणेहि तणनोणिएहि मूलेहि जाव बीएहि । एव ओमहीहि वि तिणि आलावगा एव हरिएहि वि तिणि आलावगा । पुटविजोणिएहि वि आएहि काएहि जाव दूरेहि उदगजोणिएहि रक्खेहि रक्खजोणिएहि रक्खेहि रक्खजोणिएहि मूलेहि जाव बीएहि एव अज्झारोहेहि वि तिणि । तणेहि पि तिणि आलावगा । ओमहीहि पि तिणि, हरिएहि पि तिणि, उदगजोणिएहि, उदएहि अवएहि जाव पुक्खलत्तिभगएहि तमपाणत्ताए विउट्टन्ति ॥ ते जीवा तेमि पुटवीजोणियाण उदगजोणियाण रक्खजोणियाण अज्झारोहजोणियाण तणजोणियाण ओमहीजोणियाण हरियजोणियाण रक्खाण अज्झारोहाण तणाग ओस-हीण हरियाण मूलाण जाव त्रीयाण आयाग कायाग जाव कुरवाग [कूराण] उदगाण अवगाण जाव पुक्खलत्तिभगण तिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुटवीमरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेमि रक्खजोणियाण अज्झारोहजोणियाण तणजोणियाण ओमहीजोणियाण हरियजोणियाण मूलजोणियाण वन्दजोणियाण जाव बीयजोणियाण आयजोणियाण कायजोणियाण जाव कूरजोणियाण उदगजोणियाण अवगजोणियाण जाव पुक्खलत्तिभगजोणियाण तसपाणाग सरीरा नाणावग्गा जाव मक्खाय ॥ १२ ॥ ६९१ ॥ अहावर पुरक्खाय नागाविहाण मणुस्साण । त जहा-कम्मभूम-

गाण अकम्मभूसगाण अन्तरदीवगाण आरियाण मिलक्खुयाण । तेसिं च ण अहा-
बीएणं अहावगासेण इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए एत्थ ण मेहुणवत्तियाए
(व) नाम सजोगे समुप्पज्जइ । ते दुहओ वि सिणेह सचिणन्ति । तत्थ ण जीवा इत्थि-
त्ताए पुरिसत्ताए नपुसगत्ताए विउट्ठन्ति, ते जीवा माओउय पिउसुक्कं त तदुभय ससट्ठ
क्कस किंविस्स तं पढमत्ताए आहारमाहारेंति तओ पच्छा ज से माया णाणाविहाओ
रसविहीओ आहारमाहारेंति तओ एगदेसेण ओयमाहारेंति अणुपुब्बेण बुद्धा पलिपाग-
मणुपवन्ना तओ कायाओ अभिनिवट्ठमाणा इत्थि वेगया जणयति पुरिस वेगया जण-
यति, णपुसग वेगया जणयति, ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीर सप्पि आहारेंति
आणुपुब्बेण बुद्धा ओयण कुम्मास तसथावरे य पाणे ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर
जाव साहवियकड सतं अवरेवि य ण तेसिं णाणाविहाण मणुस्सगाण कम्मभूसगाण
अकम्मभूसगाण अन्तरदीवगाण आरियाण मिलक्खण सरीरा णाणावण्णा भवति त्ति
मक्खाय ॥ ६९२ ॥ अहावर पुरक्खाय णाणाविहाणं जलचराण पचिंदियतिरिक्ख-
जोणियाण, तजहा—मच्छाण जाव सुंसुमाराण तेसिं च ण अहाबीएण अहावगासेण
इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडा तहेव जाव तओ पच्छा एगदेसेण ओयमाहारेंति
आणुपुब्बेण बुद्धा पलिपागमणुपवन्ना तओ कायाओ अभिनिवट्ठमाणा अड वेगया
जणयति पोय वेगया जणयति, से अडे उब्भिज्जमाणे इत्थि वेगया जणयति, पुरिस
वेगया जणयति, णपुसग वेगया जणयति, ते जीवा डहरा समाणा आउसिणेहमा-
हारेंति, आणुपुब्बेण बुद्धा वणस्सइकाय तसथावरे य पाणे ते जीवा आहारेंति
पुढविसरीर जाव सत अवरेवि य णं तेसिं णाणाविहाण जलचरपचिंदियतिरिक्ख-
जोणियाण मच्छाणं सुंसुमाराण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ६९३ ॥ अहावर
पुरक्खायं णाणाविहाण चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण तजहा एगखुराणं
दुखुराण गंढीपदाणं सणप्पयाण तेसिं च ण अहाबीएण अहावगासेण इत्थिपुरिसस्स य
कम्म जाव मेहुणवत्तिए णाम सजोगे समुप्पज्जइ ते दुहओ सिणेह सचिणन्ति तत्थण
जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए जाव विउट्ठति ते जीवा माउओय पिउसुक्क एव जहा
माणस्साण इत्थि वेगया जणयति पुरिसपि नपुसगपि ते जीवा डहरा समाणा
माउक्खीर सप्पि आहारेंति आणुपुब्बेण बुद्धा वणस्सइकाय तसथावरे य पाणे ते
जीवा आहारेंति पुढविसरीर जाव सत अवरेवि य ण तेसिं णाणाविहाण चउप्प-
यथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण एगखुराण जाव सणप्पयाण सरीरा णाणावण्णा
जावमक्खाय ॥ ६९४ ॥ अहावर पुरक्खाय णाणाविहाण उरपरिसप्पथलयरपचिं-
दियतिरिक्खजोणियाण तजहा—अहीण अयगराण आसालियाण महोरगाण तेसिं च

ण अहायीएण अहावगामेण इत्थीए पुग्गिम्म जाव एत्थं मेहुणे एव त चेव नागं
 अउ वेगइया जणयति पोय वेगइया जणयति से अडे उन्निज्जमाणे इत्थि वेगइया
 जणयति पुरिसपि णपुमगपि, ते जीवा डहरा ममाणा वाउत्तायमाहारेति आणु-
 व्हेण पुट्ठा वणस्सइत्ताय तसयावरपाणे ते जीवा आहारेति पुट्ठविमरीरं जाव मत्त
 अवरेवि य ण तेमिं नाणाविहाण उरपरिमप्पयलयरपच्चिंदियतिग्गिम्मा० अही जाव
 महोरगाण मरीरा नाणावग्गा नाणागधा जावमक्खाय ॥ ६९५ ॥ अहावर पुर-
 क्खाय नाणाविहाणं भुयपरिमप्पयलयरपच्चिंदियतिग्गिम्माजोणियाण, तंजहा—गोहाण
 नउलाण सिहाण मग्गाण सत्ताण सरघाण सराण घरमोडन्याण निस्सभराणं
 मुग्गाण मग्गाण पयलाइयाण निरान्याण जोहाण चउप्पाइयाण तेसिं च ण
 अहानीएण अहावगासेण इत्थिए पुरिमस्स य जहा उरपरिमप्पाण तहा भाणियन्व
 जान सान्णियकट सत्त अवरेवि य ण तेसिं नाणाविहाण भुयपरिमप्पयलयरपच्चिं-
 रतिरिक्खाण त० गोहाण जानमक्खाय ॥ ६९६ ॥ अहावर पुरक्खाय नागाविहाण
 सहचरपच्चिंदियतिरिक्खजोणियाण, तजहा—चम्मपक्खीण लोमपक्खीण समुग्ग-
 पक्खीण विततपक्खीण तेमिं च ण अहानीएण अहावगामेण इत्थीए जहा
 उरपरिमप्पाण नाणत्त ते जीवा डहरा ममाणा माउगात्तसिणेहमाहारति आणुपुव्वेण
 पुट्ठा वणस्सइत्ताय तसयावरे य पाणे ते जीवा आहारेति पुट्ठविमरीरं जाव सत्त अवरे
 वि य ण तेसिं नाणाविहाण सहचरपच्चिंदियतिरिक्खजोणियाण चम्मपक्खीण जाव
 मक्खाय ॥ १३ ॥ ६९७ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया मत्ता नाणाविहजोणिया
 नाणाविहसभवा नाणाविहजुक्का तजोणिया तस्सभवा तदुक्कमा कम्मोवगा कम्म-
 नियाणेण तत्थयुक्का नाणाविहाण तमथावराण पोमालाण सरीरेण वा सच्चित्तं वा
 अच्चित्तं वा अणुमूयत्ताए विउट्ठन्ति । ते जीवा तेमिं नाणाविहाण तमथावराण
 पाणाण सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुट्ठविमरीरं जाव मन्त । अवरे
 वि य ण तेमिं तमथावरजोणियाण अणुमूयगाण सरीरा नाणावग्गा जाव मक्खाय ।
 एव दुक्खसभवत्ताए । एव उरदुग्गाए ॥ १४ ॥ ६९८ ॥ अहावर पुरक्खाय इहे-
 गइया सत्ता नाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेण तत्थयुक्का नाणाविहाण तमथा-
 वराण पाणाण सरीरेण सच्चित्तं वा अच्चित्तं वा त सरीरेण वायसत्तिद्व वा वाय-
 सगहिय वा वायपरिग्गहिय उट्ठमाणु उट्ठभागी भवइ, अहेवाणु अहेभागी भवइ,
 तिरियवाणु तिरियभागी भवइ । त जहा—ओमा हिमए महिया करए हरतणुए
 उट्ठोदए । ते जीवा तेसिं नाणाविहाण तसयावराण पाणाण सिणेहमाहारेन्ति । ते
 जीवा आहारेन्ति पुट्ठविमरीरं जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं तमथावरजोणि-

यागं ओसाण जाव सुद्धोदगाण सरीरा नाणावण्णा जावमक्खाय । अहावर पुरक्खायं इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा तसथावरजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं उदगाण सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण उदगाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय । अहावर पुरक्खायं इहेगइया सत्ता उदगजोणियाणं जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टन्ति ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण उदगाणं सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाण उदगाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय । अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता उदगजोणियाण जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु तसपाणत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाणं तसपाणाण सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय ॥ १५ ॥ ६९९ ॥

अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता नाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अगणिकायत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं नाणाविहाण तसथावराण पाणाण सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण अगणीण सरीरा नाणावण्णा जावमक्खाय । सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाण । अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता नाणाविहजोणियाण जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहाणं तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा वाउक्कायत्ताए विउट्टन्ति । जहा अगणीण तहा भाणियव्वा चत्तारि गमा ॥ १६ ॥

॥ ७०० ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता नाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पुढविताए सक्करत्ताए वालुयत्ताए । इमाओ गाहाओ अणुगन्तव्वाओ-पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे । अय तउय तम्ब सीसग रूप सुवण्णेय वइरे य (१) हरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासगजणपवाले, अब्भपडलब्भवा-लुय, वायरकाए मणिविहाणा (२) गोमेजए य रुयए, अके फलिहे य लोहियक्खेय, मरगयमसारगळे भुयमोयगइदनीले य (३) चदनगेरुयहसगम्भे, पुलए सोगधिए य बोद्धवे, चदप्पभवेरुलिए, जलकंते सूरकते य (४) एयाओ एएसु भाणियव्वाओ गाहाओ जाव सरकतत्ताए विउट्टन्ति, ते जीवा तेसिं नाणाविहाण तसथावराण

पाणाणं सिणेहमाहारंति, ते जीवा आहारंति पुढविसरीर जाव सत अवरे वि य ण तेमिं तसयावरजोणियाण पुढवीण जाव सूरकताण सरीरा णाणावण्णा जावनक्खाय, सेस तिण्णि आलावगा जहा उदगाग ॥ ७०१ ॥ अहावर पुरक्खाय सव्वे पाणा सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे मत्ता, णाणाविहजोणिया, णाणाविहसभवा, णाणाविहवुक्कमा, सरीरजोणिया, मरीरसभवा, सरीरवुक्कमा, सरीराहारा, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मगईया, कम्मठिईया, कम्मणा चेव विप्परियाममुवेंति ॥ ७०२ ॥ सेएवमायाणह से एवमायाणिता आहारगुत्ते महिए समिए सयाजए ति वेमि ॥ ७०३ ॥ आहारपरिणयज्झयणं तइय ॥

पच्चक्खाणकिरियज्झयणे चउत्थे

सुय मे आउस ! तेग भगवया एवमक्खाय, उह खलु पच्चक्खाणकिरियाणामज्झयणे तस्मग अयमठ्ठे पणत्ते, आया अपच्चक्खाणीयावि भवइ, आया अकिरिया कुसलेयावि भवइ, आया मिच्छासठिएयावि भवइ, आया एगतदडेयावि भवइ, आया एगतनालेयावि भवइ, आया एगतसुत्तेयावि भवइ, आया अवियारमणवयणकायवक्केयावि भवइ, आया अप्पडिहयपच्चक्खायपावक्कमेयावि भवइ, एस खलु भगवया अक्खाए, असजए, अविरए, अप्पडिहयपच्चक्खायपावक्कमे, सकिरिए, असवुडे, एगतइडे, एगतवाले, एगतसुत्ते से वाले, अवियारमणवयणकायवक्के, सुविणमवि ण पस्सइ पावे य से कम्मे कज्जइ ॥ ७०४ ॥ तत्थ चोयए पन्नवग एव वयासी, असतएण मणेण पावएण असतियाए वईए पावियाए, असतएण काएण पावएण अहणतस्स अमणक्खस्स, अवियारमणवयणकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावक्कमे णो कज्जइ कस्सण त हेउ चोयए एव ववीड अन्नयरेण मणेग पावएग मणवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरीए वईए पावियाए वतिवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरेण काएग पावएग कायवत्तिए पावेकम्मे कज्जइ, हणतस्स समणक्खस्स सवियारमणवयणकायवक्कस्स सुविणमवि पामओ, एव गुगजाईयस्स पावेकम्मे कज्जइ, पुणरवि चोयए, एव ववीड तत्थण जे ते एवमाहसु असतएण मणेण पावएण असतियाए वईए पावियाए, असतएण काएण पावएण अहणतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयणकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ, तत्थ ण जे ते एवमाहसु मिच्छा ते एवमाहसु ॥ ७०५ ॥ तत्थ पन्नवए चोयग एव वयासी—त सम्म ज मए पुव्व वुत्त असतएण मणेण पावएण, असतियाए वईए पावियाए, असतएण काएण पावएण, अहणतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयणकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ

पावे कम्मे कज्जइ, त सम्म कस्स ण तं हेउं^२ आयरिय आह, तत्थ खलु भगवया छजीवणिकायहेऊ पण्णत्ता, तजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया इच्चेएहि छहिं जीवणिकाएहिं आया अप्पडिह्यपच्चक्खायपावकम्मे, निच्चं पसढविउवातचित्तदण्डे, तजहा-पाणाइवाए जाव परिगहे, कोहे जाव मिच्छादसणसल्ले ॥ ७०६ ॥ आयरिय आह तत्थ खलु भगवया वहए दिट्ठन्ते पण्णत्ते । से जहानामए-वहए सिया गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खणं निद्दाय पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामि सपहारेमाणे से कि नु हु नाम से वहए तस्स गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खण निद्दाय पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामि पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छा-सठिए निच्च पसढविउवायचित्तदण्डे भवइ^२ एव वियागरेमाणे समियाए वियागरे चोयए-हंता भवइ । आयरिय आह-जहा से वहए तस्स गाहावइस्स वा तस्स गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खण निद्दाय पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामि ति पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायचित्तदण्डे, एवमेव वाले वि सव्वेसिं पाणाण जाव सव्वेसिं सत्ताण दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छा-सठिए निच्च पसढविउवायचित्तदण्डे । त जहा-पाणाइवाए जाव मिच्छादसणसल्ले । एव खलु भगवया अक्खाए असजए अविरए अप्पडिह्यपच्चक्खायपावकम्मे सकि-रिए असवुडे एगन्तदण्डे एगन्तवाले एगन्तसुत्ते यावि भवइ । से वाले अवियारम-णवयणकायवक्के सुविणमवि न पस्सइ पावे य से कम्मे कज्जइ । जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स जाव तस्स वा रायपुरिसस्स पत्तेय पत्तेय चित्तसमादाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायचि-त्तदण्डे भवइ, एवमेव वाले सव्वेसिं पाणाण जाव सव्वेसिं सत्ताण पत्तेय पत्तेय चित्तसमादाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायचित्तदण्डे ॥ २॥७०७॥ नो इण्ठे समट्ठे [चोयए] । इह खलु वहवे पाणा० जे इमेग सरीरसमुस्सएण नो दिट्ठा वा सुया वा नाभिमया वा विज्ञाया वा जेसिं नो पत्तेय पत्तेय चित्तसमायाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागर-माणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायचित्तदण्डे । त जहा पाणाइवाए जाव मिच्छादसणसल्ले ॥ ३॥७०८॥ आयरिय आह-तत्थ खलु भगवया दुवे दिट्ठन्ता पण्णत्ता । त जहा-सन्निदिट्ठन्ते य असन्निदिट्ठन्ते य । से कि त सन्निदिट्ठन्ते^२ जे इमे सन्निपब्धिन्दिया पज्जत्तगा एएसिं ण छजीवनिकाए पडुच्च, त जहा-पुढवी-

काय जाव तगकाय । से एगडओ पुढवीकाएण क्रिय करेड मि कारवेड वि । तस्म
 णं एव भवड-एव गलु अह पुटवीकाएण क्रिय करेमि मि कारवेमि मि, नो चेव ण
 से एव भवड-इमेण वा इमेण वा से एएणं पुटवीकाएण क्रिय करेड मि कारवेड मि ।
 से ण तओ पुटवीकायाओ असजयअगिरयअप्पडिहयपचस्सायपावकस्मे यावि
 भवड । एव जाव तगकाए ति भाणियव्व । से एगडओ छजीवनिकाएहिं क्रिय
 करेड मि कारवेड मि । तस्म ण एव भवड-एव गलु छजीवनिकाएहिं क्रिय करेमि
 मि कारवेमि मि । नो चेव ण से एव भवड-इमेहिं वा २, से य तेहिं छहिं जीवनिका-
 एहिं जाव कारवेड मि । से य तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं असजयअगिरयअप्पडिहय-
 पचस्सायपावकस्मे, न जहा-पाणाडवाए जाव मिच्छादमणसहे । एम गलु भगवया
 अस्ताए असजए अविरए अप्पडिहयपचस्सायपावकस्मे सुगिमवि अपस्सओ ।
 पावे य से कस्मे कज्जइ । से त मज्झिदिट्ठन्ते ॥ से किं त अमज्झिदिट्ठन्ते ? जे इमे
 अमज्झिणो पाणा, त जहा-पुटवीकाया जाव वणस्सट्ठाडया छट्ठा वेगडया तमा
 पाणा, जेमि नो तया ड वा मत्ता इ वा पत्ता ड वा मणा ड वा वई इ वा सय वा
 ररणाए अनेहि वा कारवेत्तए करन्त वा समणुजाणित्तए, ते वि ण वाले मव्वेमि
 पाणाण जाव मव्वेमि सत्ताण दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्त-
 भूया मिच्छासठिया निच पमडविउवायचित्तदण्डा त० पाणाडवाए जाव मिच्छा-
 दसणमहे । इयेव जाव नो चेव मणो नो चेव वई पाणाण जाव मत्ता दुक्खण-
 याए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्ठणयाए परितप्पणयाए । ते दुस्त-
 णसोयण जाव परितप्पणवह्वन्धणपरिणिलेसाओ अप्पडिगिरया भवन्ति । इति
 गलु से असज्झिणो मि मत्ता अहोनिमि पाणाडवाए उवक्खाडज्जन्ति जाव अहोनिमि
 परिगहे उवक्खाडज्जन्ति जाव मिच्छादमणमहे उवक्खाडज्जन्ति [एवं भूयवाइं] ।
 सव्वजोणिया वि गलु सत्ता मज्झिणो हुया असज्झिणो होन्ति असज्झिणो हुया सज्झिणो
 होन्ति, होया सत्ता अदुत्ता अमत्ता, तत्थ से अगिविचित्ता अगिधूणित्ता असमुच्छित्ता
 अणणुतावित्ता असज्झिकायाओ वा सज्झिकाए सकमन्ति सज्झिकायाओ वा असज्झिकाय
 सकमन्ति, सज्झिकायाओ वा सज्झिकाय सकमन्ति असज्झिकायाओ वा असज्झिकाय
 सकमन्ति । जे एए मज्झि वा असज्झि वा सव्वे ते मिच्छायारा निच पमडविउवाय-
 चित्तदण्डा । त जहा-पाणाडवाए जाव मिच्छादसणमहे । एव गलु भगवया अ-
 क्खाए असजए अविरए अप्पडिहयपचस्सायपावकस्मे सकिरिए असवुडे एगन्तदण्डे
 एगन्तवाले एगन्तसुत्ते से वाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि न पामइ पावे
 य से कस्मे कज्जइ ॥ ४ ॥ ७०९ ॥ चोयए-से किं कुव्व किं कारव कह सजयविर-

यप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे भवइ^२ आयरिय आह-तत्थ खलु भगवया छज्जीव-
निकायहेऊ पन्नत्ता, तं जहा-पुढवीकाइया जाव तसकाइया । से जहानामए मम
अस्सायं दण्डेण वा अट्ठीण वा सुट्ठीण वा लेट्ठण वा कवालेण वा आतोडिजमाणस्स
वा जाव उवद्विजमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकार दुक्ख भय
पडिसवेदेमि, इच्चैव जाण सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता दण्डेण वा जाव कवालेण वा
आतोडिजमाणे वा हम्ममाणे वा तज्जिजमाणे वा तालिजमाणे जाव उवद्विजमाणे
वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकार दुक्ख भय पडिसवेदेन्ति । एव नच्चा सव्वे
पाणा जाव सव्वे सत्ता न हन्तव्वा जाव न उद्वेयव्वा । एस धम्मे ध्रुवे निइए सासए
समिच्च लोगं खेयत्तेहिं पवेइए । एव से भिक्खु विरए पाणाइवायाओ जाव मिच्छा-
दसणसङ्गाओ । से भिक्खु नो दन्तपक्खालणेणं दन्ते पक्खालेज्जा, नो अङ्गण नो
वमण नो धूवणित्त पि आइए । से भिक्खु अकिरिए अल्लसए अकोहे जाव अलोभे
उवसन्ते परिनिव्वुडे । एस खलु भगवया अक्खाए सजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-
पावकम्मे अकिरिए सव्वुडे एगन्तपण्डिए भवइ त्ति वेमि ॥ ५ ॥ ७१० ॥ पच्च-
क्खाणकिरियज्झयणं चउत्थं ॥

आयारसुयज्झयणे पञ्चमे

आदाय बम्भचेर च आसुपन्ने इम वइ । अस्सिं धम्मे अणायार नायरेज कयाइ
वि ॥ १ ॥ ७११ ॥ अणाइय परिन्नाय अणवदग्गे त्ति वा पुणो । सासयमसासए
वा इइ दिट्ठिं न धारए ॥ २ ॥ ७१२ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई ।
एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ३ ॥ ७१३ ॥ समुच्छिहिन्ति सत्थारो
सव्वे पाणा अणेलिंसा । गण्ठिगा वा भविस्सन्ति सासय त्ति व नो वए ॥ ४ ॥
७१४ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई । एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार
तु जाणए ॥ ५ ॥ ७१५ ॥ जे केइ खुद्दगा पाणा अदुवा सन्ति महालया । सरिस
तेहि वेर त्ति असरिस त्ति य नो वए ॥ ६ ॥ ७१६ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो
न विज्जई । एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ७ ॥ ७१७ ॥ अहाकम्माणि
भुज्जन्ति, अन्नमन्ने सकम्मुणा । उवलित्ते त्ति जाणिज्जा अणुवलित्ते त्ति वा पुणो
॥ ८ ॥ ७१८ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई । एएहिं दोहि ठाणेहिं
अणायार तु जाणए ॥ ९ ॥ ७१९ ॥ जमिद ओरालमाहार कम्मग च तहेव य ।
सव्वत्थ वीरिय अत्थि नत्थि सव्वत्थ वीरिय ॥ १० ॥ ७२० ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं
ववहारो न विज्जई । एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ११ ॥ ७२१ ॥

अदइज्जज्झयणे छट्ठे

पुराकडं अद इमं सुणेह मेगन्तयारी समणे पुरासी । से भिक्खुणो उवणेत्ता
अणेगे आइक्खएण्हि पुढो वित्थरेण ॥ १ ॥ ७४४ ॥ साऽऽजीविया पट्टवियाऽयिरेण
सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे । आइक्खमाणो बहुज्जमत्थ न सधयाई अवरेण
पुव्व ॥ २ ॥ ७४५ ॥ एगन्तमेवं अदुवा वि एण्हि दोऽवन्नमन्न न समेइ जम्हा ।
पुव्वि च एण्हि च अणागयं वा एगन्तमेव पडिसधयाइ ॥ ३ ॥ ७४६ ॥ समिच्च
लोगं तसथावराण येमकरे समणे माहणे वा । आइक्खमाणो वि सहस्समज्झे एग-
न्तय सारयई तहच्चे ॥ ४ ॥ ७४७ ॥ धम्म कहन्तस्स उ नत्थि दोसो खन्तस्स
दन्तस्स जिइन्दियस्स । भासाय दोसे य विवज्जगस्स गुणे य भासाय निसेवगस्स
॥ ५ ॥ ७४८ ॥ महव्वए पच्च अणुव्वए य तहेव पच्चासव सवरे य । विरइ इह
स्सामणियम्मि पण्णे लवावसक्की समणे ति वेमि ॥ ६ ॥ ७४९ ॥ सीओदग सेवउ
बीयकाय आहायकम्म तह इत्थियाओ । एगन्तचारिस्सिह अम्ह धम्मे तवरिस्सो
नाभिसमेइ पाव ॥ ७ ॥ ७५० ॥ सीओदग वा तह बीयकाय आहायकम्म तह
इत्थियाओ । एयाइ जाण पडिसेवमाणा अगारिणो अस्समणा भवन्ति ॥ ८ ॥
७५१ ॥ सिया य बीयोदगइत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवन्तु । अगारिणो
वि समणा भवन्तु सेवन्ति ऊ ते पि तहप्पगार ॥ ९ ॥ ७५२ ॥ जे यावि बीयो-
दगभोइ भिक्खू भिक्खु विह जायइ जीवियट्ठी । ते नाइसजोगमविप्पहाय कायोवगा
नन्तकरा भवन्ति ॥ १० ॥ ७५३ ॥ इम वय तु तुम पाउकुंवं पावाइणो गरिहसि
सव्व एव । पावाइणो पुढो किट्ठयन्ता सय सय दिट्ठि करेन्ति पाउ ॥ ११ ॥
७५४ ॥ ते अन्नमन्नस्स उ गरहमाणा अक्खन्ति भो समणा माहणा य । सओ
य अत्थी असओ य नत्थि गरहामु दिट्ठि न गरहामु किचि ॥ १२ ॥ ७५५ ॥ न
किचि रुवेगऽभिधारयामो सदिट्ठिमग्ग तु करेसु पाउ । मग्गे इमे किट्ठिँ आरिएहि
अणुत्तरे सप्पुरिसेहिँ अज्झू ॥ १३ ॥ ७५६ ॥ उट्ठ अहे य तिरिय दिसासु तसा य
जे यावर जे य पाणा । भूयाहिसकामिदुगुच्छमाणा नो गरहइ वुत्तिम किचि लोए
॥ १४ ॥ ७५७ ॥ आगन्तगारे आरामगारे समणे उ भीए न उवेइ वास । दक्खा
हु सन्ती बहवे मणुस्सा ऊणाइरित्ता य लवालवा य ॥ १५ ॥ ७५८ ॥ मेहाविणो
सिक्खिय वुद्धिमन्ता सुत्तेहि अत्थेहि य निच्छयन्ना । पुच्छिस्सु मा णे अणगार अन्ने
इइ सकमाणो न उवेइ तत्थ ॥ १६ ॥ ७५९ ॥ नो कामकिच्चा न य बालकिच्चा
रायाभियोगेण कुओ भएण । वियागरेज्ज पसिण न वा वि सकामकिच्चेणिह आरियाण
॥ १७ ॥ ७६० ॥ गन्ता च तत्था अदुवा अगन्ता वियागरेज्जा समियासुपजे ।

अणारिया दगणओ परित्ता ट्ट सस्मागो न उवैउ नत्थ ॥ १८ ॥ ७६१ ॥ पण
जहा वणिए उदयट्ठी आगरग हेउ पगरंउ गह ॥ तयोवमे नमणे नायपुत्ते उवैउ
मे होइ मडे विगयो ॥ १९ ॥ ७६२ ॥ नर न कब्बा मिहणे पुसार्ग चिचाऽमड ताड
य नाह एउ ॥ एयाउया बम्भउड ति वुत्ता तस्मोऽयट्ठी नमणे ति वेमि ॥ २० ॥
॥ ७६३ ॥ गमारभन्ते वणिया भूयगाम परिगह चैव ममायमाणा ॥ ने नाडस-
जोगगीप्पहाय आयस्स हेउ पगरंनि गह ॥ २१ ॥ ७६४ ॥ पित्तेनिगो मेहुण-
सपगाटा ते भोयणट्ठा वणिया वयन्ति ॥ वय तु णमेगु अज्जोउपप्पा अणारिया
पेमरनेउ पिद्धा ॥ २२ ॥ ७६५ ॥ आरम्मग चैव परिगह न अविउस्सिया
निस्सिय आयदण्डा ॥ तेपि च से उटए ज वयासी नउरन्णगन्ताय दुहाय नेह
॥ २३ ॥ ७६६ ॥ नेगन्ति नयन्ति य ओदए गो उयन्ति ते दो विगुतोदयम्मि ॥
मे उदए साडमणन्तपत्ते तनुदर्य नाहयउ ताड नारं ॥ २४ ॥ ७६७ ॥ अहिसय
सव्वपयाणुस्सपी धम्मे ठिय कम्मविगहेउ ॥ तमायदण्डेहि गमायगन्ता अबोहिए
ते पडिस्समेय ॥ २५ ॥ ७६८ ॥ पिण्णागपिण्डीनवि विद्ध मूले केरं पएजा पुरिसे
दमे ति ॥ अलाउवा वा पि कुमारए ति न लिप्पडं पाणिवहेण अम्ह ॥ २६ ॥ ७६९ ॥
अहवा पि विद्धूण मिलउउ मूले पिण्णागपुत्तिं नर पएजा ॥ कुमारग वा वि अला-
उय ति न लिप्पडं पाणिवहेण अम्ह ॥ २७ ॥ ७७० ॥ पुरिस च विद्धूण कुमारग
वा सल्लमि केउं पए जायतेए ॥ पिण्णागपिण्ड सटमारहेत्ता मुद्धाग त रुप्पड पारणाए
॥ २८ ॥ ७७१ ॥ सिणायगाण तु दुवे महस्से जे भोयए नियए भिक्कुयाणं ॥
ते पुण्णरान्ध सुमहं जिगित्ता भयन्ति आरोप्य महन्त गत्ता ॥ २९ ॥ ७७२ ॥
अजोगहय इह सजयाण पाउ तु पाणा ण पमज्ज काउ ॥ अबोहिए दोण्ह वि त
असाहु वयन्ति जे यावि पडिम्बुगन्ति ॥ ३० ॥ ७७३ ॥ उट्टु अहे य तिरिय
दिमासु विताय लिङ्ग तसथाउराण ॥ भूयाभिसकाड दुयुञ्जमाणे वए करेजा व कुओ
विहऽत्थि ॥ ३१ ॥ ७७४ ॥ पुरिसे ति विवत्ति न एवमत्थि अणारिए से पुरिसे तद्वा
हु ॥ को सभवो पिण्णागपिण्डियाए वाया पि एमा बुइया असत्ता ॥ ३२ ॥ ७७५ ॥
वायाभियोगेण जमावहेजा नो तारिस वायमुदाहरेजा ॥ अट्ठाणमेय वयण गुणाग
नो दिक्खिए वृयमुरालमेय ॥ ३३ ॥ ७७६ ॥ लद्धे अट्ठे अहो एव तुव्मे जीवा-
णुभागे सुविचिन्तिए व ॥ पुव्व समुह अवर च पुट्ठे ओलोइए पाणितले ठिए वा
॥ ३४ ॥ ७७७ ॥ जीवाणुभाग सुविचिन्तयन्ता आहारिया अन्नविहीणं सोहिं ॥
न वियागरे छापओपजीवी एसोऽणुधम्मो इह सजयाण ॥ ३५ ॥ ७७८ ॥ सिणा-
यगाणं तु दुवे महस्से जे भोयए नियए भिक्कुयाणं ॥ असजए लोहियपाणि से ऊ

नियच्छई गरिहमिहेव लोए ॥ ३६ ॥ ७७९ ॥ थूलं उरब्भं इह मारियाण उद्धि-
 भत्त च पगप्पएत्ता । त लोणतेल्लेण उक्खखडेत्ता सपिप्पलीय पगरन्ति मस ॥ ३७ ॥
 ॥ ७८० ॥ त भुज्जमाणा पिसिय पभूय नो ओवलिप्पामु वय रण ॥ इच्चवमाहसु
 अणज्वम्मा अणारिया वाल रसेसु गिद्धा ॥ ३८ ॥ ७८१ ॥ जे यावि भुज्जन्ति
 तहप्पगार सेवन्ति ते पावमजाणमाणा । मण न एय कुसला करेन्ति वाया वि
 एसा बुइया उ मिच्छा ॥ ३९ ॥ ७८२ ॥ सव्वेसि जीवाण दयट्ठयाए सावज्जदोस
 परिवज्जयन्ता । तस्सकिणो-इसिणो नायपुत्ता उद्धिभत्त परिवज्जयन्ति ॥ ४० ॥
 ॥ ७८३ ॥ भूयाभिसकाए दुगुञ्छमाणा सव्वेसि पाणाण निहाय दण्ड । तम्हा न
 भुज्जन्ति तहप्पगार एसोऽणुवम्मो इह सजयाण ॥ ४१ ॥ ७८४ ॥ निग्गन्यधम्मम्मि
 इम समाहि अस्सि सुठिच्चा अणिहे चरेजा । बुद्धे मुणी सीलगुणोववेए अच्चत्थय
 पाउणई सिलोण ॥ ४२ ॥ ७८५ ॥ सिणायगाण तु दुवे सहस्से जे भोयए नियए
 माहणाण । ते पुण्णखन्धे सुमहऽज्जणित्ता भवन्ति देवा इइ वेयवाओ ॥ ४३ ॥ ७८६ ॥
 सिणायगाण तु दुवे सहस्से जे भोयए नियए कुलालयाण । से गच्छई लोलुवसप-
 गाढे तिन्वाभितावी नरगाभिसेवी ॥ ४४ ॥ ७८७ ॥ दयावर धम्म दुगुञ्छमाणा
 वहावह धम्म पससमाणा । एण पि जे भोययई असील निवो निस जाइ कुओऽसु-
 रेहि ॥ ४५ ॥ ७८८ ॥ दुहओ वि धम्मम्मि समुट्ठियामो अस्सि सुट्ठिच्चा तह एस-
 काल । आयारसीले बुइएह नाणी न सपरायम्मि विसेसमत्थि ॥ ४६ ॥ ७८९ ॥
 अव्वत्तल्लव पुरिस महन्त सणातण अक्खयमव्वय च । सव्वेसु भूएसु वि सव्वओ
 से चन्दो व ताराहि समत्तरुवे ॥ ४७ ॥ ७९० ॥ एव न मिज्जन्ति न ससरन्ति न
 माहणा खत्तिय वेस पेसा । कीडा य पक्खी य सरीसिवा य नरा य सव्वे तह
 देवलोगा ॥ ४८ ॥ ७९१ ॥ लोग अयाणित्तिह केवलेण कहन्ति जे वम्ममजाण-
 माणा । नासन्ति अप्पाण पर च नट्ठा ससार घोरम्मि अणोरपारे ॥ ४९ ॥ ७९२ ॥
 लोग विजाणन्तिह केवलेण पुण्णेण नाणेण समाहिजुत्ता । वम्म समत्त च कहन्ति
 जे उ तारन्ति अप्पाण पर च तिण्णा ॥ ५० ॥ ७९३ ॥ जे गरहिंय ठाणमिहाव-
 सन्ति जे यावि लोए चरणोववेया । उदाहड त तु सम मईए अहाउसो विप्परिया-
 समेव ॥ ५१ ॥ ७९४ ॥ सवच्छरेणावि य एगमेग वाणेण मारेउ महागय तु ।
 सेसाण जीवाण दयट्ठयाए वास वय वित्ति पक्कप्पयामो ॥ ५२ ॥ ७९५ ॥ सवच्छ-
 रेणावि य एगमेग पाण हणन्ता अणियत्तदोसा । सेसाण जीवाण वहेण लग्गा
 सिया य थोव गिहिणो वि तम्हा ॥ ५३ ॥ ७९६ ॥ सवच्छरेणावि य एगमेग पाण
 हणन्ता समणव्वएसु । आयाहिए से पुरिसे अणजे न तारिसे केवलिणो भवन्ति

॥ ८०२ ॥ आउसो गोयमा, अत्थि खलु कुमारपुत्तिया नाम समणा निग्गन्या तुम्हाण पवयण पवयमाणा गाहावइ समणोवासग उवसपन्न एव पच्चक्खावेन्ति । नन्नत्थ अभिओएण गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं निहाय दण्ड । एव ण्ह पच्चक्खन्ताण दुप्पच्चक्खाय भवइ । एव ण्ह पच्चक्खावेमाणाण दुप्पच्चक्खावियव्व भवइ । एव ते पर पच्चक्खावेमाणा अइयरन्ति सय पइण्ण । कस्स ण त हेउ ? ससारिया खलु पाणा, थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायन्ति, तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायन्ति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तमकायसि उववज्जन्ति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायसि उववज्जन्ति । तेसिं च ण थावरकायसि उववज्जणाण ठौणमेयं घत्त ॥ ५ ॥ ८०३ ॥ एव ण्ह पच्चक्खन्ताण सुपच्चक्खाय भवइ । एव ण्ह पच्चक्खावेमाणाण सुपच्चक्खाविय भवइ । एव ते पर पच्चक्खावेमाणा नाइयरन्ति सय पइण्ण नन्नत्थ अभियोगेण गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं निहाय दण्ड । एवमेव सइ भासाए परक्कमे विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा पर पच्चक्खावेन्ति अय पि नो उवएसे नो नेयाउए भवइ । अविआइ आउसो गोयमा तुब्भ पि एव रोयइ ? ॥ ६ ॥ ८०४ ॥ सवाय भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एव वयासी-आउसन्तो उदगा, नो खलु अम्हे एव रोयइ । जे ते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खन्ति जाव परवेन्ति नो खलु ते समणा वा निग्गन्या भास भासन्ति, अणुताविय खलु ते भास भासन्ति, अब्भाइक्खन्ति खलु ते समणे समणोवासए वा जेहिं पि अच्चेहिं जीवेहिं पाणेहिं भूएहिं सत्तेहिं सज्जमयति ताण वि ते अब्भाइक्खन्ति । कस्स ण त हेउ ? ससारिया खलु पाणा, तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायन्ति थावरा वि वा पाणा तसत्ताए पच्चायन्ति तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायसि उववज्जन्ति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायसि उववज्जन्ति, तेसिं च ण तसकायसि उववज्जणाण ठाणमेयं अघत्त ॥ ७ ॥ ८०५ ॥ सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयम एव वयासी-कयरे खलु ते आउसन्तो गोयमा तुब्भे वयह तसा पाणा तसा आउ अन्नहा ? सवाय भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एव वयासी-आउसन्तो उदगा जे तुब्भे वयह तसभूया पाणा तसा ते वय वयामो तसा पाणा, जे वय वयामो तसा पाणा ते तुब्भे वयह तसभूया पाणा । एए सन्ति दुवे ठाणा तुल्ल एगट्ठा । किमाउसो इमे भे सुप्पणीयतराए भवइ तसभूया पाणा तसा, इमे भे दुप्पणीयतराए भवइ-तसा पाणा तसा । तओ एगमाउसो पडिक्कोसह एक्क अभिनन्दह । अय पि भेदो से नो नेयाउए भवइ । भगव च ण उदाहु-सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति, तेसिं च ण एव वुत्तपुव्व भवइ-नो खलु वय सच्चाएमो मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्ताए ।

माचय ण्ह अणुपुव्वेण गुत्तस्स लित्तिस्सामो । ते एव सगवेन्ति, ते एव सयं ठवयन्ति
 ते एव सग ठावयन्ति नज्जत्य अभिओएण गाहावड्चोरगगहणमिमोस्सवणयाए तमेहिं
 पाणेहिं निहाय दण्ड । त पि तेमिं दुमलमेव भवइ ॥८॥८०६॥ तमा पि चुचन्ति
 तसा तससभारकूलेण कम्मुणा नाम च णं अब्भुजगय भवइ, तमाउय च णं पलि-
 क्खीण भवइ, तमकायट्टिइया ते तओ आउय विप्पजहन्ति । ते तओ आउय
 विप्पजहिता थावरत्ताए पचायन्ति । थावरा पि चुचन्ति थावरा थावग्गभारकडेण
 कम्मुणा नाम च ण अब्भुजगय भवइ थावराउय च ण पलिक्खीण भवइ । थावर-
 कायट्टिइया ते तओ आउय विप्पजहन्ति तओ आउय विप्पजहिता भुजो परलो-
 इयत्ताए पचायन्ति । ते पाणा वि चुचन्ति, ते तसा वि चुचन्ति, ते महाकाया ते
 चिरट्टिइया ॥ ९ ॥ ८०७ ॥ सवाय उदए पेडालपुत्ते भयव गोयम एव वयासी-
 आउमन्तो गोयमा नत्थि ण से केइ परियाए ज ण ममणोवासगस्स एगपागाड-
 चायविरए वि दण्डे निक्खित्ते । कस्म ण त हेउ ? ससारिया गलु पाणा, थावरा
 पि पाणा तसत्ताए पचायन्ति, तसा पि पाणा थावरत्ताए पचायन्ति, थावरकायाओ
 विप्पमुचमाणा गव्वे तमकायमि उव्वज्जन्ति, तमकायाओ विप्पमुचमाणा गव्वे
 थावरकायमि उव्वज्जन्ति, तेसिं च ण थावरकायमि उव्वज्जाग ठागमेय घत्त ।
 सवाय भगव गोयमे उदय पेडालपुत्त एवं वयासी-नो गलु आउमो अम्हाक वत्तव्व-
 एण तुब्भ चैव अणुप्पवाएण अत्थि ण मे परियाए जे ण ममणोवासगस्स सव्व-
 पाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वमत्तेहिं दण्डे निक्खित्ते भवइ । कस्म ण त
 हेउ ? ससारिया गलु पाणा, तसा पि पाणा थावरत्ताए पचायन्ति, थावरा पि पाणा
 तसत्ताए पचायन्ति, तमकायाओ विप्पमुचमाणा गव्वे थावरकायमि उव्वज्जन्ति,
 थावरकायाओ विप्पमुचमाणा गव्वे तमकायमि उव्वज्जन्ति, तेसिं च ण तमकायमि
 उव्वज्जाण ठागमेय अघत्त । ते पाणा वि चुचन्ति, ते तमा वि चुचन्ति, ते महा-
 काया ते चिरट्टिइया । ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपगस्साय
 भवइ । ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपचस्साय भवइ । ते महत्ता
 तसकायाओ उव्वसन्तस्स उव्वट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अजो वा एव
 वयह-नत्थि ण से केइ परियाए जत्ति समणोवासगस्स एगपाणाए वि दण्डे
 निक्खित्ते । अय पि भेदे से नो नेयाउए भवइ ॥ १० ॥ ८०८ ॥ भगव च ण
 उदाहु नियण्ठा गलु पुच्छियव्वा । आउमन्तो नियण्ठा इह गलु सन्तेगइया मणुस्सा
 भवन्ति । तेसिं च एव वुत्तपुव्व भवइ-जे इमे मुण्डे भविता अगाराओ अणगारिय
 पव्वइए एसिं च णं आमरणन्ताए दण्डे निक्खित्ते । जे इमे अगारमावसन्ति एएमिं

ण आमरणन्ताए दण्डे नो निक्खित्ते । केई च णं समणा जाव वासाइ चउपधमाई छट्ठइसमाइ अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देस दूडज्जिता अगारमावसेज्जा ? हता-
वसेज्जा । तस्स णं त गारत्थ वहमाणस्स से पच्चक्खाणे भङ्गे भवइ ? नो इण्टे
समट्ठे । एवमेव समणोवासगस्स वि तसेहि पाणेहि दण्डे निक्खित्ते, यावरेहि पाणेहि
दण्डे नो निक्खित्ते । तस्म णं त थावरकाय वहमाणस्स से पच्चक्खाणे नो भङ्गे
भवइ । से एवमायाणह ? नियण्ठा । एवमायाणियव्व ॥ भगवं च ण उदाहु नियण्ठा
खलु पुच्छियव्वा-आउसन्तो नियण्ठा इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्तो वा
तहप्पगारेहि कुलेहि आगम्म धम्म सवणवत्तिय उवसरुमेज्जा ? हन्ता उवसरुमेज्जा ।
तेसिं च ण तहप्पगाराण धम्म आइक्खियव्वे ? हन्ता आइक्खियव्वे । कि ते
तहप्पगार धम्मं सोचा निमम्म एव वएज्जा इणमेव निग्गन्थ पावयण सच्च अणुत्तर
केवलिय पडिपुण्ण सुसुद्ध नेयाउय सल्लरुत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग
निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध मव्वदुक्खप्पहीणमग्ग । एत्थ ठिया जीवा सिज्जन्ति
घुज्जन्ति मुचन्ति परिणिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्त करेन्ति । तमाणाए तहा
गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा निसीयामो तहा तुयट्ठामो तहा भुज्जामो तहा भासामो
तहा अब्भुट्ठामो तहा उट्ठाए उट्ठेमो त्ति पाणाणं भूयाण जीवाण सत्ताण सजमेणं
सजमामो त्ति वएज्जा ? हन्ता वएज्जा । कि ते तहप्पगारा कप्पन्ति पव्वावित्तए ?
हन्ता कप्पन्ति । कि ते तहप्पगारा कप्पन्ति मुण्डावित्तए ? हन्ता कप्पन्ति । कि
ते तहप्पगारा कप्पन्ति सिक्रावित्तए ? हन्ता कप्पन्ति । कि ते तहप्पगारा
कप्पन्ति उवट्ठावित्तए ? हन्ता कप्पन्ति । तेसिं च ण तहप्पगाराण सव्वपाणेहि
जाव सव्वसत्तेहि दण्डे निक्खित्ते ? हता निक्खित्ते । से णं एयास्सवेण विहारेण
विहरमाणा जाव वासाइ चउपधमाई छट्ठइसमाइ वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देस
दूडजेता अगार वएज्जा ? हन्ता वएज्जा । तस्म ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि
दण्डे नो निक्खित्ते ? नो इण्टे समट्ठे । से जे से जीवे जस्स परेण सव्वपाणेहि
जाव सव्वसत्तेहि दण्डे नो निक्खित्ते । से जे से जीवे जस्स आरेण सव्वपाणेहि
जाव सत्तेहि दण्डे निक्खित्ते । से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहि जाव सत्तेहि
दण्डे नो निक्खित्ते भवइ, परेण असजए आरेण सजए, दयाणिं असजए, असज-
यस्स ण सव्वपाणेहि जाव सत्तेहि दण्डे नो निक्खित्ते भवइ । से एवमायाणह ?
नियण्ठा से एवमायाणियव्व ॥ भगव च णं उदाहु नियण्ठा खलु पुच्छियव्वा-
आउसन्तो नियण्ठा इह खलु परिव्वाडया वा परिव्वाडयाओ वा अन्नयरेहितो
तित्थाययणेहितो आगम्म धम्म सवणवत्तिय उवसरुमेज्जा ? हन्ता उवसरुमेज्जा ।

बुद्धात् ते तसावि बुद्धति ते महाकाया ते
 द्विइया ते बहुयरगा आयाणसो इति से महयाओ ण जण तुब्भे वदह त
 अयपि भेट्ठे से णो णेयाउए भवइ-भगव च ण उदाहु सन्तेगइया मणुस्सा भव
 त जहा-अणारम्भा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणया जाव सव्वाओ परिग्ग
 पडिविरया जावज्जीवाए, जेहि समणोवासगस्स आयाणसो आमरणन्ताए
 निक्खित्ते, ते तओ आउग विप्पजहन्ति, ते तओ भुज्जो सगमायाए सोग्गइगा
 भवन्ति । ते पाणा वि बुच्चन्ति जाव नो नेयाउए भवइ । भगव च ण
 सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति । त जहा-अप्पिच्छा अप्पारम्भा अप्पपरि
 धम्मिया धम्माणया जाव एग्गच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया, जेहिं समणो
 गस्स आयाणसो आमरणन्ताए दण्डे निक्खित्ते । ते तओ आउग विप्पजह
 तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवन्ति । ते पाणा वि बुच्चन्ति जा
 नेयाउए भवइ । भगवं च ण उदाहु सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति । त
 आरणिण्या आवसहिया गामणियन्तिया कण्हुईरहस्सिया, जेहिं समणोवास
 आयाणसो आमरणन्ताए दण्डे निक्खित्ते भवइ । नो बहुसजया नो बहुपडि
 पाणभूयजीवसत्तेहिं अप्पणा सच्चामोसाइ एवं विप्पडिवेदेन्ति-अह न हन
 अन्ने हन्तव्वा जाव कालमासे काल किच्चा अन्नयराइ आसुरियाइ किच्चि
 जाव उववत्तारो भवन्ति, तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमुयत्ताए तमोस्स
 पच्चायन्ति । ते पाणा वि बुच्चन्ति जाव नो नेयाउए भवइ । भगवं च ण
 सन्तेगइया पाणा दीहाउया जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणन्ताए
 दण्डे निक्खित्ते भवइ । ते पुव्वामेव काल करेन्ति करित्ता पारलोइयत्ताए
 यन्ति । ते पाणा वि बुच्चन्ति, ते तसा वि बुच्चन्ति । ते महाकाया ते चिरा
 ते दीहाउया ते बहुयरगा, पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ,
 नो नेयाउए भवइ । भगव च ण उदाहु सन्तेगइया पाणा समाउया, जेहि स
 वासगस्स आयाणसो आमरणन्ताए जाव दण्डे निक्खित्ते भवइ । ते सयमेव
 करेन्ति, करित्ता पारलोइयत्ताए पच्चायन्ति । ते पाणा वि बुच्चन्ति, तसा वि बुच्च
 ते महाकाया ते समाउया ते बहुयरगा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय
 जाव नो नेयाउए भवइ । भगव च ण उदाहु सन्तेगइया पाणा अप्पाउया,
 समणोवाग्गम्यो आमरणन्ताए जाव दण्डे निक्खित्ते भवइ । ते पुव्व
 काल को